RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 | ₹:20

केशव संवाद

मार्गशीर्ष-पौष विक्रम सम्वत् 2078 (दिसम्बर -2021)

- अखण्ड भारत का बृहत् स्वरूप
- निःशुल्क शिक्षा की प्रभावित होती अविरल धारा
- देश से वैश्विक फलक पर बढ़ता हिन्दुत्व
- ऐतिहासिक धरोहरों का केन्द्र है हस्तिनापुर

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा

द्वारा आयोजित

मीडिया कॉन्क्लेव एवं फिल्म फेस्टिवल

प्रेरणा विमर्श 2021

24, 25, 26 दिसम्बर, 2021

प्रात: 11 बजे से सायं 4.00 बजे

भारतोदय

आजादी का अमृत महोत्सव

अध्यक्ष
मधुसूदन दादू
9810256494

संयोजक
डॉ अनिल त्यागी
9891120430

विमर्श कार्यालय

प्रेरणा भवन, सी-56/20 सैक्टर-62, नोएडा

संपर्क सूत्र:- 9891360088, 9354133754, 0120 4565851, ई-मेल prernavimarsh2021@gmail.com

- प्रेरणा विमर्श-2021 में भाग लेने के लिए https://bit.ly/3wUZf0k लिंक पर जाकर रजिस्ट्रेशन करें।
- प्रवेश केवल निमंत्रण पत्र से ही होगा।
- प्रत्येक दिन का पंजीकरण अलग-अलग होगा।
- समापन कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों की सहभागिता अपेक्षित है।
- सभी प्रतिभागियों को ऑनलाइन प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा।
- प्रतिभागियों के लिए भोजन की व्यवस्था रहेगी।

YouTube Prerna Media | Prernasmedia | 9891360088 | @PrernaMedia

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

दिसम्बर, 2021

वर्ष : 21 अंक : 12

प्रबंध निदेशक

अणंज कुमार त्यागी

संपादक

कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. प्रियंका सिंह

संपादक मंडल

डॉ. प्रदीप कुमार, डॉ. अखिलेश मिश्र, डॉ. नीलम कुमारी, रामकुमार शर्मा डॉ. मनमोहन सिंह, अनीता चौधरी अनुपमा अग्रवाल, प्रमोद मल्होत्रा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास

सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301

फोन नं. 0120 4565851, 2400335

ईमेल : keshavsamvad@gmail.com

वेबसाइट : www.prernanews.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक सुखवीर प्रकाश द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105, आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

सद्यः आर्थिक परिदृष्य	-प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा	05
अखण्ड भारत का वृहत् स्वरूप	- डॉ. हेमेन्द्र कुमार राजपूत	06
नि:शुल्क शिक्षा की प्रभावित होती अविरल धारा	- अनुपमा अग्रवाल	08
हिन्दुत्व की भ्रामक व्याख्या से सामाजिक...	- डॉ. अनिल कुमार निगम	10
देश से वैश्विक फलक पर बढ़ता हिन्दुत्व	- डॉ. रामशंकर विद्यार्थी	12
सिनेमाई कला को ध्यानपूर्वक बरते जाने...	-डॉ.यशार्थ मंजुल	13
विरासत	- प्रो. हरेन्द्र सिंह	14
भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है...	- प्रसून कुमार मिश्र	16
उत्सव मंथन	- नीलम भागी	17
मीडिया जगत की लोकप्रिय हस्ती श्वेता सिंह	- डॉ. नीलम कुमारी	18
सोशल मीडिया और नागरिक पत्रकारिता	- नेहा कक्कड़	20
भारत में प्रिन्ट मीडिया का महत्व एवं भविष्य	- मोहित कुमार	22
एक तीर एक कमान (बिरसा मुण्डा जयन्ती)	- नरेन्द्र भदौरिया	24
ऐतिहासिक धरोहरों का केन्द्र है हस्तिनापुर	-प्रतीक खरे	26
ऋतु अनुसार आयुर्वेद के घरेलू नुस्खे	- डॉ. सुनेत्री सिंह	28
काकोरी के क्रांति नायक राम प्रसाद बिस्मिल	- मृत्युंजय दीक्षित	29
मीडिया सुर्खियां	- डेस्क	30
प्रेरणा दिवस	- डेस्क	32
पत्रिका के नवम्बर अंक की समीक्षा	- डॉ. प्रियंका सिंह	34
हिन्दुत्व के आराधक महामना मदनमोहन...	- महावीर सिंघल	35

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail-com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय..

विश्व मानचित्र पर भारत के दिनोंदिन बढ़ रहे रुतबे से बौखलाया विस्तारवादी चीन, दशकों से देश की एकता एवं अखंडता को खंडित करने का षड्यंत्र करता रहा है। मित्रता का नाटक कर वर्ष 1962 में किये हमले के बाद से जहाँ लद्दाख के लगभग 38000 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र को अपने अनधिकृत कब्जे में ले रखा है वहीं अरुणाचल प्रदेश के 90000 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र पर अपना झूठा दावा भी कर रहा है। हाल ही में अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा संसद में पेश अपनी वार्षिक रिपोर्ट में चीन द्वारा तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र एवं अरुणाचल प्रदेश के बीच विवादग्रस्त क्षेत्र में बस्तियां बसाने की खबर ने भारत के सुरक्षा तंत्र को अचूक बनाने की अनिवार्यता को रेखांकित किया है। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मीडिया की सुर्खियां बने रक्षा स्टाफ प्रमुख जनरल विपिन रावत तथा विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची के तथाकथित विरोधाभासी वक्तव्यों ने देशवासियों के मन में 3440 किलोमीटर लम्बी भारत-चीन सीमा की स्थति के बारे में भ्रम पैदा किया है और उनमें वास्तविकता जानने की जिज्ञासा भी बढ़ी है। चीन द्वारा जून 2020 में बीस भारतीय सैनिकों की निर्मम हत्या करना, हाइपरसोनिक मिसाइल परीक्षण करना, 30-एयरपोर्टों का निर्माण करना, इकतरफा भूमि सीमा कानून बनाना, वास्तविक नियंत्रण रेखा के आस-पास अश्वक्सीजेनेटर एवं ऑक्सीजन चैम्बर्स इकट्ठे करने जैसे कदमों से ऐसा लगता है कि जैसे चीन किसी महायुद्ध की तैयारी कर रहा है। साथ ही वह भारत में आतंकवाद फैलाने के लिए पाकिस्तान को सैन्य एवं आर्थिक मदद दे रहा है तथा भूटान, नेपाल एवं श्रीलंका जैसे देशों को भारत के खिलाफ भड़काने का प्रयास कर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में भारत के लिए चर्चिल का विचार, 'जब तक कोई आंतरिक शत्रु नहीं है, तब तक बाहरी शत्रु आपका कोई नुकसान नही कर सकता' और भी प्रासंगिक हो जाता है।

राष्ट्र सर्वोपरि की भावना के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुरुपर्व पर तीनों कृषि कानूनों को वापिस लेने की घोषणा एवं आंदोलनकारियों से आंदोलन समाप्त करने के आह्वान के बाद भी आंदोलन का जारी रहना, लगातार मीडिया में खबरें छाए रहने एवं विदेशियों की सोशल मीडिया टूलकिट आदि में संलिप्तता की पृष्ठभूमि में ऐसे आंदोलनों में विदेशी साजिश से इंकार नहीं किया जा सकता। लोकतंत्र में श्रेष्ठ वही है जो उदार है और जड़ जंगम से आगे आकर सभी के हितों की रक्षा करे। समूचे विश्व को भारतीय लोकतंत्र पर गर्व है परन्तु हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि कहीं भीड़तंत्र हमारे लोकतंत्र पर हावी न हो जाये। ऐसे में आवश्यकता है कि मीडिया, सरकार एवं जनता के बीच संवाद के माध्यम से विवादों के निपटारे एवं विकास हेतु समन्वय एवं सहभागिता बढ़ाने में अहम् भूमिका निभाए। मीडिया को देश के नागरिकों को यह लगातार याद दिलाते रहना होगा कि, भारत वह देश है जहाँ जन्म पाने वालों को देवताओं ने भी धन्य माना है (गायन्ति देवा: किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे) एवं देश की सीमा पर भारत की संताने माँ के वस्त्रों की तरह रक्षा करना अपना कर्तव्य मानती हैं। अत: देश की भू-सांस्कृतिक सुरक्षा के लिए उत्कृष्ट रक्षा उपकरणों एवं सैनिक साजो-सामान के साथ ही नागरिकों का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से ओत-प्रोत होना मातृभूमि की सुरक्षा की सबसे बड़ी जमानत होंगे, जिसे साकार करने में मीडिया को अहम भूमिका निभाने के लिए आगे आना चाहिए।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

सद्य : आर्थिक परिदृष्य

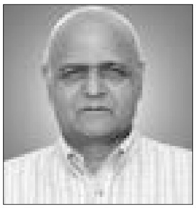

प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा
पूर्व कुलपति गौतमबुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

विश्व में शीर्ष आर्थिक वृद्धि दर : भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे द्रुतगति से आगे बढ़ रही अर्थव्यवस्था है। वर्ष 2021 ही नहीं 2022 में भी भारतीय अर्थव्यवस्था की आर्थिक वृद्धि दर विश्व में सर्वोच्च ही रहेगी। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष सहित विविध अन्तर्राष्ट्रीय अभिकृतियों और देश के राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय सहित सभी का आंकलन है कि 2021 में देश की आर्थिक वृद्धि दर 9.5 से 10 प्रतिशत के बीच रहेगी। वित्तीय वर्ष 2021–22 की प्रथम तिमाही अर्थात् 2021 के अप्रैल–जून की अवधि में हमारे सकल घरेलू उत्पाद में 20.1 की वृद्धि दर आंकी गई है जो एक कीर्तिमान है। देश की वयस्क जनसंख्या का द्रुतगति से टीकाकरण कर लिए जाने से अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने में अत्यधिक योगदान हुआ है। भारत की जनसंख्या जो 140 करोड़ के पास पहुँच चुकी है। यह संख्या 50 यूरोपीय व 26 लेटिन अमेरिकी देशों की संयुक्त जनसंख्या से अधिक है। इतने व्यापक जनसांख्यिकीय महानुमाप में सम्पूर्ण वयस्क जनसंख्या का टीकाकरण कर लेना भी एक विश्व कीर्त्तिमान है।

पिछले वित्तीय वर्ष 2020–21 में कोरोना व लॉकडाऊन से अर्थव्यवस्था में 7.3 प्रतिशत का संकुचन हुआ था। उस कठिन दौर में भी कृषि क्षेत्र में 4.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। देश की आधी जनसंख्या का कृषि पर निर्भर होने से वह संकट का काल भी देश ने ठीक से पार कर लिया था।

निर्यातों में आशाप्रद उछाल : इसी वर्ष 2021 में अप्रैल से अक्टूबर में भारत के व्यापारिक निर्यात यानी मर्चेंडाइज एक्सपोर्ट में तगड़ा उछाल आया है। भारत सरकार की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार अप्रैल–अक्टूबर 2021 में भारत का व्यापारिक निर्यात 232.58 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा है। इसी समयावधि में पिछले वर्ष अर्थात अप्रैल–अक्टूबर 2020 में यह मात्र 150.53 बिलियन डॉलर था। इस वर्ष देश के मर्चेंडाइज एक्सपोर्ट में 54.51 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। वहीं 2019 में अप्रैल.अक्टूबर के बीच 185.4 बिलियन डॉलर का निर्यात था। ऐसे में 2019 की तुलना में भी इस वर्ष निर्यात 25 प्रतिशत अधिक हैं।

हस्तशिल्प निर्यात में भी बढ़ोतरी – रोजगार के लिए शुभ संकेत :
हमारा हस्तशिल्प क्षेत्र रोजगार प्रधान है। वर्तमान वित्त वर्ष के पहले छह महीनों अर्थात 2021 के अप्रैल–सितंबर के दौरान हस्तशिल्प निर्यात 60 प्रतिशत बढ़ा है। इस दौरान हस्तशिल्प निर्यात 15,559.73 करोड़ रुपए रहा है। पिछले अप्रैल से सितम्बर की तुलना में यह 60.34 प्रतिशत उच्च है।

मासिक आर्थिक वृद्वि दो अंकों में : राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार देश के औद्योगिक (IPI) में अगस्त 2021 के दौरान 11.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। कोयला, कच्चा तेल और इस्पात समेत 8 बुनियादी क्षेत्र के उद्योगों के उत्पादन में इस दौरान वार्षिक आधार पर 11.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पिछले वर्ष अगस्त महीने में बुनियादी क्षेत्र के उद्योगों के उत्पादन में 6.9 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई थी।

खनन क्षेत्र का 23.6 प्रतिशत और बिजली क्षेत्र का उत्पादन 16 प्रतिशत बढ़ा : एनएसओ के आंकड़ों के मुताबिक, अगस्त 2021 में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के उत्पादन की वृद्धि दर 9.7 प्रतिशत रही है। वहीं खनन क्षेत्र का उत्पादन 23.6 प्रतिशत और बिजली क्षेत्र का 16 प्रतिशत बढ़ा है। अगस्त 2020 में औद्योगिक उत्पादन 7.1 प्रतिशत घटा था। चालू वित्त वर्ष का समान अवधि में आईआईपी में 25 प्रतिशत की बड़ी गिरावट आई थी। कोरोना वायरस महामारी की वजह से पिछले साल मार्च से औद्योगिक उत्पादन प्रभावित हुआ। उस समय इसमें 18.7 प्रतिशत की गिरावट आई थी। अप्रैल 2020 में लॉकडाउन से औद्योगिक गतिविधियां प्रभावित होने से उत्पादन 57.3 प्रतिशत घटा था।

निष्कर्ष : बेहतर परिणामों की अपेक्षा : औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IPI) में कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पाद, उर्वरक, इस्पात, सीमेंट और बिजली का 40.27 प्रतिशत हिस्सा है। अगस्त 2021 में लगातार तीसरे महीने बुनियादी क्षेत्र उद्योगों में बढ़ोतरी दर्ज की गई है। वस्तुतः कोयला, प्राकृतिक गैस, रिफाइनरी उत्पादों, इस्पात, सीमेंट और बिजली का उत्पादन अगस्त 2021 में बढ़ा है लेकिन, दूसरी और कच्चा तेल और उर्वरक उद्योगों अर्थात् रासायनिक खाद्य उद्योग के उत्पादन में गिरावट आई है। निष्कर्ष रूप में अर्थव्यवस्था द्रुतगति से सुधार की ओर अग्रसर है। सरकार द्वारा जो प्रोडक्शन लिन्क्ड इन्सेन्टिव स्कीम व लोकल कण्टेण्ट रूल्स आदि का प्रवर्तन किया है। उससे वृद्धि का यह दौर और गति पकड़ेगा।

■

ISSN No. 2581-3528

अखण्ड भारत का वृहत् स्वरूप

प्राचीन देशों का नामकरण पर्वतों एवं सागरों के आधार पर होता था। यह सभी पुराणों, महाभारत एवं रामायण में उल्लिखित है। हिन्दूकुश पर्वत के दक्षिण की भूमि हिन्दू भूमि हिमालय से इन्दूमहासागर तक की भूमि (हि-इन्दू हिन्दू) हिन्दू भूमि सिकन्दर के आक्रमण से पहले ग्रीक विद्वान टॉलेमी ने जो विश्व मानचित्र बनाया उसमें भारत के दक्षिण का महासागर 'इन्दू महासागर' रोमन लिपि में दर्शाया है। चीनी विद्वानों ने इसे 'इन्तु' कहा है और हिन्दू को 'विन्तु' कहा है। इन्दू महासागर को बीसवीं शताब्दी के पूर्व भाग में अंग्रेजो ने अपने मानचित्रों में हिन्दू महासागर दर्शाया है। जिसे 1967 तक के सर्वे आफ इण्डिया के मानचित्रों में हमने देखा। इन्दिरा गांधी के प्रधानमन्त्री बनने के बाद 'हिन्दू महासागर' को 'हिन्द महासागर' कर दिया गया।

डॉ. हेमेंद्र कुमार राजपूत
इतिहास, भूगोल एवं भू-राजनीति के विशेषज्ञ
एवं मेरठ प्रांत सामाजिक सद्भाव प्रमुख - रा.स्व.संघ

अखण्ड भारत उच्यते अथवा अखण्ड महाभारतं स्मरेत– अखण्ड भारत का उच्चारण करें अथवा महाभारत का स्मरण करें। इसका तात्पर्य यही है कि अखण्ड भारत और इसके बृहत् स्वरूप महाभारत को याद करते हुए अपनी वार्ता में बोलते रहें। वार्ता, बातचीत एवं स्मरण करने में अपने देश की अखण्डता को अपनी मातृ भूमि की इंच दर इंच भूमि को सदैव याद में बनाये रखना है। भूलना ही खोना है अतः भारत के मौलिक जनसमुदाय को भूलने नहीं देना। दुनिया के सब समाजों में से हिन्दू समाज को भूलने की सबसे बड़ी बीमारी है। हिन्दू समाज को याद कराते जाना ही इस बीमारी का मुख्य ईलाज है। याद क्या कराना? बहुत बार यह प्रश्न होता है। उत्तर एकदम साफ कि हिन्दू समाज का गौरव शाली इतिहास रहा है। यह देश हिन्दू समाज के उत्थान के कारण से ही आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत समृद्ध था, दुनियाँ में 'सोने की चिड़िया' इस देश को कहा जाता था। प्राकृतिक संसाधनों की भरमार वाला यह देश था और मानव जीवन के उपयोग में लाने के लिए ज्ञान–विज्ञान का प्रयोग यहां होता था। देश में कृषि और लघु उद्योगों का पूर्ण विकास हो चुका था। कुछ बड़े उद्योग भी थे जैसे दिल्ली का महरौली निकट मिहिरावली खगोल शोध केन्द्र (कुतुब मीनार) परिसर में स्थापित लौह स्तम्भ जो हजारों वर्षों बाद भी खुले में हवा, वर्षा, धूप को झेलता हुआ बिना जंग लगे वह लौह स्तम्भ अपने औद्योगिक गौरव की गाथा स्वयं में कह रहा है। मेरठ (मयराष्ट्र) में यह लौह स्तम्भ बनाया गया था। पूरे देश की अति प्राचीन इमारतों, मन्दिरों, महलों और किलों को देखने से लगता है कि भवन निर्माण कला (आर्किटैक्चर), मूर्तिकला (स्कल्पचर) पेंटिंग, ड्राईंग इन सबका रेखागणित के हिसाब से हमारे देश के कलाकारों को पूर्ण वैज्ञानिक ज्ञान था। ऐसे सभी ज्ञान को देने वाले यहाँ विश्व प्रसिद्ध – विश्वविद्यालय थे– नालन्दा, तक्षशिला, तिब्बत, कर्केर (कश्मीर) कांचीपुरम, –उज्जैन (अवन्तिका), काशी, प्रयाग, हम्पी, गोकर्ण और प्राग्ज्योतिषपुर आदि।

दुनियाँ के दूसरे देशों से अनेक विद्यार्थी यहाँ विद्या प्राप्त करने आते थे इसलिए ही भारत 'विश्वगुरु' अथवा 'जगतगुरु' कहलाता था। योद्धाओं की यहाँ कोई कमी नहीं थी, उनकी इतिहास में एक पूरी श्रृंखला है। एक से एक महान योद्धा। कलाकार, जीवन दर्शक, गुरु, वैज्ञानिक (ऋषि–महर्षि), शिल्पी (इन्जीनियर्स), गणितज्ञ अपनी मातृभूमि की सेवा में निष्ठा, श्रद्धा एवं समर्पण भाव से संलग्न थे। इन्हीं योग्य गुणवान नागरिकों के कारण भारत में 'स्वर्णयुग' की गाथा इतिहास के पन्नों में वर्णित है। कौन और किस जाति धर्म के थे वे लोग? केवल एक ही समाज था स्वर्णयुग में, वह था हिन्दू समाज इस काल खण्ड में और इससे पूर्व के इतिहास में न यहाँ कोई मुसलमान था, ना ईसाई, ना यहूदी। केवल शक, हूण और कुषाण आये और यहाँ की वैभव्यवता में समाहित हो गये, सब के सब हिन्दू हो गये। इसलिए भारत की गौरवगाथा हिन्दुओं की ही गौरवगाथा है। हिन्दूकुश पर्वत और हिमालय पर्वत माला के विस्तार क्षेत्र से लेकर दक्षिण में इन्दूमहासागर (हिन्द महासागर) तक की भूमि हिन्दू भूमि (हिन्दुस्थान) कहलाती थी। पश्चिम में ईरान से लेकर पूर्व में थाइलैण्ड–बर्मा (म्यांमार) तक इस भूमि का विस्तार था। इस हिन्दू भूमि का नामकरण प्राकृतिक अथवा भौगोलिक है। प्राचीन देशों का नामकरण पर्वतों एवं सागरों के आधार पर होता था। यह सभी पुराणों, महाभारत एवं रामायण में उल्लिखित है। हिन्दूकुश पर्वत के दक्षिण की भूमि हिन्दू भूमि हिमालय से इन्दूमहासागर तक की भूमि (हि–इन्दू हिन्दू) हिन्दू भूमि सिकन्दर के आक्रमण से पहले ग्रीक विद्वान टॉलेमी ने जो विश्व मानचित्र बनाया उसमें भारत के दक्षिण का महासागर 'इन्दू महासागर' (IDNU-OCEAN) रोमन लिपि में दर्शाया है। चीनी विद्वानों ने इसे 'इन्तु' कहा है और हिन्दू को 'विन्तु' कहा है। इन्दू महासागर को बीसवीं शताब्दी के पूर्व भाग में अंग्रेजो ने अपने मानचित्रों में हिन्दू महासागर दर्शाया है। जिसे 1967 तक के सर्वे आफ इण्डिया के मानचित्रों में हमने प्राइमरी शिक्षा लेते समय एटलस में देखा है और अध्ययन किया है। श्रीमति इन्दिरा गांधी के प्रधानमन्त्री बनने के बाद 'हिन्दू महासागर' को 'हिन्द महासागर' कर दिया गया। यह पाठकगण स्वयं समझ सकते हैं कि ऐसा क्यों किया गया। 'हिन्दू भूमि' अथवा 'हिन्दुस्थान' पर रहने वाले लोगों को हो 'हिन्दू' नाम से दुनियां में जाना गया। यह एक सार्वभौमिक पहचान है। 'जापानी' जापान के लोग। 'चीनी' चीन के, 'फ्रांसीसी' फ्रांस के 'रूसी' रूस के 'जर्मनी' जर्मन के, 'इंग्लिश' (अंग्रेज) इग्लैंड के 'अरबी' या 'अरेबियन'– अरब देश के 'अमेरिकन्स' अमेरिका के और 'अफ्रीकी' अफ्रीका के कहे जाते हैं इसी प्रकार 'हिन्दू' हिन्दूदेश या हिन्दूभूमि या हिन्दुस्थान या हिन्दुस्तान के ही कहे जाते हैं और कहे जायेंगे।

यह सार्वभौमिक भौगोलिक सत्य फारसी हो या अरबी उन्होनें हिन्दूभूमि, या हिन्दुस्थान को 'हिन्दुस्तान' ही कहा है, क्योंकि वे लोग देश, भूमि या 'स्थान' को 'स्तान' ही बोलते व लिखते जैसे 'अफगानों' का अगानिस्तान कुर्ग, खुर्ग या किर्गिजों का किर्गिस्तान 'तजाकियों' का तजाकिस्तान, 'उज्बेकों' का उज्बेकिस्तान आदि। आज पाकिस्तान में 'ब्लूची लोग' अपने 'ब्लोचिस्तान' की मांग कर रहे हैं। इस प्रकार के उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि भारत एक 'हिन्दू' देश और हिन्दूराष्ट्र था और इसका उल्लेख अपने देश के प्राचीन ग्रन्थ 'बृहस्पति आगम शास्त्र' या 'बृहस्पति नीति शास्त्र' में भी मिलता है–

हिमालयं समारभ्यः यावद्इन्दु सरोवरं,

तं देव निर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।।

अर्थात् हिमालय से समान (पश्चिम से पूर्व तक) आरम्भ होकर इन्दूसागर पर्यंत तक की भूमि (देश) जो देवताओं द्वारा निर्मित है, को 'हिन्दुस्थान' कहा जाता है। वर्तमान हिन्द महासागर को ही प्राचीन काल में इन्दू महासागर कहा जाता था।

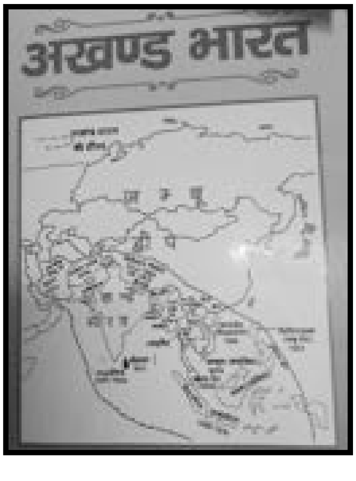

'भारत' हिन्दूराष्ट्र क्यों – पहले राष्ट्र को समझे। राष्ट्र तीन तत्वों में मिलकर बनता है किसी एक तत्व के भी अभाव में राष्ट्र नहीं हो सकता। राष्ट्र के तीन नियामक तत्व हैं– 1. भूमि (भूखण्ड) अथवा देश– भौगोलिक और राजनैतिक सीमाओं से आवृत्त भूमि। 2. इस भूमि पर रहने वाले मौलिक लोग जो सनातन काल से इस भूमि पर रहते आ रहे हैं जिनका सम्बन्ध इस भूमि के साथ माता व पुत्र का भाव प्रकट करता है वेदों में कहा है– 'माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथ्वियाः'– यह भूमि मेरी माँ है और मैं इसका पुत्र हूँ। इस भावनात्मक सम्बन्ध से जुड़ा समाज। 3. इस समाज की संस्कृति। 'संस्कारस्य कृतिरूपदर्शनम् इति संस्कृति' अर्थात संस्करों का कृतिरूप (कर्मरूप) दर्शन ही 'संस्कृति' है। संस्कृति में मानव के संस्कार भावनात्मक रूप में विद्यमान होते हैं। अपनी परम्पराएँ, रीति–रिवाज त्यौहार–उत्सव, अथवा इतिहास, अपनी मातृभाषा और एक दूसर के समझ आने वाली व्यवहारिक भाषा, अपने ग्रन्थों की भाषा, अपने ग्रन्थ ऐतिहासिक ग्रन्थ जिनमें अपनी उनकी भावनाओं का, श्रद्धाओं का उल्लेख हो, अपने महापुरुषों की श्रृंखला, जिन्होंने देश, समाज और संस्कृति के लिए समर्पित योगदान दिया हो, ये सब बातें संस्कृति में ही आती है क्योंकि इनके माध्यम से ही संस्करों का कर्म रूप में दर्शन होता है।

इस प्रकार उपरोक्त तीनों तत्वों के सम्मिश्र योग से ही 'राष्ट्र' बनता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा होती है। संस्कृति के समाप्त होते ही राष्ट्र भी मृत हो जाता है। मिश्र, बेबिलोन्स, पर्सियन्स संस्कृति के समाप्त होते ही वे राष्ट्र भी समाप्त हो गये। ये तत्व सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्रों के लिए है। अब इन्हें भारत के सम्बन्ध में समझे। 'भारत' देश का नाम अति प्राचीन है जो व्यक्ति विशेष की गुणवत्ता के आधार पर पड़ा। 'भारत' ऋषभ देव (प्रथम सन्यासी अथवा तीर्थंकर) के पुत्र थे जिन्होंने इस देश की भूमि को समतल किया, कृषि योग्य बनाया, व्यवस्थित और अनुशासित किया। एक सुन्दर व सुदृढ़ शासन स्थापित किया। लोक कल्याण के कार्य किये और वह जन प्रिय बन गये। उनके ही नाम से इस भूमि को 'भारत' कहा जाने लगा। इससे पूर्व भारत के भौगोलिक और प्राकृतिक नाम थे– हैमवतवर्ष, हिमवान वर्ष, जम्बूद्वीप (भारत का वृहद रूप–महाभारत) भौगोलिक नामों के साथ–साथ सांस्कृतिक नाम भी प्रचलित रहे जैसे नाभि वर्ष, भारत वर्ष।

प्रथम मन्वन्तर काल के प्रथम युग (सत्युग) में स्वायंभुव मनु के ज्येष्ठ पुत्र प्रजापति प्रियव्रत ने सात महाद्वीपों की भूमि को अनुशासित किया, उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र आग्नीध्र को जम्बूद्वीप पर शासन करने के लिए अधिष्ठित किया। जम्बूद्वीप वर्तमान एशिया महाद्वीप की भूमि था। आग्नीध्र ने अपने नौ पुत्रों में जम्बूद्वीप को शासन के लिए भौगोलिक संरचना के आधार पर नौ भूभाग बांट दिये। आग्नीध्र के ज्येष्ठ पुत्र 'नाभि' को हिमालय के दक्षिण की भूमि 'हिमवानवर्ष' अनुशासन के लिए प्राप्त उनके नाम पर इस भूमि को 'नाभिवर्ष' भी कहा जाने लगा। नाभि के ज्येष्ठ पुत्र ऋषभदेव हुए और ऋषभ के भरत। मनुर्भरत वंशियो की भूमि भी इसे कहा गया। भरत के बाद इस भूमि के नागरिकों ने इसे 'भारतवर्ष' कहा। तब से ये नाम लगातार सात मन्वन्तर कालों तक प्रचलित रहे। अब 'वैवस्वत मनु' के नाम से सांतवां 'वैवस्वत मन्वंतर' काल चल रहा है जिसका चौथा युग कलियुग का समय है, कलियुग के भी 5122 वर्ष बीत चुके हैं। यह सातवां कलियुग और 28वा युग है। इस वैवस्वत मन्वन्तर काल में ही सतयुग और त्रेता युग के सन्धि काल में देव गुरु बृहस्पति ने 'भारत' का नाम प्राकृतिक अथवा भौगोलिक दृष्टि से हिन्दू भूमि अथवा 'हिन्दुस्थान' जिसका उल्लेख एक श्लोक में पहले किया जा चुका है। कालान्तर में सिन्धु और सरस्वती नदी के सप्तसैन्धव प्रदेश को 'आर्यावर्त' कहा गया अर्थात् श्रेष्ठ मानवों का निवास क्षेत्र आर्यावर्त के विस्तार होने पर भारत अथवा हिन्दुस्थान को आर्यावर्त भी कहा जाने लगा।

राष्ट्र का पहला नियामक तत्व भारत भूमि, हिन्दू भूमि (हिन्दुस्थान) अधिक समय तक प्रचलित होने से 'भारत' और हिन्दुस्थान बना 'भारत' भूमि पर रहने वाले लोगों को भारतीय अथवा हिन्दूभूमि पर रहने वाले लोगों को 'हिन्दू' कहा जाने लगा, यह वैश्विक सार्वभौमिक सत्य है। 'भारत', देश का सांस्कृतिक नाम है, 'हिन्दुस्थान', देश का भौगोलिक या प्राकृतिक नाम है और आर्यावर्त 'आर्य' से गुणवाचक नाम है। इस कारण से इस देश के लोगों को भारतीय, हिन्दू और आर्य कहा गया। प्राचीन काल से ही देश के नाम भौगोलिक रूप से अधिक प्रचलन में डाले गये जिससे कोई वाद–विवाद खड़ा न होकर प्रकृति रूप सभी को स्वीकार्य हो ।

राष्ट्र का दूसरा नियामक तत्व 'हिन्दू' बना हिन्दू भूमि पर रहने वाला मौलिक सनातनी समाज 'हिन्दू' समाज। हिन्दू समाज का इतिहास बहुत प्राचीन है। यही समाज प्राचीन काल से हिन्दू भूमि को 'माताः भूमिः पुत्रोऽहम् पृथ्वियाः' अर्थात् यह भूमि मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ। कहता चला आ रहा है। यह भारत (हिन्दू) भूमि जननी माँ से भी बढ़कर है। लगभग छह हजार वर्षों से यह हिन्दू समाज 'भारत माता की जय' का उद्घोष लगाता आ रहा है।

'भारताद् भारती कीर्तिर्येनेदं भारत कुलम् ।

अपने ये च पूर्वे वै भारता इति विश्रुताः महाभारत।।

'महाभारत' दुष्यन्त एवं शकुन्तला के पुत्र 'भरत' के नाम पर इस हिन्दूभूमि को 'मां भारती' कहा गया जिससे 'भारत माता की जय' का उद्घोष बना और भारत का कुल भरतवंश के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उनके बाद उस काल में पहले तथा बाद में जो राजा हुए वे 'भारत' कहे जाते हैं। ■

ISSN No. 2581-3528

नि:शुल्क शिक्षा की प्रभावित होती अविरल धारा

शिक्षा की इस निष्पक्ष, स्वच्छन्द, सेवाभावी संस्थान में विद्यार्थियों को केवल प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी ही नहीं कराई जाती बल्कि संस्कार युक्त वातावरण के साथ राष्ट्र भक्ति, समाज कल्याण व राष्ट्र चेतना जागृत करने वाले नुक्कड़ नाटक तथा राष्ट्रीय पर्वों पर कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

अनुपमा अग्रवाल
पत्र लेखिका एवं समाज सेविका

सेवा परमो धर्मः,'नर सेवा नारायण सेवा' जैसे भारतीय संस्कृति के मर्म को व्यवहार में प्रगट करता 'अविरल धारा' संस्थान अपने नाम के अनुरूप निष्पक्ष, निःशुल्क एवं निःस्वार्थ भाव से विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करा उन्हें उनके उज्जवल भविष्य के लिए तैयार कर रहा है साथ ही नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अति सूक्ष्म रूप में अपना सफर शुरू करने वाली इस संस्थान ने आज न केवल अपने कार्यों से अलीगढ़ जनपद में एक विशिष्ट पहचान बनाई है, बल्कि बिना किसी आर्थिक सहायता के आपसी सहयोग से विद्या की इस धारा का स्वच्छन्द, निष्छल, निःस्वार्थ प्रवाह निरन्तर बढ़ता चला जा रहा है, जो विद्यार्थियों के लिए अमृततुल्य बन स्वर्णिम भविष्य बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

देश की राजधानी दिल्ली से 130 किमी दक्षिण पूर्व की ओर बसा शहर अलीगढ़ जो अपने ताले, हार्डवेयर और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के लिए जाना जाता है, के अकराबाद ब्लाक में बमनोई गांव के रहने वाले अतुल सिंह जो वर्तमान में केनरा बैंक में स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान में निदेशक के पद पर कार्यरत हैं के द्वारा 2010 में 'अविरल धारा' संस्थान की स्थापना की गई। साढ़े चार वर्ष की अल्पायु में ही, पुलिस उपनिरीक्षक पिता का बदमाशों से मुठभेड़ के दौरान सर से साया उठ गया। शिक्षा से कोसों दूर मां ने ग्रामीण अंचल में रहते हुए पुत्र के लालन पालन और शिक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ी। 2010 में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात आपने बैंकिंग की परीक्षा उत्तीर्ण की। परन्तु अपने साथियों के कोचिंग न ले पाने के कारण सफल न होने से आहत अतुल सिंह ने दृढ़ निश्चय किया कि वह उन विद्यार्थियों के लिए कुछ ऐसा करेंगे जो धन के अभाव के चलते प्रतियोगी परीक्षा में सफल होने से रह जाते हैं। ऐसा निश्चय कर उन्होंने अकेले ही 2010 में अपने उन्हीं छह साथियों को निशुल्क बैंकिंग की तैयारी करवाई। उनकी मेहनत रंग लाई अगले ही वर्ष उनमें से पांच का सरकारी नौकरी में चयन हो गया। इस सफलता ने न केवल उनके मनोबल को ऊंचा उठाया बल्कि निःशुल्क शिक्षा के द्वारा सेवा के क्षेत्र में कुछ अलग हटकर कार्य करने का मार्ग भी दृष्टिगोचर हुआ। धन के अभाव में प्रतियोगी परीक्षा से वंचित रहने वाले अपने जिले के योग्य विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता अविरल धारा संस्थान अपने सेवाभाव से शिक्षा का प्रकाश फैलाते हुए श्रेष्ठतम आयाम स्थापित कर रहा है।

छह विद्यार्थियों को लेकर शुरू हुआ अविरल धारा का सफर आज 150 विद्यार्थियों से ऊपर पहुंच चुका है जिनमें 60 फीसदी से ज्यादा संख्या लड़कियों की है। प्रारंभ में खुले आसमान में पेड़ के नीचे चलने वाली कक्षा बच्चों के बढ़ने के साथ 50 रुपये माह के कमरे में संचालित होने लगी। कुछ समय पश्चात इस अति आधुनिक सुविधाओं से वंचित इस कोचिंग संचालक का स्थानांतरण हरियाणा के पलवल शहर में हो गया। बच्चों की कोचिंग में कोई व्यवधान न पड़े इसके लिए उन्होंने सभी 20 लड़कों को अपने खर्चे पर अपने साथ पलवल में रखा। एक वर्ष पश्चात पुनः अलीगढ़ स्थानान्तरण हो जाने व उन सभी 20 बच्चों में से ज्यादातर का अच्छी नौकरी में चयन हो जाने से अविरल धारा संस्थान की पहचान बढ़ती चली गई। अपने बारह वर्ष के अल्प सफर में अविरल धारा से निःशुल्क कोचिंग पाये 143 बच्चों का चयन विभिन्न सरकारी नौकरियों में हो चुका है, जिनमें से आधी लड़कियां हैं। केनरा बैंक अलीगढ़ में उच्च पद पर कार्यरत अतुल सिंह जी हमेशा की तरह सुबह अपने गांव से आकर सात बजे से नौ तक कक्षाएं लेते हैं तत्पश्चात बैंक जाते हैं। अविरल धारा को गति प्रदान करने वाले अन्य लोग कोई और नहीं बल्कि इस संस्था से निकले या कहें वहीं संस्कारित लोग हैं जो नौकरी के साथ संस्थान को निःस्वार्थ भाव से अपना अनमोल समय देकर शिक्षा के प्रवाह को निरन्तर गति प्रदान कर रहे हैं।

शिक्षा की इस निष्पक्ष, स्वच्छन्द, सेवाभावी संस्थान में विद्यार्थियों को केवल प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी ही नहीं कराई जाती बल्कि संस्कार युक्त वातावरण के साथ राष्ट्र भक्ति, समाज कल्याण व राष्ट्र चेतना जागृत करने वाले नुक्कड़ नाटक तथा राष्ट्रीय पर्वों पर कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है।

निःशुल्क शिक्षा एवं संस्कारों का बीजारोपण करके राष्ट्र के उज्जवल भविष्य का निर्माण करती इस संस्था ने न केवल अपने क्षेत्र में नवीन उदाहरण प्रस्तुत किया है बल्कि अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। भारतीय वेद ग्रन्थों में शिक्षा दान को महादान माना गया है,जो जितना बांटो उतना बढ़ता है यही कारण है कि निःस्वार्थ भाव से आपसी सहयोग के सहारे सतत प्रवाहित हो रहा 'अविरल धारा' का प्रवाह समय के साथ दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है और नये आयाम स्थापित कर रहा है।

आज एक तरफ देश में तेजी से शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है और अनेक नामी गिरामी कोचिंग सेंटर मंहगे दामों पर विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करा रहे हैं, जो आम आदमी की पहुंच से दूर होने के साथ आर्थिक रूप से कमजोर, योग्य विद्यार्थियों के लिए सपना बनकर रह गई है। लेकिन आज भी देश व समाज में कुछ ऐसे लोग मौजूद हैं जो निःस्वार्थ भाव से शिक्षा के प्रति समर्पित हैं उन्हीं में एक है 'अविरल धारा' संस्थान जो शिक्षा का एक से एक दीप प्रज्वलित कर युवाओं के लिए रोजगार के मार्ग खोलने के साथ उनमें भारतीय संस्कृति, संस्कार व सेवा का भाव उत्पन्न करने का कार्य कर रहा है समाज को सदैव ही ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है जो स्वयं से पहले समाज व राष्ट्र कल्याण के बारे में चिंतन कर राष्ट्रहित में जनकल्याण के कार्यों को अंजाम दे। सेवा है यज्ञ रूप समिधा सम हम जलें इन पंक्तियों को चरितार्थ कर रहे हैं।

मैं काजोल जयन्त पंजाब नेश्नल बैंक में अधिकारी तथा अविरल धारा की सदस्या हूं। मैंने भी तैयारी करने के उद्देश्य से इस संस्था में प्रवेश किया था परन्तु यहां पर आने के बाद मैंने न सिर्फ शिक्षा प्राप्त की बल्कि इस संस्था के कार्यों को जाना और उनमें भाग लिया। अविरल धारा केवल एक सामाजिक संगठन ही नहीं बल्कि एक ऐसी संस्था है जहां युवाओं को शिक्षित करके उनको भविष्य के प्रति योग्य सलाह प्रदान करके उनको प्रतियोगी परिक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन करते हुए नौकरी प्राप्त करने के योग्य बनाया जाता हैं इसका उद्देश्य योग्य उम्मीदवारों को मुफ्त शिक्षा संबंधी सेवा प्रदान करना है। समाज के गरीब तथा जरूरतमंद विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना एक जरूरी तथा सराहनीय कदम है। समाज को उन्नतिशील बनाने के साथ-साथ इस तरह से लोगों को एक दूसरे से तथा समाज से जोड़ने का जो कार्य यह संस्था कर रही है वह अनुपम है। समाज में समृ) संस्कार बढ़े और युवाओं का भविष्य सुदृढ़ हो यही प्रयास अविरल धारा तथा हम सभी की सफलता होगी। अविरल धारा की इस धारा में समाजजन सम्मलित हो और इसका अधिक से अधिक लाभ लें, हम सभी को अपने व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर सामाजिक बदलाव लाना है जो हम अकेले तो नहीं कर सकते परन्तु अविरल धारा जैसी संस्था में हम अपना सहयोग प्रदान करके अपने आस-पास में औरों को भी प्रोत्साहित करके समाज को उन्नत बनाने का प्रयत्न कर सकते है।

(काजोल जयन्त, अधिकारी, पंजाब नेशनल बैंक)

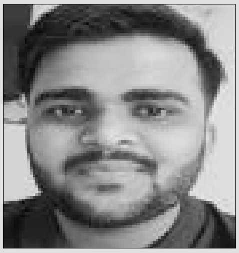

मेरा नाम अंश सिन्हा है। मैंने 2018 में अविरल धारा के बारे में किसी मित्र से सुना। उस समय मैं प्राइवेट सेक्टर में जॉब के साथ बैंक की तैयारी करता था। अविरल धारा से जुड़ने के बाद और अतुल सर के मार्गदर्शन के कारण आज मैं भारतीय जीवन बीमा निगम में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यरत हूं। अविरल धारा समाज के लिए बहुत सरहनीय कार्य कर रही है। यहां पढ़ाई के साथ-साथ अच्छे संस्कारों का भी प्रभाह होता है। यहां निःशुल्क प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करायी जाती है। यहां छात्रों को अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है। यहां का हर सदस्य किसी भी असहाय की मदद के लिए सदैव तत्पर रहता है। अतुल सर गरीबों के मसीहा के रूप में कार्य कर रहे हैं। मुझे गर्व है कि मैं इस संस्था का सदस्य हूं।

(अंश सिन्हा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम बैंक)

अविरल धारा अलीगढ़ में स्थित एक सामाजिक सेवा संस्थान है। इस संस्थान में छात्र व छात्राओं को बिना किसी भेद-भाव के प्रतियोगी परीक्षाओं की निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त इस संस्थान के द्वारा जरूरत मंद व्यक्तियों की मदद भी की जाती है। इस संस्थान में विद्यार्थियों को समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराया जाता है ताकि उनमें समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराया जाता है ताकि उनमें समाज के प्रति सेवा-भाव की भावना जाग्रत हो सके। इस संस्थान के संस्थापक श्री अतुल सिंह के नेतृत्व में अब तक बहुत से प्रतियोगी छात्र व छात्राएं सरकारी पदों पर चयनित हो चुके हैं। मैंने भी इस संस्थान से शिक्षा प्राप्त की है जिस वजह से आज मैं आर्यावर्त बैंक में सहायक प्रबन्धक के पद पर कार्यरत हूं। इस संस्थान की सदस्य होने पर मैं खुद को गौरवान्ति महसूस करती हूं। आशा है यह संस्थान भविष्य में और प्रगति करेगा व छात्रों और समाज के लिए ऐसे ही निरन्तर कार्य करता रहेगा।

(आरती गुप्ता, सहायक प्रबंधक, आर्यावर्त बैंक)

हिन्दुत्व की भ्रामक व्याख्या से सामाजिक समरसता को खतरा

कांग्रेस नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद ने अपनी किताब में हिंदुत्व की तुलना इस्लामी आतंकी संगठन बोको हरम और इस्लामिक स्टेट की विचारधारा से की है। यह पहली बार नहीं है जब कांग्रेस पार्टी के किसी नेता ने ऐसी बयान बाजी की हो, इसका भी अपना इतिहास है। स्वयं राहुल गांधी ने 17 दिसंबर 2010 को कहा था कि देश को आतंकियों से बड़ा खतरा हिंदुओं से है। जुलाई 2018 में कांग्रेस नेता शशी थरूर ने हिंदुओं की तुलना हिंदू-पाकिस्तान और हिंदू-तालिबान कहकर की थी। इसी तरह 25 दिसंबर 2010 को कांग्रेस के ही नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम ने हिंदुओं के लिए भगवा आतंकवाद शब्द का प्रयोग किया था।

प्रो. (डॉ.) अनिल कुमार निगम
चेयरपर्सन, पत्रकारिता एवं जनसंचार संकाय
आईएमएस, गाजियाबाद

कांग्रेस नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद की नई किताब में हिंदुत्व की तुलना इस्लामी आतंकी संगठनों बोकोहरम और इस्लामिक स्टेट की विचारधारा से किए जाने से संपूर्ण देश में सियासी तूफान आ गया है। अपनी राजनैतिक जमीन खिसकती देखकर जगह-जगह मंदिरों में माथा टेककर आस्थावान होने का स्वांग करने वाले कांग्रेस के नेता राहुल गांधी, खुर्शीद के बचाव में उतर गए हैं। हास्यास्पद यह है कि राहुल गांधी ने हिंदूईज्म और हिंदुत्व को न केवल अलग-अलग बता दिया बल्कि यहां तक कह दिया कि हिंदुईज्म कांग्रेस की विचारधारा है जबकि हिंदुत्व भाजपा की।

राहुल गांधी ने यह दिलचस्प विचार कांग्रेस संगठन के राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यक्त किए। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा कि हिंदू और हिंदुत्व दोनों अलग हैं। अगर दोनों एक ही होते तो उनका नाम भी एक होता और हिंदुत्व को हिंदू की जरूरत नहीं होती अथवा हिंदू को हिंदुत्व की जरूरत नहीं होती।

> **हिंदुत्व को अक्सर पूजा से जोड़कर संकुचित कर दिया गया है जबकि वास्तव में अध्यात्म आधारित उसकी परंपरा के सनातन सातत्य तथा समस्त संपदा के साथ अभिव्यक्ति देने वाला एक मात्र शब्द हिंदुत्व है।**

दरअसल, यह बवाल इसलिए पैदा हुआ क्योंकि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री सलमान खुर्शीद ने अपनी किताब 'सनराइज ओवर अयोध्या : नेशनहुड इन आवर टाइम्स' को अयोध्या विवाद पर सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले की संदर्भ पुस्तक बताते हुए हिंदुत्व की तुलना आईएसआईएस और बोकोहरम जैसे विश्व के सबसे क्रूर आतंकी संगठनों से कर दी है। पुस्तक में हिंदुत्व के बारे में भ्रामक और अनर्गल जानकारी देने के आरोप में सलमान खुर्शीद के खिलाफ दिल्ली में एफआईआर भी दर्ज हो गई है।

वास्तविकता तो यह है कि कांग्रेस की विचारधारा क्या है, यह न तो उसके नेता राहुल गांधी को पता है और न पार्टी कार्यकर्ताओं को। राज्यों के विधानसभा और लोकसभा चुनाव में लगातार शिकस्त पा रही पार्टी के नेता राहुल गांधी को आज अचानक याद आ रहा है कि कांग्रेस की कोई विचारधारा है अथवा विचारधारा पर उसे फोकस भी करना चाहिए।

यही कारण है कि राहुल ने अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं से कहा कि 'विचारधारा की लड़ाई सबसे अहम हो गई है। हिंदुस्तान में दो विचारधाराएं हैं। एक कांग्रेस पार्टी की और एक आरएसएस की। आज के हिंदुस्तान में भाजपा ने नफरत फैला दी है और कांग्रेस की विचारधारा जोड़ने, भाईचारे और प्यार की है। वर्ष 2014 से पहले लड़ाई विचारधारा केंद्रित नहीं थी, लेकिन आज विचारधारा की लड़ाई सबसे महत्वपूर्ण हो गई है। हमें जिस गहराई से अपनी विचारधारा को समझना और फैलाना चाहिए, वह हमने छोड़ दिया, अब समय आ गया है कि हम अपनी विचारधारा को अपने संगठन में गहरा करें।' राहुल गांधी का यह बयान बताता है कि कांग्रेस पार्टी पूर्ण रूप से दिशाविहीन हो चुकी है। इसके अलावा पार्टी की अपनी कोई स्पष्ट विचारधारा भी नहीं है। ऐसी स्थिति में राहुल गांधी हिंदुत्व की भ्रामक और बेतुकी व्याख्या कर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं।

ध्यातव्य है कि वर्ष 1947 में देश के आजाद होने के बाद कांग्रेस पार्टी का लगभग 49 वर्ष तक भारत में शासन रहा। उसने तुष्टीकरण और छद्म धर्मनिर्पेक्षता का आवरण ओढ़कर देश की जनता को लगातार गुमराह करने का काम किया। उसकी अस्पष्ट और तुष्टीकरण की नीतियों से समाज की सामाजिक समरसता और धर्मनिर्पेक्ष ताने-बाने को गंभीर नुकसान पहुंचा है। लेकिन वर्ष 2014 और 2019 के चुनावों में देश की बागडौर भाजपा के पास आने के बाद कांग्रेस का असली चरित्र उजागर हो गया। इसके अलावा उसको विभिन्न मोर्चों पर मुंह की खानी पड़ रही है।

गौरतलब है कि कांग्रेस ने कोई पहली बार इस प्रकार की

बचकानी हरकत नहीं की है। स्वयं राहुल गांधी ने 17 दिसंबर 2010 को हास्यास्पद बयान दिया था कि देश को आतंकियों से बड़ा खतरा हिंदुओं से है। जुलाई 2018 में कांग्रेस नेता शशी थरूर ने हिंदुओं की तुलना हिंदू–पाकिस्तान और हिंदू–तालिबान कहकर की थी। इसी तरह से 25 दिसंबर 2010 को कांग्रेस के ही नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम ने हिंदुओं के लिए भगवा आतंकवाद शब्द का प्रयोग कर सभी को चौका दिया था।

कांग्रेस की इस सोच पर तरस इसलिए आता है कि उसने आरएसएस की संरचना और उसकी विचारधारा को कभी गंभीरतापूर्वक समझने की जरूरत ही नहीं समझी।

संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने अपनी पुस्तक यशस्वी भारत में हिंदू का अर्थ बताया है कि हमारे देश का संदेश है विविधता में एकता। इसलिए जो भारत माता का पुत्र है वह हिंदू है। इस विविधता में एकता मानने वाली संस्कृति को यहां तक लाने के लिए पसीना बहाया, खून दिया, उनका आदर–सम्मान करता है, उनकी कृति का अनुग्रहण करता है, वह हिंदू है। इसी तरह से 15 अक्टूबर, 2021 को विजय दशमी के दिन अपने भाषण में सरसंघचालक हिंदुत्व का आशय स्पष्ट कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हिंदुत्व को अक्सर पूजा से जोड़कर संकुचित कर दिया गया है जबकि वास्तव में अध्यात्म आधारित उसकी परंपरा के सनातन सातत्य तथा समस्त संपदा के साथ अभिव्यक्ति देने वाला एक मात्र शब्द हिंदुत्व है।

हिंदू और हिंदुत्व की इतनी सुंदर और स्पष्ट व्याख्या किए जाने के बाद इस पर किसी भी प्रकार का संशय स्वतः समाप्त हो जाता है। राहुल गांधी और कांग्रेसियों को अपने दिल और दिमाग से गंदगी साफ करने की आवश्यकता है। उसे यह समझना चाहिए कि कहीं सियासी रोटियां सेंकने के चक्कर में वह देश के समाजिक समरसता के ताने–बाने को तार तार न कर दे। ■

केशव संवाद मासिक पत्रिका के डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़े। एवं
केशव संवाद को सोशल मीडिया पर FOLLOW करें

केशव संवाद

FACEBOOK

Keshav Samvad @keshavsamvad @KeshavSamvad samvadkeshav

ISSN No. 2581-3528

देश से वैश्विक फलक पर बढ़ता हिन्दुत्व

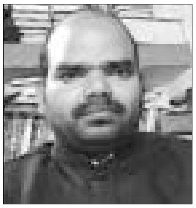

डॉ. रामशंकर 'विद्यार्थी'
प्रधान संपादक, द एशियन थिंकर जर्नल

मानव की संस्कृति का तात्कालिक संबंध प्रज्ञा, मेधा, कर्म तथा निर्माण से है इसका सतत् संवर्धन बना रहे इसलिए किसी भी संस्कृति का संस्कारित होना बहुत जरूरी है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का अतीत बहुत ही गौरवशाली रहा है। हमारे वेद तथा ग्रंथों में भी इसका प्रामाणिक वर्णन है कि 'सा संस्कृतिः प्रथिमा विश्ववारा' अर्थात यह संस्कृति संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए है। भारतीय संस्कृति के उत्कृष्ट भावना का ही प्रतिफल है कि समकालीन संस्कृतियों की तुलना में भारतीय संस्कृति अधिक जीवंत है। भारतीय संस्कृति के द्योतक माननीय प्रधानमंत्री आज पूरी दुनिया के समक्ष आदर्श प्रस्तुत कर संपूर्ण जनमानस को गौरवान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अमेरिका के दौरे पर गए। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 76वें सत्र को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि 'ये भारत के लोकतंत्र की ताकत है कि एक छोटा बच्चा जो कभी एक रेलवे स्टेशन की टी स्टॉल पर अपने पिता की मदद करता था वो आज चौथी बार भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर UNGA को संबोधित कर रहा है।'

मैं उस देश का प्रतिनिधित्व कर रहा हूं, जिसे मदर ऑफ डेमोक्रेसी होने का गौरव हासिल है। लोकतंत्र की हमारी हजारों वर्षों की महान परंपरा रही है। हमारी विविधता, हमारे सशक्त लोकतंत्र की पहचान है। भारत एक ऐसा देश जिसमें दर्जनों भाषाएं हैं, सैकड़ों बोलियां हैं, अलग-अलग रहन-सहन, खानपान है। ये वाइब्रेंट डेमोक्रेसी का उदाहरण है।

भारत की लोकतांत्रिक परंपरा हजारों साल पुरानी है। पीएम मोदी ने कहा, 'मैं उस देश का प्रतिनिधित्व कर रहा हूं, जिसे मदर ऑफ डेमोक्रेसी होने का गौरव हासिल है। लोकतंत्र की हमारी हजारों वर्षों की महान परंपरा रही है। इस 15 अगस्त को, भारत ने अपनी आजादी के 75वें साल में प्रवेश किया है। हमारी विविधता, हमारे सशक्त लोकतंत्र की पहचान है। भारत एक ऐसा देश जिसमें दर्जनों भाषाएं हैं, सैकड़ों बोलियां हैं, अलग–अलग रहन–सहन, खानपान है। ये वाइब्रेंट डेमोक्रेसी का उदाहरण है।' सांस्कृतिक–आध्यात्मिक चेतनायुक्त यह उद्‌बोधन माननीय प्रधानमंत्री और उनकी गौरव शाली सांस्कृतिक निष्ठा को दिखाता है।

भारत की वैश्विक पहचान एक सबसे बड़े लोकतांत्रिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक निष्ठा युक्त देश के रूप में हुई है। प्रधानमंत्री का मानना है कि लोकमत किसी देश की सबसे बड़ी ताकत है। एक साक्षात्कार में वे कहते हैं कि 'सबसे लंबे समय तक गुजरात का मुख्यमंत्री और पिछले 7 साल से भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर मुझे 'हेड ऑफ गवर्नमेंट' की भूमिका में देशवासियों की सेवा करते हुए 20 साल हो रहे हैं और मैं अपने अनुभव से कह रहा हूं कि एक भारत सांस्कृतिक अस्मितायुक्त देश है। संस्कृति से विरक्त होकर इस राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। सांस्कृतिक जुडाव को और माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को विभिन्न देशों के नेताओं द्वारा समय–समय पर संस्कृति के नायक के रूप में उल्लेखित किया है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयास को ब्राजील के प्रधान मंत्री के उद्‌बोधन से भी देखा जा सकता है।

ब्राजील ने कोरोना के लिए 'गेमचेंजर' बताई जा रही दवा हाइड्रॉक्सीक्लोरोक्वीन को 'संजीवनी बूटी' करार दिया था। ब्राजील के राष्ट्रपति जैर बोल्सोनारो ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लिखे पत्र में उन्हें दवा के लिए धन्यवाद भी दिया था। राष्ट्रपति जैर ने कहा कि हनुमान जी ने संजीवन बूटी लाकर भगवान राम के भाई लक्ष्मण के प्राण बचाए थे, वैसे ही भारत मानवता के कल्याण के लिए कर रहा है। इससे पहले पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पीएम मोदी को महान नेता बताया था।

भारत में हिन्दू धर्म को लेकर इन दिनों बहस जारी है। भारत में भले ही इसको लेकर लोग बहस कर रहे हैं, लेकिन विदेशी मीडिया में इसकी तारीफ के पुल बांधे जाते हैं। सोशल मीडिया पर एक विदेशी लड़की द्वारा गाई गई हनुमान चालीसा का वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें हनुमान चालीसा से लेकर हिंदुत्व भी शामिल है।

इस समय अंतरराष्ट्रीय जॉन लुकस एक साउथ अफ्रीकी बॉडी बिल्डर की चर्चा विदेशी मीडिया में खूब है। वे दुनिया के नामचीन सेलीब्रिटी एथलीट्स में गिने जाते हैं। उनकी एक पहचान हनुमान भक्त की भी हैं। जॉन कहते हैं कि हॉलीवुड के जितने भी सुपर हीरोज हैं वो हनुमान जी से ही प्रेरित हैं। सुपरमैन की तरह उड़ने की शक्ति या असीमित ताकत भी हनुमान जी से ही प्रेरित किरदार है। ये बात सच है कि ज्ञात शास्त्रों में राम भक्त हनुमान जी अष्ट सिध्दियों के स्वामी हैं। जॉन रुद्रवतार हनुमान जी के साथ–साथ भगवान शिव की भी उपासना करते हैं। यहां तक कि उन्होंने भगवान शिव के रौद्र रूप को अपने शरीर पर टैटू भी करवा रखा है।

नेपाल के बड़े अखबार 'दि हिमालयन टाइम्स' ऑस्ट्रेलियन आनलाइन' तथा जर्मनी की प्रसिद्ध रेडियो सेवा 'दाइचे वेले' ने भी लिखा और प्रसारित किया था कि अब विकास की बागडोर एक संत के हाथ में आ गई है। ये संदर्भ वैश्विक परिदृश्य पर हिंदुत्व को दिखाते हैं।

समय का अजीब नायाब खेल है कि पश्चिम के लोग कभी भारत को 'सपेरों का देश' कहते थे। यहां की संस्कृति, इसकी सभ्यता का पश्चिमी देशों में खूब हास्य–विनोद का विषय बनता था। आज वही देश भारत के आगे शरणागत हैं। हमारे अभिवादन के तरीके को कोरोना महामारी में पूरी दुनिया अपना रही है। इजरायल, ब्रिटेन जैसे देशों के नेता 'नमस्ते' एवं प्रणाम करते हैं।

आखिरकार यही तो हमारी संस्कृति है। भारत अपने संस्कारों के अनुरूप, मानसिकता के अनुरूप, संस्कृति का निर्वहन करते हुए निर्णय लेता है तभी तो धार्मिक सहिष्णुता का भाव भारतीय संस्कृति को अद्वितीय बनाता है। यह सहिष्णुता धार्मिक विषयों में परस्पर सद्‌भाव का उपदेश भी देती है। हमारे यहाँ धार्मिक परंपराओं में विविधता समावेशित है। ■

ISSN No. 2581-3528

सिनेमाई कला को ध्यानपूर्वक बरते जाने की जरूरत

भारतीय परंपरा में दृश्य-काव्य सामूहिकता में प्रस्तुत किया जाता रहा है, महाकवि कालीदास के अनुसार दृश्य काव्य एक ही स्थान पर लोगों की तृप्ति का साधन है जो भले ही अभिरुचियों में भिन्न हों। ओटीटी के आगमन से दृश्य-श्रव्य उत्पाद की सामूहिक प्रस्तुति का यह तत्व समाप्त हो चुका है। इसी सामूहिकता के कारण ही दृश्य -श्रव्य उत्पाद में सामाजिक सेंसरशिप का हो जाना स्वाभाविक था।

डॉ. यशार्थ मंजुल
सहायक प्रोफेसर
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी वि.वि., वर्धा

हॉलीवुड पर बात करते हुए प्रसिद्ध समाजशास्त्री वेंडी डोनिगर ओ फ्लाहार्टी ने कहा था कि 'मिथक वर्तमान में सिनेमा के ठंडे अंधेरे हाल में शरण ले रहे हैं'। डिजिटलाईसेशन के इस दौर में यथार्थ एक विवादास्पद संप्रत्यय है। ऊपरी तौर पर जितना लगता है उससे कहीं अधिक विवादास्पद। यह एक निश्चित मान लिए गए संप्रत्यय के रूप में समष्टि के एक खंडित अंश को अर्थ देता है। यही खंड वस्तुनिष्ठ अथवा दृश्य यथार्थ को बनाता है।

सच्चाई एक ऐसी चीज है जो वस्तुनिष्ठ यथार्थ में अनिवार्य रूप से प्रतिबिम्बित नही होती, वरन यह अधिकतर बहुत गहरे तक विद्यमान रहती है। कभी–कभी तो यह दृश्य तथ्यपरकता के विपरीत होती है। आज हमे सच में इस बात पर विचार करने कि आवश्यकता है कि क्या हमारी कोई मौलिक कल्पना शेष रह गयी है। हमारा जीवन बिम्बो, प्रतिबिम्बो और छायाचित्रों का एक सतत् सिलसिला होकर रह गया है। इसमें कम छवियाँ सौम्य रूप से हमारे सामने आती हैं और ज्यादातर इतने आक्रामक रूप से प्रस्तुत की जाती हैं जिससे मन और मस्तिष्क का उससे आक्रांत हो उठना स्वाभाविक ही है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने हाल ही में दिये गए अपने एक उद्बोधन में ओटीटी को लेकर जो चिंता जाहिर की वो इन्ही आक्रामक छवियों द्वारा लोक जीवन के बुरी तरह से गिरफ्त में आ जाने के कारण ही उत्पन्न हुई है। आज इसका विस्तारण ही इसके सामाजिक प्रभाव का कारण बन रहा है। भारतीय परंपरा में दृश्य–काव्य सामूहिकता में प्रस्तुत किया जाता रहा है, महाकवि कालीदास के अनुसार दृश्य काव्य एक ही स्थान पर लोगों की तृप्ति का साधन है जो भले ही अभिरुचियों में भिन्न हों। ओटीटी के आगमन से दृश्य–श्रव्य उत्पाद की सामूहिक प्रस्तुति का यह तत्व समाप्त हो चुका है । इसी सामूहिकता के कारण ही दृश्य–श्रव्य उत्पाद में सामाजिक सेंसरशिप का हो जाना स्वाभाविक था।

परंतु ओटीटी के दौर में दृश्य–श्रव्य उत्पाद एकांत में लोगों को प्रस्तुत हो रहा है जिस कारण से सभी प्रकार के सामाजिक दबाव समाप्त हो चुके हैं। आक्रामक छवियाँ पहले से ज्यादा आक्रामक हो चुकी हैं। ऐसे समय में समाज के भीतर से ओटीटी को लेकर चिंता स्वाभाविक ही है।

इतिहास में कभी भी एक साथ इतने बिम्ब मनुष्य को एक साथ प्रस्तुत नहीं हुए। सामूहिकता के खत्म होने के कारण इसमे से सौम्य और सौंदर्यबोध से परिपूर्ण छवियों को छांटना मुश्किल हो चला है। प्रेमचंद ने अपने आलेख 'सिनेमा और जीवन' में लिखा है कि "आदर्शवाद का ध्येय यही है कि वह सुंदर और पवित्र कि रचना करके मनुष्य में जो कोमल और ऊंची भावनाएं हैं, उन्हे पुष्ट करे और जीवन के संस्कारों से मन और हृदय में जो गर्द और मैल जमा हो रहा है,उसे साफ कर दें"।

ऐसी छवियाँ भी ओटीटी पर मौजूद हैं परंतु उनकी मात्रा कम है, जिन छवियों का प्रभुत्व है उनके द्वारा प्रेमचंद के ही शब्दो में "इसे कोरा व्यवसाय बनाकर कला के ऊंचे आसन से खींचकर ताड़ी या शराब की दुकान की सतह तक पहुंचा दिया गया है,यही कारण हैं कि अब सर्वत्र यह आंदोलन होने लगा है कि सिनेमा पर नियंत्रण रखा जाये और उसे मनुष्य की पशुताओं को उत्तेजना देने की कुप्रवृत्ति से रोका जाये।

आज के समय में इन बिंबों के आभाहीन और आक्रामक होना इस कारण से भी ज्यादा है क्योंकि हम दृश्य–श्रव्य उत्पाद को क्राफ्ट, कारीगरी और तकनीक ही मानते हैं तथा इसके कला होने की संभावनाओं से बहुत ज्यादा हद तक इंकार करते है। भारतीय कला के समालोचक अरविंग केंटेश कुमारस्वामी ने माना था कि 'मशीनी युग में कला आभाहीन होने लगी है'। यदि आज दृश्य–श्रव्य उत्पाद को आभाहीन और आक्रामक होने से बचाना है तो हमे सिनेमा के सौन्दर्य को काव्यशास्त्र, कलाशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र के संदर्भ में समझना होगा। हमें उसे काव्य की तरह ही रचना होगा जहां कला का उत्कर्ष एक ऐसे बिन्दु तक पहुँच जाए, जहां वो ज्ञान को भी सहायता दे सके। क्योंकि भारतीय परंपरा में सत्य काव्य का साध्य है और सौन्दर्य उसका साधन। कला कितनी भी बड़ी और महान क्यों न हो जाये, उसे बरतना तो मनुष्य को ही पड़ता है। इसके बरताव के दौरान यदि दुरुपयोग का भाव होगा तो फिर कला अपना कार्य ठीक तरीके से नहीं कर पाएगी। उससे मनुष्य को घाटा ही होगा। दृश्य–श्रव्य माध्यम के उपभोग का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है। प्राइसवॉटर हाउस कूपर की 2018 की एक रिपोर्ट के अनुसार इंटरनेट पर विश्व में 40 प्रतिशत नए उपभोगता बच्चे हैं। इनको भी ध्यान में रखकर ये कंटेंट बनाया जा रहा है। ऐसे समय में सिनेमाई कला को और ध्यानपूर्वक बरते जाने की जरूरत है। ■

विरासत

भारत विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का देश है जो इसकी समृद्ध विरासत को परिलक्षित करते हैं। हमारे देश में कई जातियों, धर्मों और पंथों के लोग रहते हैं। इनमें से प्रत्येक जाति और धर्म के अपने रीति-रिवाज और परंपराएं हैं। प्रत्येक धर्म के त्योहारों, नृत्य रूपों, संगीत और अन्य विभिन्न कला रूपों का अपना समूह है और इनमें से प्रत्येक का अपना आकर्षण है। हमारी संस्कृति की सुंदरता यह है कि हम न केवल अपनी विरासत के प्रति सम्मान रखते हैं बल्कि अन्य धर्मों के लिए भी सम्मान दिखाते हैं। यही कारण है कि सदियों से ज्वलंत भारतीय विरासत सुरक्षित है।

प्रोफेसर डॉ. हरेन्द्र सिंह
शिक्षाविद, शैक्षिक प्रशासक एवं चिन्तक

स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि, "हम मानते हैं कि हर कोई दिव्य है, भगवान है। हर आत्मा एक सूर्य है जो अज्ञानता के बादलों से ढका है। आत्मा और आत्मा के बीच अंतर बादलों की इन परतों की तीव्रता में अंतर की वजह से है। योग अज्ञानता के इन बादलों को दूर करके अंतर्राष्ट्रीय विश्वास, अंतर–सांस्कृतिक वार्ता एवं शांति निर्माण का एक तंत्र है। यह विश्व के लिए भारत की विरासत है।"

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार, "विरासत एक ऐसी चीज है जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जा सकता है, कुछ ऐसा जिसे संरक्षित या विरासत में प्राप्त किया जा सकता है, और कुछ ऐसा जिसका ऐतिहासिक या सांस्कृतिक मूल्य हो। विरासत को एक भौतिक 'वस्तु' के रूप में समझा जा सकता है। संपत्ति का एक टुकड़ा, एक इमारत या एक जगह जो 'स्वामित्व' में सक्षम हो और किसी और को हस्तांतरित किया जा सके।" यदि सामान्य भाषा में कहें तो किसी भी देश के अंदर या हमारे चारों ओर मौजूद वैसी सभी वस्तुएं जो हमें हमारे पूर्वजों से प्राप्त होती हैं, विरासत कहलाती हैं। विरासत पुरानी पीढ़ी से नयी पीढ़ी को उपहार के रूप में अपने रीति–रिवाजों और परंपराओं, स्थलों आदि का एक समूह होता है, जिसे वह अपनी युवा पीढ़ी को सौंपता है।

किसी भी देश, राष्ट्र अथवा किसी भी व्यक्ति के लिए विरासत उसकी पहचान होती है और समृद्ध विरासत के बल पर वे गौरव प्राप्त करते हैं, इस प्रकार विरासत पहचान को परिलक्षित करती है। सांस्कृतिक और प्राकृतिक महत्त्व के स्थलों को हम धरोहर या विरासत कहते हैं। हमारी परम्पराएँ भी विरासत के ही अंतर्गत आती हैं। रीति–रिवाज, धर्म, संस्कृति, भाषा, संगीत, नृत्य, भवन, अभिलेख, सिक्के, रहन–सहन, खान–पान, पर्वत, भूमि, नदी, समुद्र, खनिज, मौसम, पशुदृपक्षी आदि सभी विरासत के ही अंग हैं।

प्रायः विरासत का अभिप्राय सांस्कृतिक गतिविधियों एवं

ISSN No. 2581-3528

ऐतिहासिक महत्व की वस्तुओं से लगाया जाता है। लेकिन गहनता से अवलोकन करने पर इसके अन्यान्य वृहद आयाम और वैविध्यपूर्ण रूप सामने आते हैं, जितना हम इसे सामान्यतः समझते हैं। हमें जो कुछ भी आज सुलभ है वो सब हमारे लिए विरासत का ही एक अंग है तथा हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए जो कुछ भी छोड़ कर जायेंगे वो हमारी विरासत ही होगा। अपनी सम्पूर्णता में विरासत, संस्कृति यथा– धार्मिक मूल्य, रहन–सहन, नैतिकता, विविध कलाएं आदि, हमारी नृजातीय विशेषता और हमारा सामाजिक आचरण, हमारी परम्पराएं, हमारा पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधन, अन्य प्रजातियां पशु–पक्षी आदि तथा और बहुत कुछ समेटे हुए है जिसे जीवित रखने और अगली पीढ़ी तक अग्रसारित करने के लिए इसका संरक्षण एवं प्रसार नितांत आवश्यक है और इसे ही हम अगली पीढ़ी को विरासत के रूप में सौंपेंगे।

हमारे पूर्वजों ने बहुत सी बातें अपने पुरखों से सीखी हैं। समय के साथ उन्होंने अपने अनुभवों से उसमें और वृद्धि भी की है। जो अनावश्यक था, उसको उन्होंने छोड़ दिया। हमने भी अपने पूर्वजों से बहुत कुछ सीखा। जैसे–जैसे समय बीतता है, हम उनमें नए विचार, नई भावनाएँ जोड़ते चले जाते हैं और इसी प्रकार जो हम उपयोगी नहीं समझते उसे छोड़ते जाते हैं। इस प्रकार ये बातें संस्कृति के रूप में एक पीढी से दूसरी पीढी तक हस्तान्तरित होती जाती है। इस प्रकार हस्तांतरित होकर जो हम अपने पूर्वजों से प्राप्त करते हैं उसे विरासत कहते हैं। यह विरासत कई स्तरों पर विद्यमान होती है। मानवता ने सम्पूर्ण रूप में जिस संस्कृति को विरासत के रूप में अपनाया उसे 'मानवता की विरासत' कहते हैं। एक राष्ट्र भी संस्कृति को विरासत के रूप में प्राप्त करता है जिसे 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत' कहते हैं।

सांस्कृतिक विरासत में वे सभी पक्ष या मूल्य सम्मिलित हैं जो मनुष्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी अपने पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं। वे मूल्य पूजनीय होते हैं, संरक्षित किए जाते हैं और अटूट निरन्तरता से सुरक्षित रखे जाते हैं तथा आने वाली पीढ़ियाँ इन पर गर्व करती हैं।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ की विरासत अत्यंत विस्तृत और विविध है, यहां हर जाति के लोग रहते हैं और यहां पर 1700 से भी अधिक भाषाएं बोली जाती और समझी जाती हैं। भारत का रहन, सहन, खान की हर चीज बहुत ही अनोखे अंदाज में है। जैसे कि भारत में पेड़, नदी, देवी–देवता आदि हर चीज पूजनीय है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारतीय विरासत फैली हुई है।

विश्व विरासत के स्थल किसी भी राष्ट्र की सभ्यता और उसकी प्राचीन संस्कृति के महत्त्वपूर्ण परिचायक माने जाते हैं। भारतीय विरासत के संप्रत्यय को स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण सहायक सिद्ध होंगे यथा– ताजमहल, स्वामी नारायण मंदिर, आगरा का लाल किला, दिल्ली की कुतुब मीनार, मैसूर महल, दिलवाड़े का जैन मंदिर, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, दिल्ली का शीशगंज गुरुद्वारा, सांची स्तूप, इंडिया गेट, दक्षिण भारत के मंदिर आदि हमारी विरासत के महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। वास्तु संबंधित इन रचनाओं, इमारतों, शिल्पकृतियों के अलावा बौद्धिक उपलब्धियाँ, दर्शन, ज्ञान के ग्रन्थ, वैज्ञानिक आविष्कार और खोज भी विरासत का हिस्सा हैं। भारतीय संदर्भ में गणित, खगोल विद्या और ज्योतिष के क्षेत्र में बौधायन, आर्यभट्ट और भास्कराचार्य का योगदान, भौतिकशास्त्र के क्षेत्र में कणाद और वराहमिहिर का, रसायनशास्त्र के क्षेत्र में नागार्जुन, औषधि के क्षेत्र में सुश्रुत और चरक, योग के क्षेत्र में पतंजलि हमारी भारतीय सांस्कृतिक विरासत की अमूल्य धरोहर हैं। संस्कृति परिवर्तनशील है लेकिन हमारी विरासत परिवर्तनशील नहीं है।

भारत विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का देश है जो इसकी समृद्ध विरासत को परिलक्षित करते हैं। हमारे देश में कई जातियों, धर्मों और पंथों के लोग रहते हैं। इनमें से प्रत्येक जाति और धर्म के अपने रीति–रिवाज और परंपराएं हैं। प्रत्येक धर्म के त्योहारों, नृत्य रूपों, संगीत और अन्य विभिन्न कला रूपों का अपना समूह है और इनमें से प्रत्येक का अपना आकर्षण है। हमारी संस्कृति की सुंदरता यह है कि हम न केवल अपनी विरासत के प्रति सम्मान रखते हैं बल्कि अन्य धर्मों के लिए भी सम्मान दिखाते हैं। यही कारण है कि सदियों से ज्वलंत भारतीय विरासत सुरक्षित है।

हमारा देश भारत सम्पूर्ण विश्व में अपनी विरासत लिए प्रसिद्ध है। भारतीय विरासत मुख्य रूप से तीन प्रकार की है– निर्मित, प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत। भारतीय विरासत में धर्म, धार्मिक किताबें एवं ग्रंथ, त्यौहार, ऐतिहासिक स्थल और लोकनृत्यों आदि का भी अपना विशेष महत्त्व है। हिन्दू, सिख, मुस्लिम और जैन धर्म भारतीय विरासत के जीते जागते अप्रतिम उदाहरण हैं। भारतीय विरासत ने विश्व को गुरु नानक, महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध, राम, कृष्ण जैसे अनेकों महान संत दिए हैं जिनकी शिक्षाओं द्वारा हमें जीवन का अर्थ और महत्व समझने को मिलता है जोकि मानव को मानव से जुड़े रखने का कार्य करता है।

जब हम धार्मिक पुस्तकों और ग्रंथों की विरासत की बात करते हैं तो उसने सबसे पहले नाम आता है वेद, पुराण, उपनिषद, गीता, रामायण, गुरु ग्रंथ साहेब आदि का, यह सब धार्मिक ग्रन्थ हमको जीवन का मार्गदर्शन देती है और जीवन जीने की विधि, ध्येय, लक्ष्य, दया, कर्म, धर्म आदि की प्रत्येक बात हमको बहुत विस्तार से बताकर हम भारतीयों के नैतिक मूल्यों को बढ़ाती हैं। इसी प्रकार भारतीय विरासत में होली, दीपावली, गणेश चतुर्थी आदि त्योहारों का भी अपना विशेष महत्त्व है जिन्हें सभी नागरिक बड़े प्रेम और उत्साह से मनाते हैं। भारतीय विरासत में नदियों, आयुर्वेद और योग, नौटंकी, घूमर, गरबा, गिद्दा, भांगड़ा, आदि लोक कलाओं और लोक नृत्यों का भी अपना अलग स्थान है।

भारतीय विरासत में बहुत सारे ऐतिहासिक स्थल हैं जैसे कि अयोध्या, मथुरा, काशी, वाराणसी, प्रयागराज, हरिद्वार, नालंदा, राजगीर, बोधगया, कुरुक्षेत्र, चित्रकूट, दिल्ली, सारनाथ, कोलकाता, उड़ीसा, आदि स्थानों का अपना–अपना धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व है। इसी कड़ी में दक्षिण भारत के मंदिर भारतीय विरासत के लिए गौरव हैं।

भारत के ऐतिहासिक महत्व के कुल 32 स्थल, विश्व विरासत स्थल सूची में दर्ज हैं। इनमें 25 सांस्कृतिक श्रेणी तथा 7 प्राकृतिक श्रेणी में सम्मिलित हैं। विश्व विरासत धरोहरों के सन्दर्भ में भारत का दुनिया में महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व विरासत स्थल सूची में शामिल भारत की अजंता–एलोरा की गुफाएं दुनिया भर को जहाँ भारत की हिन्दू, बौद्ध और जैन संस्कृति की कहानी बताती हैं तो वहीं दूसरी ओर नंदा देवी राष्ट्रीय पार्क के भाग के रूप में फूलों की घाटी भारत के अनूठे सौन्दर्यबोध से सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित करता है। ■

ISSN No. 2581-3528

भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग रही है टेक्नोलॉजी

भारत की ज्ञान परंपरा में टेक्नोलॉजी चिन्तन के आधार पर विकसित सिद्धांतों को लेकर सामने आई है। जबकि, वर्तमान टेक्नोलॉजी 'ट्रायल एवं एरर' के सिद्धांत पर विकसित हुई है। मनीषियों ने वेदों में स्पष्ट कर दिया है कि सांसारिक ज्ञान और आध्यात्मिक दोनों ही हमारे जीवन के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। वेदों में आध्यात्मिक ज्ञान को विद्या और पदार्थ विज्ञान को अविद्या कहा है।

डॉ. प्रसून कुमार मिश्र
वरिष्ठ पत्रकार

सामान्यतया ज्ञान, विज्ञान और टेक्नोलॉजी इन तीनों का अलग–अलग स्वरूप होता है। ज्ञान और विज्ञान को आसपास समझ भी लें, लेकिन टेक्नोलॉजी इनसे थोड़ा अलग, कई बार इनके सिद्धांतों पर आधारित और कई बार स्वतंत्र स्वरूप वाले दिखाई देती है। आधुनिक विज्ञान और टेक्नोलॉजी का यही रूप हमें देखने को मिलता है।

भारतीय विज्ञान की परंपरा में ऐसा नहीं मिलता है। यहां ये तीनों आपस में जुड़े हुए होते हैं। प्रयोग कर के निकाले गए सिद्धांत के स्थान पर मनीषियों के मंत्रों और सूत्रों के आधार पर विज्ञान और टेक्नोलॉजी को स्वरूप दिया गया है। इसके बाद समय, स्थान और परिस्थिति के अनुसार प्रयोग किए गए। मनीषियों के मंत्रों और सूत्रों से मिले विज्ञान और टेक्नोलॉजी की विशेषता यह रही कि यह सामान्यतया साइट इफेक्ट वाले और विध्वंसात्मक होने से बची रही। कुछ विध्वंसात्मक यंत्र विशेष परिस्थित के लिए अलग से ही बनाए गए थे।

परन्तु, इन बातों से पहले एक प्रश्न उपस्थित कर दिया जाता रहा है कि क्या भारत की परंपरा में विज्ञान और टेक्नोलॉजी भी है? अथवा केवल लंबे–लंबे आध्यात्मिक सिद्धांत ही रहे हैं।

यह प्रश्न स्वाभाविक है। जो भी यूरोपीय अध्येता भारत आए, वे भारत को नीचा दिखाने की मंशा पाले हुए थे, क्योंकि वे औपनिवेशिक व्यवस्था के अन्तर्गत भेजे गए थे। बाद में वहा के विद्वानों को समझ में आने लगा कि भारत से कुछ लिया भी जा सकता है। 16 वीं सदी के आसपास आने वाले लोगों ने भारत से सीखने का प्रयास शुरू कर दिया। कई वैज्ञानिकों की डायरी और आत्मकथा एवं अंग्रेजी अधिकारियों के दस्तावेजों से इस तरह की बातें सामने आने लगी हैं।

यद्धपि हमारे लिए यह प्रश्न उतना ही उत्सुकता वाला है कि क्या भारत ने व्यवहारिक विज्ञान और टेक्नोलॉजी को अपने शास्त्रों जैसे वेद या वैदिक वाङ्गमय में कोई स्थान दिया था?

उत्तर तो 'हां' में मिलता है और कई उदाहरण भी मिलते हैं।

भारत की ज्ञान परंपरा में टेक्नोलॉजी चिन्तन के आधार पर विकसित सिद्धांतों को लेकर सामने आई है। जबकि, वर्तमान टेक्नोलॉजी 'ट्रायल एवं एरर' के सिद्धांत पर विकसित हुई है। मनीषियों ने वेदों में स्पष्ट कर दिया है कि सांसारिक ज्ञान और आध्यात्मिक दोनों ही हमारे जीवन के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। वेदों में आध्यात्मिक ज्ञान को विद्या और पदार्थ विज्ञान को अविद्या कहा है। विद्या का अभिप्राय साधना, समाधि अथवा राजयोग जैसे श्रेष्ठ योगादि माध्यमों से है, जो ब्रह्म के समीप अथवा ब्रह्ममय होने की बात करता है। अविद्या का अभिप्रायरू वर्तमान में दिखाई देने वाले इंजीनियरिंग, मेडिकल या अन्य विद्यालय–महाविद्यालय में छोटे से लेकर बड़ी या उच्चस्तरीय शिक्षा इत्यादि से समझा जा सकता है। वेदों में विद्या और अविद्या, दोनों के महत्व तो समान रूप से दर्शाया गया है। संसार में जीवन चलाने के लिए, जिसको विकास करना या सभ्यता का विकसित होना कहते हैं, उसके लिए अविद्या की आवश्यकता बतायी गई है।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ।। यजु. 40.14

अर्थात् – इस विद्या (आत्म–विज्ञान) और उस अविद्या (पदार्थ–विज्ञान) दोनों का ज्ञान एक साथ प्राप्त करो। अविद्या के प्रभाव से मृत्यु को पार करके (पदार्थ विज्ञान से अस्तित्व बनाए रखकर) विद्या (आत्म–विज्ञान) द्वारा अमृत तत्व को प्राप्ति की जाती है।

ईशावास्योपनिषद् में विद्या (चेतनापरक विद्या) और अविद्या (पदार्थपरक विद्या) के विषय में कहा गया है कि विद्या और अविद्या दोनों के प्रभाव भिन्न–भिन्न होते हैं। दोनों को साथ–साथ जानना चाहिए।

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ।

ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायाँ रताः ।। ईशा. 1.9

अर्थात, जो केवल अविद्या (पदार्थपरक विद्या) की उपासना करते हैं, वे घोर अन्धकार में घिर जाते हैं। जो केवल विद्या (चेतनापरक विद्या) की उपासना करते हैं, वे भी उसी प्रकार के अन्धकार में फंस जाते हैं।

यह बात कितनी बड़ी और प्रभावशाली है। जीवन में दोनों पक्ष चाहिए। केवल विद्या या केवल अविद्या मानव जीवन को कष्टकर बना सकती है। इसका उदाहरण है – आज के विज्ञान और टेक्नोलॉजी का विकास। उसी तरह, केवल अध्यात्म का विकास जीवन जटिलताओं के मुक्ति नहीं दिला सकता है।

महाभारत में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आत्मज्ञान के विषय में ज्ञान की आवश्यकता है, किन्तु भौतिक पदार्थों के जानकार ही संसार यापन के लिए सर्वाधिक उपाय कर सकते हैं। महाभारत विज्ञान और प्रोद्यौगिकी का मानक ग्रन्थ हो सकता है। महात्मा विदुर महाराज धृतराष्ट्र को बता रहे हैं कि भौतिक पदार्थों के ज्ञान की आवश्यकता मनुष्य को क्यों है? विदुर ने भौतिक पदार्थों के विशेषज्ञों को वास्तविक पंडित कहा।

तत्वज्ञ ः सर्वभूतानां योगज्ञ ः सर्वकर्मणां ।

उपायज्ञो मनुष्याणां नर ः पण्डित उच्यते ।। उद्यो.33.27

अर्थात् जो सम्पूर्ण भौतिक पदार्थों के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान रखने वाला, सब कार्यों के करने का ढंग जानने वाला तथा मनुष्यों में भी सबसे बढ़कर उपाय का जानकार है, वही पण्डित कहलाता है।

भारत के विकसित विज्ञान और टेक्नोलॉजी की परंपरा का आधार शास्त्रों में दिया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि जीवनयापन के लिए टेक्नोलॉजी की आवश्यकता उतनी ही है जितनी अध्यात्म की आवश्यकता है

ISSN No. 2581-3528

उत्सव मंथन

नीलम भागी
लेखिका

जन मानस से जुड़ी लीला तो घरो में दिवाली के अगले दिन मनाया जाने वाला गोवर्धन पूजा का उत्सव है, जिसे दुनिया के किसी भी देश में रहने वाला कृष्ण प्रेमी मनाता है। यह उत्सव पर्यावरण और समतावाद का संदेश भी देता है। मेरी सोच में, कन्हैया बड़े हो रहें हैं। अब वे बात–बात पर प्रश्न और तर्क करते हैं। पूजा की तैयारी और पकवान बन रहे थे। बाल कृष्ण नंद से प्रश्न पूछने लगे,''किसकी पूजा, क्यों पूजा?'' नंद ने कहा,''ये पूजा इंद्र को प्रसन्न करने के लिए की जाती है। वह वर्षा करता है।'' कन्हैया ने सुन कर जवाब दिया कि हरे भरे गोवर्धन की पूजा करनी चाहिए। उस पर गौए चरती हैं। जब बहुत वर्षा होती है। तो हम सब अपना गोधन लेकर, गोवर्धन की कंदराओं में शरण लेते हैं। इसकी पेड़ों की जड़े वर्षा का पानी सोख कर उसे हरा भरा रखती हैं। बादलों को रोकता है। अपनी कंदराओं में जल संचित कर, झरनों के रूप में देता है। इस बार पूजा गोवर्धन की करनी चाहिए। सबको कन्हैया की बात ठीक लगी। प्रक्ति ने ग्रामीणों को जो दिया था, सब लाए। बाजरा की भी उन्हीं दिनों फसल आई थी, उसकी भी खिचड़ी बनी। दूध दहीं मक्खन मिश्री से बने पकवान लेकर गोवर्धन पूजा के सामूहिक भोज में अपना योगदान देने पहुंचा। गोधन, गिरिराज जी की पूजा की। प्रकृति की गोद में सबने मिलकर भोजन प्रशाद खाया और कन्हैया ने बंसी बजाई। हर्षोल्लास से इस तरह मिल जुल कर खाना, बजाना के साथ, अन्नकूट का उत्सव संपन्न हुआ। यम द्वितीया भाई बहन का त्यौहार भइया दूज कहलाता है। ब्रजभूमि में बहन भाई यमुना जी में नहा कर इसे मनाते हैं।

उत्सव ऐसा आयोजन है जो आमतौर पर एक समुदाय द्वारा मनाया जाता है और उसके धर्म या संस्कृतियों के कुछ विशिष्ट पहलू पर केन्द्रित होता है।

मैं छठ से पहले दस दिन बिहार यात्रा पर थी। जिस भी कैब में बैठती ड्राइवर छठ के गीत लगाता, उन गीतों को सुनते ही अलग सा भाव पैदा हो जाता था। चार दिवसीय छठ पर्व मनाया जाता है और यहां इसकी जगह–जगह तैयारी दिख रही थी। ये देख कर मुझे पक्का यकीन हो गया कि बिहारी से बिहार दूर हो सकता है पर जहां भी रहता है, वहां छठ से दूर नहीं रह सकता।

उत्सव परिवारों को जोड़ता है। छठ और गोर्वधन पूजा सब परिवार एक साथ मनाता है।

मेरी दादी बेस्वाद आंवला खिलाते समय पंजाबी में कहती,''स्याने दा केया, ते औले दा खादा बाद च पता चलदा' मतलब विद्वान का कथन और आंवले का स्वाद या लाभ बाद में पता चलता है। हम आंवला चबा कर ऊपर से पानी पीते तो वह मीठा लगता और दादी ठीक लगती। बिमारियों से बचाने वाले आंवला लाभ के लिए खाने लगते। तभी तो आंवला नवमीं के दिन सपरिवार आंवला के पेड़ की पूजा की जाती है जिसमें पेड़ की 108 परिक्रमा की जाती हैं। महानगरों के फ्लैट्स में पेड़ न होने पर भी बाजार से आंवला लगी टहनी खरीद कर पूजा की जाती है। उत्सव यानि पर्व या त्यौहार का हमारी संस्कृति में विशेष स्थान है। साल भर कोई न कोई उत्सव चलता ही रहता है। हर ऋतु में हर महीने में कम से कम एक प्रमुख त्यौहार अवश्य मनाया जाता है। अक्टूबर से जनवरी वह समय होता है जब पूरे देश को उत्सवमय देखा जा सकता है। कुछ उत्सव किसी अंचल में मनाए जाते हैं। कुछ देश भर में, भले ही नाम अलग–अलग हों। जैसे दक्षिण भारत में भी कार्तिक मास के पावन अवसर पर काकड़ आरती का प्रारंभ परम्परानुसार शरदपूर्णिमा के दूसरे दिन से होता हैं। देवउठनी एकादशी के अवसर पर काकड़ आरती को भव्य स्वरूप दिया जाता है। तुलसी सालिगराम का विवाह उत्सव मनाया जाता है। वारकरी सम्प्रदाय के बुजुर्ग बताते हैं कि संत हिरामन वाताजी महाराज ने 365 वर्ष पहले काकड़ आरती की शुरुआत की थी। आरती में शामिल होने के लिए श्रद्धालु प्रातः 05 बजे विटठल मंदिर में आते हैं और भजन मंडलियां पकवाद, झांज, मंजीरों एवं झंडियों के साथ नगर भ्रमण करती है। उत्तर भारत में प्रभात फेरी निकाली जाती है।

कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरारी पूर्णिमा भी कहते हैं। त्रिपुरास राक्षस पर शिव की विजय का उत्सव है। इसे देव दीपावली के रूप में मनाते हैं। गुरु नानक जयंती और जैनों के धार्मिक दिवस है। धर्म और लोककथाओं के बाद उत्सव की एक महत्वपूर्ण उत्पत्ति कृषि है। धार्मिक स्मरणोत्सव और अच्छी फसल के लिए धन्यवाद दिया जाता है। रवि की फसल की बुआई सितम्बर से नवम्बर तक हो जाती है। बड़ी श्रद्धा और उत्साह से उत्सव मनाते हैं। इन सभी उत्सवों में प्रकृति वनस्पति और जल है। विद्वानों का मानना है जो जनजातियां नाचती गाती नहीं–उनकी संस्कृति मर जाती है।

नृत्य, गायन उत्सवों की शुरूआत भारत के मंदिरों में हुई थी। लेकिन अब देश विदेश से इन उत्सवों को देखने पर्यटक आते हैं। दिसंबर में आयोजित उत्सव सनबर्न फेस्टिवल (गोवा) संगीत नृत्य संगीत प्रेमियों के लिए, माउंट आबू विंटर फैस्टिवल (राजस्थान) लोकनृत्य, संगीत घूमर, गैर और धाप, डांडिया, शामें कव्वाली, रण उत्सव(गुजरात) रेगिस्तान में सांस्कृतिक कार्यक्रम गरबा लोक संस्कृति आदि। श्री क्षेत्र उत्सव पुरी की परंपराओं को जीवित करती रेत की कला,

ममल्लपुरम डांस फेस्टिवल(चेन्नई) खुले आकाश के नीचे, नृत्य संगीत, शास्त्रीय और लोक नृत्य, हॉर्नबिल उत्सव (नागालैंड) ये पक्षी के नाम पर है जिसके पंख सिर पर लगाते हैं। धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं। बहादुर नायकों की प्रशंसा के गीत गाए जाते हैं।

दादी हमेशा किसी भी उत्सव की पूजा करते समय परिवार को बिठाकर उसकी बड़ी रोचक कथा सुनाती थी। गणेश चतुर्थी जिसे वह सकट बोलती थी। उसमें गणेश जी की चार कथाएं एक साथ सुनाती और हर कथा के बाद एक तिल का लड्डू देती। कड़ाके की ठंड में हम चारों लड्डू खा जाते। अब अम्मा 92 साल की दादी की तरह कथा सुनातीं हैं। हमेशा हमें 31 दिसम्बर को कहतीं हैं कि हमारा नया साल तो चैत्र प्रतिप्रदा को होता हैं, तब सबको नए साल की बधाई देना। अब अम्मा की बात तो माननी है न। यही मौसम के अनुसार हमारे उत्सवों की मिठास और परम्परा है। ■

मीडिया जगत की लोकप्रिय हस्ती श्वेता सिंह

डॉ. नीलम कुमारी
विभागाध्यक्ष (अंग्रेजी विभाग)
किसान पोस्ट ग्रेजुएट कॉलज, सिम्भावली, हापुड़

महिलाएं अतीत से लेकर आज तक अपना इतिहास स्वयं गढ़ती आ रही है। स्त्री, नारी अपराजिता सब महिला के ही पर्यायवाची है। महिला के अंदर समाहित सद्गुणों जैसे त्याग, बलिदान, सहनशीलता, कर्तव्य परायणता, गंभीरता शौर्य व पराक्रम के कारण ही नारी को पूजनीय माना गया है यथा.....

पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्ताः तस्माद्रक्ष्या विशेषतः।।

अर्थात् सम्मान के योग्य, महाभाग्यशालिनी, पुण्यशीला और घर की शोभास्वरूप स्त्रियां घर की लक्ष्मी कही गयी हैं। इसलिए इनकी विशेष रूप से रक्षा करनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि स्त्री सर्वाधिक पूजनीय और रक्षणीय है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि ज्ञान परंपरा के रूप में गार्गी, मैत्रेयी व अपाला, सतीत्व की पर्याय सीता, सवित्री व द्रोपदी, शौर्य व पराक्रम की प्रतिमूर्ति रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती अहिल्या बाई होल्कर और सामाजिक सेवा में सर्वस्व न्योछावर करने वाली सावित्री बाई फुले, आनंदी बाई अनेक ऐसे उदाहरण है जो नारी की शक्ति व अपराजित गुण को प्रमाणित करते है। नारी ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। ऐसे में महिला को अपराजिता की संज्ञा देना कोई अतिश्योक्ति नही होगी।

महिला हर क्षेत्र में कुशल एवं सक्षम है वह राजनीतिज्ञ, गणितज्ञ वैज्ञानिक, डॉक्टर, सेना व पुलिस में महत्वपूर्ण दायित्व पर आसीन है। आज मीडिया के क्षेत्र में भी महिलाओं का दबदबा दिखाई दे रहा है। हालांकि आज से कुछ वर्षो पहले तक मीडिया में अँगुलियों पर गिनी जाने वाली महिलाएँ थीं। लेकिन आज स्थिति भिन्न है। आज मीडिया–जगत का ऐसा कोई कोना नहीं जहाँ महिलाएँ आत्मविश्वास और दक्षता से मोर्चा नहीं संभाल रही हो। विगत वर्षों में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और इंटरनेट पत्रकारिता की दुनिया में महिला स्वर प्रखरता से उभरें है।

इस जगमगाहट का एक अहम कारण यह है कि पत्रकारिता के लिए जिस वांछित संवेदनशीलता की जरूरत होती है वह महिलाओं में नैसर्गिक रूप से पाई जाती है। यही कारण है कि मीडिया में महिलाओं का गरिमामयी वर्चस्व बढ़ा है। पहले समझा जाता था कि मीडिया महिलाओं के लिए उपयुक्त नहीं है यहाँ महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। लेकिन जबसे बरखा दत्त, रजनी शर्मा, रितुल जोशी जैसी निडर और समर्पित पत्रकार आई हैं लोगों की ये गलतफहमी ही दूर नही हुई है, अपितु आज के दौर में महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा पत्रकारिता जगत में अधिक सक्रिय हैं और सफलता के आकाश को निरंतर छू रही हैं आज हर समाचार चैनल और समाचार पत्रों में महिलाएं अपनी मनभावन मुस्कुराहट और बुद्धिमता से बड़े से बड़े नेताओं, खिलाडियों और अभिनेताओं को अपने प्रश्न जाल में उलझा उनके छक्के छुडाती नजर आती हैं। चित्र सुब्रहमन्यम और सुहासिनी राज हिंदुस्तान जैसे एक बड़े समूह कि संपादक मुर्णलिनी पाण्डेय और हिंदी नेस्ट की संपादक मनीषा कुलश्रेष्ठ भी मीडिया जगत में महिलाओं के वर्चस्व का जीवंत उदाहरण हैं।

मीडिया जगत की एक ऐसी ही निडर, साहसी, निर्भीक, ऊर्जावान खतरों से खेलने वाली पत्रकार, लेखिका, अभिनेत्री बहुआयामी प्रतिभा की धनी श्वेता सिंह का व्यक्तित्व पत्रकार जगत से जुड़ी प्रत्येक नारी शक्ति के लिए प्रेरणा स्रोत है। जब भी श्वेता सिंह का नाम मन व मस्तिष्क में आता है तब कभी हिंदुत्व के लिए निर्भीकता से भरा चेहरा तो कभी जगन्नाथपुरी में खोए हुए शहर को खोजने के लिए स्कूबा डाइविंग करने वाला उत्साही व जांबाज व्यक्तित्व, कभी प्रधानमंत्री जी का आत्मविश्वास के साथ साक्षात्कार करने वाली पत्रकार तो कभी सीमा पर जाकर खतरों से खेलने वाली जवान के रूप में और कभी समसामयिक मुद्दों को लेकर जनता को खबरदार करने वाली एक प्रखर पत्रकार व टीवी एंकर के रूप में उनका संजीव चित्र आँखों के सामने आ जाता है।

जैसा कि हम सभी जानते है कि भारतीय समाचार प्रसारण क्षेत्र में श्वेता सिंह एक जाना–पहचाना नाम हैं। श्वेता सिंह एक भारतीय पत्रकार और समाचार प्रस्तुतकर्ता हैं। वे आजतक में विशेष कार्यक्रम की न्यूज एंकर और कार्यकारी संपादक हैं। श्वेता इकलौती पत्रकार हैं जिन्हें सर्वश्रेष्ठ ऐंकर, सर्वश्रेष्ठ प्रोड्यूसर और सर्वश्रेष्ठ रिपोर्टर का अवॉर्ड मिल चुका है।

2016 में श्वेता को अलग–अलग समारोह में कुल 12 अवॉर्ड मिले थे, जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है।

21 अगस्त 1977 में बिहार के पटना शहर के एक छोटे से ग्राम मे एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मी श्वेता बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि व

ISSN No. 2581-3528

विलक्षण प्रतिभा की धनी थी। श्वेता सिंह बचपन में एक फिल्म प्रड्यूसर बनना चाहती थी लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। स्टोरी टेलर व आर्टिकल राइटिंग से अपने करियर की शुरुआत करने वाली श्वेता एक कुशल, प्रसिद्ध व लोकप्रिय पत्रकार बन गई। उन्होंने अपनी शुरुआती शिक्षा, अपने गृहनगर के स्कूल से ही पूरी की. बाद में पटना विश्वविद्यालय से मास कम्युनिकेशन में अपना ग्रेजुएशन पूरा किया। श्वेता बचपन से ही अच्छी स्टोरीटेलर थी, इसलिए वे लोकल न्यूज पेपर के लिए आर्टिकल भी लिखा करती थी।

पढ़ाई के दौरान ही श्वेता ने एक पत्रकार के तौर पर लोकल न्यूज पेपर के लिए आर्टिकल लिखना शुरू कर दिया था। श्वेता टाइम्स ऑफ इंडिया और हिंदुस्तान टाइम्स जैसे न्यूज पेपर के लिए आर्टिकल राइटिंग किया करती थी। फिर श्वेता राजधानी दिल्ली आ गई, दिल्ली में श्वेता सिंह ने 1998 में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अपना कदम रखा। वे पहले जी न्यूज, सहारा न्यूज जैसे चैनल के लिए एक न्यूज रीडर और न्यूज एंकर के तरह काम करती थी। वर्ष 2002 में, श्वेता सिंह ने आजतक को ज्वाइन किया और तब से लेकर अब तक श्वेता सिंह आजतक की एक प्रतिष्ठित टीवी एंकर है। श्वेता सिंह ने स्पोर्ट्स से सम्बन्धित समाचार में विशेषज्ञता हासिल थी, इसी गुण से आजतक में श्वेता ने खूब नाम कमाया।

उनकी सफलता ने आसमान तब छुआ जब श्वेता को 2005 में स्पोर्ट्स जर्नलिज्म फेडरेशन ऑफ इंडिया (SJFI) द्वारा बेस्ट स्पोर्ट्स प्रोग्राम से सम्मानित किया गया। तब से लेकर आज तक उन्होंने पीछे मुड़कर नही देखा।

पत्रकारिता में दो दशक से अधिक समय बिता चुकी श्वेता सिंह 15 वर्षों से आजतक न्यूज चैनल से जुड़ी हुई हैं। इन्होंने आजतक समाचार प्रस्तुतकर्ता के रूप में कई हिंदी फिल्मो में भी काम किया है। जिसमें चक्रव्यूह ने काफी प्रसिद्धि हासिल की।

कम शब्दों में अगर कहा जाए तो मीडिया और महिलाएं आज एक दूसरे के पूरक बन चुके है। मीडिया द्वारा महिलाओं ने स्वयं की प्रतिभा को साबित भी किया है और श्वेता सिंह जैसी प्रतिभा मीडिया जगत की महिलाओं के लिये जीवंत उदाहरण है। ■

श्वेता सिंह को मिले कुछ चुनिन्दा अवार्ड...

1. SJFI अवार्ड 2005, "सौरव का सिक्सर" प्रोग्राम के लिए
2. बेस्ट एंकर के लिए NT अवार्ड 2012
3. ENBA अवार्ड, बेस्ट प्रड्यूसर ऑफ 2013
4. स्वेतपुत्र बजट 2014 के लिए 5-बेस्ट बिजनस शो ENBA अवार्ड
6. बेस्ट टॉक शो इंटरटेंटमेंट बेस्ट एंकर 2015
7. ENBA अवार्ड बेस्ट एंकर 2017

कविता

संविधान

मैं जन - गण - मन का अरमान हूँ
हिन्दुस्तान का सम्मान, अभिमान हूँ।
गणतंत्र,स्वतंत्रता,समानता का पोषक
हॉ ...मैं ही भारत का संविधान हूँ॥

मैं लाल किले का सम्मान हूँ
डॉ.भीमराव अंबेडकर की रचना हूँ।
समान कानून,मौलिक अधिकार
देने वाला मैं ही भारत का संविधान हूँ॥

मैं सभी धर्मो,संप्रदायों का मान हूँ
अपनी माँ भारती का विधान हूँ।
सारा जग करता मेरा सम्मान
हां.. मैं ही भारत का संविधान हूँ॥

मैं न्याय , शिक्षा का प्रावधान हूँ
इसलिए सारे जग में मैं महान हूँ।
देश का गणतंत्र पर्व कहलाया
हां मैं ही भारत का संविधान हूँ॥

गोपाल कौशल
धार, मध्य प्रदेश

सोशल मीडिया और नागरिक पत्रकारिता

'पत्रकारिता एक स्किल है जिसे सीखना और समझना बहुत जरूरी है', ताकि सोशल मीडिया जो समाज से जुड़ने का बेहतरीन विकल्प है उसका उचित उपयोग हो सके, साथ ही साथ वर्तमान स्थिति को देखते हुए सिटीजन जर्नलिज्म और सोशल मीडिया के मध्य एक गेटकीपर की भूमिका और पत्रकारिता के प्रशिक्षण की अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है ताकि सोशल मीडिया एक साधन के रूप में और आम नागरिक सूचना का एकत्रण, विश्लेषण और प्रसारण द्वारा समाज में सकारात्मक भूमिका निभा सकें।

नेहा कक्कड़
एम. फिल ,पत्रकारिता एवं जनसंचार
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

पत्रकार, जो अपनी कलम और आवाज की शक्ति से दुनिया के सामने तथ्य के साथ सत्य प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है और यदि पत्रकार को सोशल मीडिया जैसा मैजिक मल्टीप्लायर माध्यम मिल जाएं तो, ये तो सोने पर सुहागा जैसी स्थिति हुई। वर्तमान समय में सोशल मीडिया की यदि हम बात करें तो इसकी असीमित चादर ने जैसे हर किसी को अपने अंदर समेट लिया है आज हर किसी के हाथ में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की कमान है जहां न केवल कंटेंट पढ़ने, सुनने और देखने के लिए उपलब्ध है, बल्कि फेसबुक जिसका नया नाम 'मेटा' है के अंतर्गत तो रील जैसे अन्य फीचर्स भी उपलब्ध है जहां अपना कन्टेंट बना कर उसका प्रचार प्रसार भी कर सकते हैं। जब डिजिटल इंडिया की ओर हम सभी के बढ़ते कदम हैं तो ऐसे में पत्रकारिता इससे कैसे अछूती रह सकती है। यह 'डिजिटल इंडिया' की सुलभता और ऑनलाइन मीडिया का बढ़ता हुआ क्रेज ही है जिसको अपनाते हुए तमाम चैनल, अखबार, पत्रिकाएं अपनी न्यूज वेबसाइट के माध्यम से अपने दर्शकों का ध्यान आकृष्ट किये हुए हैं। ऐसे में तकनीक की डोर को थामे इंटरनेट अब पत्रकारिता का नया स्रोत, टूल बन गया है, निश्चित रूप से तकनीकी विकास ने पत्रकारिता के विभिन्न आयामों को भी प्रभावित किया है अब ये प्रभाव कितने सकारात्मक और नकारात्मक हैं ये जानने के लिए बहुत जरूरी है की पत्रकारिता में हुए तकनीकी विकास खास कर ऑनलाइन जर्नलिज्म के नए ट्रेंड को समझा जाए।

बीते एक दशक में ऑनलाइन मीडिया के बढ़ते प्रचलन में व्यापक वृद्धि देखी जा सकती है और कोविड काल के बाद तो 'प्रत्यक्षम् किम् प्रमाणं' है जिस प्रकार इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी ने समूचे विश्व को जोड़ा और संभाला है। ऑनलाइन मीडिया की अन्तरक्रियाशीलता से लोगों की भागीदारी अब केवल कंज्यूमर तक सीमित न होकर कंटेंट प्रोड्यूसर की भी होने लगी है, हाल ही में एक कार्यक्रम में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, कुलपति प्रो. के जी सुरेश, को सुनने का अवसर प्राप्त हुआ जहां सिटीजन जर्नलिज्म के

सम्बन्ध में उन्होंने एक मुख्य बिंदु रखा कि 'क्या कभी अपने सिटीजन डॉक्टर या इंजीनियर देखे या सुने है ? तो ये सिटीजन पत्रकारिता कितना उचित विकल्प है? ये एक विचारणीय प्रश्न है सोशल मीडिया जैसे प्रचार के साधन का उपयोग करके आप एक अच्छे संचारक या इन्फ्लुएंसेर तो बन सकते है लेकिन इसका अर्थ ये नहीं की हर नागरिक स्वयं को पत्रकार समझने लगे। पत्रकारिता एक स्किल है, एक पेशा है जिसे सीखना समझना अत्यंत आवश्यक है'। ये सुन कर लगा, की वाकई लाइक, शेयर और कमेंट के अलावा विभिन्न न्यूज पोर्टल्स द्वारा 'सिटीजन जर्नलिज्म' को पुरजोर बढ़ावा मिल रहा है जिसका "IReport for CNN" एक प्रत्यक्ष उदहारण है, लेकिन कहीं न कहीं समाज –फेक और फैक्ट', 'लाइक्स और लाइज' के बीच ही झूल रहा है।

आज मोबाइल जिसे हर व्यक्ति कहीं ना कहीं उपयोग कर रहा है लेकिन क्या उन्हें संचारक कहा जाना चाहिए या पत्रकार ? ये सोचने का विषय है। नागरिक पत्रकारिता के लिए सोशल मीडिया के जहां असीमित लाभ है वहीँ उपयुक्त प्रशिक्षण के अभाव में बढ़ती हुई फेक न्यूज का बोलबाला भी है ऐसे में हर नागरिक को पत्रकार बनने से पहले पत्रकारिता के मूल्यों को समझना होगा, संविधान, हमारी न्याय व्यवस्था, कानून, न्यूज एथिक्स, न्यूज सेंस, फैक्ट और फेक की पहचान करना, साथ ही सेलेक्टिव एप्रोच से कैसे बचा जाएँ। एक आम नागरिक को नागरिक संचारक से पत्रकार बनने के लिए भाषा की शुद्धता और उसका स्तर, पत्रकारिता करते हुए किस प्रकार के विषयों का चयन किया जाए और उन्हें अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए वीडियो व ग्राफिक्स और छायाचित्रों के महत्व को भी समझाना होगा।

वर्तमान समय में तो किसी समाचार को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए पहले सोशल मीडिया के माध्यम से सामने लाया जाता है फिर मीडिया की मुख्य धारा से उसे जोड़ा जाता है। आज इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी ने तमाम मीडिया माध्यमों का अपनी ओर अभिसरण कर दिया है आखिर इंटरनेट के कारण अव्यवहारिक तत्व की सुविधा जो प्राप्त है 'फेसबुक लाइव' और 'पेरिस्कोप' इसके प्रबल उदाहरण है। एक वो दौर था जब भारत की स्वतंत्रता की नीव समाचार पत्रों ने तैयार की, निःसंदेह अभिव्यक्ति की आजादी की कीमत पत्रों और पत्रकारों को चुकानी पड़ी। जटिलता का मूल्यांकन इस बात से किया जा सकता है जब 1907 में 'उर्दू साप्ताहिक स्वराज' निकला तो केवल ढाई साल ही चला और उसके 75 अंक ही निकल पाए,और संपादक पद के विज्ञापन के लिए लिखा जाता था कि 'एक जौ की रोटी और एक प्याला पानी यह शरहे–तनख्वा है जिस पर स्वराज इलाहाबाद के वास्ते एक एडिटर मतलूब है। यह वह अखबार है जिसके दो एडिटर बगावत आमेज मजामीन विद्रोहात्मक लेखो की मुहब्बत में गिरफ्तार हो चुके है। तब तीसरा एडिटर मुहैय्या करने के लिए जो इश्तिहार दिया जाता है उसमे जो शरहे तनख्वा जाहिर की गई है कि ऐसा एडिटर दरकार है' इस विज्ञापन को 1909 को 'जू उन करनीन' ने अपने अंको में उद्धृत किया।

ऐसे अनेक किस्से– कहानियां इतिहास में दर्ज हैं जो ये दर्शाते हैं कि जटिल परिस्थितियां होने के बावजूद भी कलम से आजादी की लौ धधकती रही जो आगे चल कर आजाद भारत की इमारत पर नींव का पत्थर साबित हुई।

1907 में 'उर्दू साप्ताहिक स्वराज' निकला तो केवल ढाई साल ही चला और उसके 75 अंक ही निकल पाए, और संपादक पद के विज्ञापन के लिए लिखा जाता था की 'एक जौ की रोटी और एक प्याला पानी यह शरहे–तनख्वा है जिस पर स्वराज इलाहाबाद के वास्ते एक एडिटर मतलूब है।

वर्तमान समय में सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्म ने जहाँ एक ओर आम जनमानस को सशक्त और जागरूक बनाया है वही सिटीजन जर्नलिज्म जिसे सहयोगी मीडिया, सहभागी पत्रकारिता, लोकतांत्रिक पत्रकारिता, गुरिल्ला पत्रकारिता के रूप में भी जाना जाता है जिसमें आम नागरिक 'सूचना एकत्र करने, विश्लेषण और प्रसार करने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाता है'।

सोशल मीडिया द्वारा सम्प्रेक्षण की सुलभता और शीघ्रता के चलते वर्तमान समय में सूचना केवल एकत्र करके सीधा प्रसारण तक सीमित रह गया है। विश्लेषण और गुणवत्ता न के बराबर रह गई है जिसका परिणाम है की सोशल मीडिया पर फेक न्यूज, प्रोपेगेंडा, साइबर क्राइम, ट्रॉल्लिंग व् साइबर बुलिंग आम बात हो गई है जैसा की प्रोफेसर के जी सुरेश ने कहा कि, 'पत्रकारिता एक स्किल है जिसे सीखना और समझना बहुत जरूरी है', ताकि सोशल मीडिया जो समाज से जुड़ने का बेहतरीन विकल्प है उसका उचित उपयोग हो सके, साथ ही साथ वर्तमान स्थिति को देखते हुए सिटीजन जर्नलिज्म और सोशल मीडिया के मध्य एक गेटकीपर की भूमिका और पत्रकारिता का प्रशिक्षण अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है ताकि सोशल मीडिया एक साधन के रूप में और आम नागरिक सूचना का एकत्रण, विश्लेषण और प्रसारण द्वारा समाज में सकारात्मक भूमिका निभा सकें। ■

ISSN No. 2581-3528

भारत में प्रिंट मीडिया का महत्व एवं भविष्य

भारत में प्रिंट माध्यम की शुरूआत 15 वीं सदी के शुरूआत में हुई थी। इस दौरान विभिन्न आविष्कारों के जरिए हासिल नई तकनीक और प्रयोग ने मुद्रण माध्यम का सूरत और सिरत पूरी तरह से बदलकर रख दिया है। समाचार-पत्र कार्यालयों से तकनीक के आगमन के कारण कागज-कलम की विदाई हो चुकी है। अखबारों के लिए खबरों के लेखन से लेकर संपादन, पृष्ठ निर्माण, साज-सज्जा और छपाई तक में कंप्यूटर का बोलबाला है। इस दौर की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि इंटरनेट है।

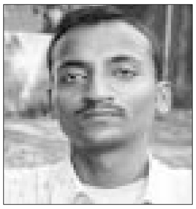

मोहित कुमार
छात्र,पत्रकारिता एवं जनसंचार संकाय
आईआईएमटी कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट ग्रेटर नोएडा

भारत में पत्रकारिता की शुरूआत किसी भारतीय द्वारा नहीं बल्कि अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई थी। पहली बार 1780 में अंग्रेजों ने कलकत्ता से समाचार–पत्र का प्रकाशन शुरू किया। उस समाचार पत्र का नाम बंगाल गजट था। पत्र का आकार काफी छोटा था। इसमें पृष्ठों की संख्या महज दो थी। बारह इंच लंबे और आठ इंच चौड़े जिस पत्र के जरिए भारत में मुद्रण माध्यम की आधारशिला रखी गई थी। उसकी शाखा आज वटवृक्ष के समान विशालकाय होते हुए अत्याधुनिक ले–आउट, डिजाइन विभिन्न साफ्टवेयरों, अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग और इंटरनेट तक जा पहुंचा है। लगभग 250 वर्षों के यात्रा काल में पूरी प्रिंट पत्रकारिता का स्वरूप बदल चुका है। समाचार पत्र दिनोंदिन खूबसूरत होते जा रहे हैं।

पत्रकारिता केवल एक प्रोफेशन या पेशा ही नहीं बल्कि जिंदगी की जीजिविषा है। पत्रकारिता करने के लिए जानना, सीखना और जूझना पड़ता है। हमारी दृष्टि हमेशा नई सीखने की होनी चाहिए। कोई पत्रकार जन्मजात नहीं होता बल्कि प्रशिक्षित होना पड़ता है। पत्रकारिता के लिए उन्होंने मूल्यबोध व भावबोध को आवश्यक बताया।

प्रिंट मीडिया का परिचय : प्राचीन काल से आधुनिक काल तक प्रिंट मीडिया की संप्रभुता बरकरार रही है। मानव जीवन का अहम हिस्सा अखबार को माना जाता है। दिन की शुरुआत चाय और दैनिक अखवार के साथ होती है। पत्रकारिता और मानव समाज के अगूढ़ रिश्ते को मद्देनजर रखते हुए लेखक ने लिखा कि, "खीचों न कमानों को न तलवार निकालों, जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालों" इस पंक्ति से समाज में प्रिंट मीडिया की महत्ता और स्पष्टता को दर्शाता है। दरअसल भारत में हिंदी का प्रथम अखबार 1826 में पंडित जुगल किशोर शुक्ल के द्वारा प्रकाशित किया गया । प्रिंट के प्रमुख पत्रकारों में गणेश शंकर विद्यार्थी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, अटल बिहारी बाजपेई, सुभाष चंद्र बोश जैसे अनेक नाम जुड़े हैं। आधुनिक दौर में प्रिंट का दायरा काफी प्रतिष्ठित हो गया है। इसके जरिए विज्ञापन सहित अभिन्न सूचनाओं का प्रकाशन हो रहा है। हिंदुस्तान, हरिभूमि, अमर–उजाला, जनसत्ता, दैनिक जागरण, नवभारत, भास्कर सहित कई बड़े–बड़े छापाखाने रोजमर्रा की खबरों को प्रकाशित कर रहे हैं। प्रिंट के लेखन में भाषाई और शब्दों की शुद्धता को लेकर काफी प्रबलता दिखती है।

प्रिंट मीडिया का इतिहास : प्रिंट मीडिया का इतिहास करीब 3000 वर्ष पुराना है। वैसे पत्रकारिता का जनक देवर्षि नारद को कहा जाता है। भारत समेत विश्वभर में क्रांतियों, आंदोलनों और अभियानों आदि में प्रिंट मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में पहला अखबार 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 'बंगाल गजट' के नाम से प्रकाशित किया था। इसके बाद तो भारत में संचार के क्षेत्र में क्रांति–सी आ गई। प्राचीन पत्रकारिता से आधुनिक पत्रकारिता में परिवर्तन काफी देखने को मिला है। प्राचीन पत्रकारिता में निस्वार्थ की राह का अवलोकन किया जाता था, लेकिन आधुनिक पत्रकारिता का सिरा व्यापार की श्रृंखला को बढ़ावा दे रहा है। एक दौर का किस्सा अबनीसिया के सम्राट पुर्तगाल और इंजिलवादियों का रहा है, जिन्होंने मुद्रण कला की शुरूआत गोवा और जर्मनी से किया था। वास्कोडिगामा के भारत आगमन के बाद प्रिंट का केंद्र गोवा में खोला गया था। प्रिंट मीडिया का दौर धार्मिक पुस्तकों और पत्रिकाओं के प्रकाशन से प्रारंभ हुआ है।

प्रिंट मीडिया का स्वरूप : पत्रकारिता वास्तव में साहित्य की भांति समाज में चलने वाली गतिविधियों एंव हलचलों का दर्पण है। समाज में जागरुकता के साथ प्रत्येक घटनाक्रम से जोड़ने में अहम भूमिका निभाती है। देश में अनंत कलाकृतियों और समसामयिक सूचनाओं को प्रकाशित करती है। इसी वजह से विद्वानों ने प्रिंट पत्रकारिता को लिखा गया इतिहास कहा है। आधुनिक दौर में प्रिंट दैनिक, सप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं के रूप में प्रकाशित हो रही है।

प्रिंट मीडिया का महत्व : प्रिंट मीडिया में भाषाई और शब्दांश की शुद्धता का विशेष ध्यान दिया जाता है। आज आम बोलचाल के शब्द प्रिंट मीडिया का हिस्सा बन गये है। प्रिंट मीडिया लोगों तक सूचनाएं पहुंचाने का प्रमुख माध्यम है। अखबार, मैगजीन, प्रिंट मीडिया के मुख्य प्रकार हैं। अखबार आज भी लोगो के लिए जानकारी का पहला साधन है। देश मे कुल 1 लाख से भी ज्यादा पब्लिकेशन हाउस हैं जिनमे कुल 24 करोड़ अखबार प्रिंट होते हैं जिन्हें पढ़ने वालों की संख्या कुल 40 करोड़ से भी ज्यादा है। अखबार या मैगजीन आपके पास कई दिनों या महीनों तक उपलब्ध रहती है। आप कभी भी पुरानी खबरों को आसानी से देख सकते हैं। ब्रॉडकास्ट मीडिया के मुकाबले अखबार में छपी खबरों पर लोगों को अधिक भरोसा होता है। बाजार के दृष्टिकोण से भी प्रिंट मीडिया ज्यादा प्रभावशाली साबित होता है।

पत्रकारिता का महत्व उसके कार्य और सिद्धातों से जुड़ा है। प्रिंट माध्यम के द्वारा प्रकाशित हर खबर को साध्य मानकर किया गया है। समाज में सजीवता, जागरण, नव स्फूर्ति, गतिमयता नव–संचार का प्रचार–प्रसार करना प्रमुख उद्देश्य रहा है। समाज में समता, बंधुता, शांति, अंहिसा आदि महान तत्वों की प्रतिस्थापना करना भी प्रिंट का मुख्य उद्देश्य रहा है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक–धार्मिक सांस्कृतिक आदि समसामायिक मुद्दों पर जटिलता से अवलोकन किया जाता था।

डिजिटल के दौर में प्रिंट मीडिया की चुनौतियां : केटीयूजेएम के नए कुलपति बलदेव भाई शर्मा ने कहा कि पत्रकारिता केवल एक प्रोफेशन या पेशा ही नहीं बल्कि जिंदगी की जीजिविषा है। पत्रकारिता करने के लिए जानना, सीखना और जूझना पड़ता है। हमारी दृष्टि हमेशा नई सीखने की होनी चाहिए। कोई पत्रकार जन्मजात नहीं होता बल्कि प्रशिक्षित होना पड़ता है। पत्रकारिता के लिए उन्होंने मूल्यबोध व भावबोध को आवश्यक बताया। प्रिंट मीडिया परंपरागत रूप से अब सीमित होता जा रहा है और लोगों का रूझान डिजिटल की ओर बढ़ रहा है। वर्तमान में बिना डिजिटल के कोई गुजारा नहीं हो सकता। लेकिन डिजिटल मीडिया में अब गंभीरता, विश्वसनीय, ईमानदारी जैसी चीज कम नजर आती है। अब अखबार के हिट देखे जाते हैं, उसी आधार पर उनका मूल्यांकन होता है। ग्लैमर, क्राइम, की चीजें लोगों को पसंद आ रही है। प्रिंट मीडिया का अस्तित्व कभी खत्म नहीं होगा। प्रिंट मीडिया अभी भी ताकतवर है बस डिजिटलीकरण को देखते हुए प्रिंट मीडिया के तौर तरीके भी बदल रहे हैं।

निष्कर्ष : भारत में प्रिंट माध्यम की शुरूआत 15 वीं सदी के शुरूआत में हुई थी। इस दौरान विभिन्न आविष्कारों के जरिए हासिल नई तकनीक और प्रयोग ने मुद्रण माध्यम का सूरत और सिरत पूरी तरह से बदलकर रख दिया है। समाचार–पत्र कार्यालयों से तकनीक के आगमन के कारण कागज–कलम की विदाई हो चुकी है। अखबारों के लिए खबरों के लेखन से लेकर संपादन, पृष्ठ निर्माण, साज–सज्जा और छपाई तक में कंप्यूटर का बोलबाला है। इस दौर की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि इंटरनेट है। इसने दूरदराज के शहरों और ग्रामीण अंचलों से कभी तार द्वारा भेजी जाने वाली खबरें अब फैक्स और मोडेम के जरिए भेजी जा रही है। अखबारों का आनलाइन संस्करण पाठको को खूब भा रहा है। प्रिंट मीडिया के बदलते कलेवर और नई तकनीक के समागम ने प्रिट मीडिया को नई दिशा देने का काम किया है। ■

ISSN No. 2581-3528

एक तीर एक कमान
(15 नवम्बर बिरसा मुण्डा जयन्ती पर विशेष)

नरेन्द्र सिंह भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

संसार की कुल आदिवासी जनसंख्या के लगभग एक तिहाई जनजातीय समुदायों के लोग भारत में बसते हैं। हमारी पृथ्वी पर 37 करोड़ आदिवासी बचे हैं। संसार के लगभग 13 करोड़ आदिवासियों से उनकी मान्यताएं उनका धर्म छीना जा चुका है। इसके बदले इन्हें इस्लाम की कट्टरता तो कहीं ईसाईयत की छद्म पहिचान थमायी जा चुकी है।

भारत ऐसा देश है जहां के 12 करोड़ से अधिक आदिवासियों की 7000 जनजातियां वनों, दुर्गम पर्वतों, समुद्र तटीय क्षेत्रों द्वीपों अथवा बीहड़ क्षेत्रों में रहती आ रही हैं। इनको ईसाई बनाने के लिए विभिन्न मिशनरी संगठन हजारों करोड़ डॉलर की धनराशि निवेश करते हुए होड़ मचाये हुए हैं। ऐसी होड़ में मिशनरी संगठन सारी मर्यादाएं तोड़ते जा रहे हैं। यह बात अब अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी आदि देशों के बुद्धिमान भी कहने लगे हैं। मिशनरियों ने जन जातीय समुदायों के प्रति अपमान जनक व्यवहार नहीं बदला तो भारत में उनकी प्रासंगिकता निर्मूल होने लगेगी। यह बात अमेरिका के फिलिप गोल्डबर्ग ने कही है। जो एक बड़े लेखक और सामाजिक सरोकारों के सजग कार्यकर्ता हैं। ऐसे ही विचार जोन्स वर्ड, ली मेथम और क्रियर्सन डग के हैं।

भारत के अनेक राज्यों में मिशनरियों के उत्पात और अत्याचारों से इन संगठनों के विरुद्ध आक्रोश बढ़ता जा रहा है। इसी आक्रोश से भारत में एक नारा प्रबल हुआ है– एक तीर एक कमान। सभी आदिवासी एक समान। यह नारा सबसे पहले बिरसा मुण्डा ने दिया था। जिनका जन्म 15 नवम्बर 1875 को वर्तमान झारखण्ड के एक गाँव में हुआ था। बिरसा मुण्डा को जीवन के केवल 25 वर्ष मिल सके।

ब्रिटिश राज में अंग्रेजों की सेना के विरुद्ध उन्होंने अपने धर्म और संस्कृति को बचाने के लिए घनघोर संघर्ष किया। तीर कमानधारी हजारों आदिवासियों ने उनके आह्वान पर गोरी सेना को तीरों से छलनी कर डाला था।

अंग्रेजों ने बड़ी संख्या में सेना बुलाकर आदिवासियों के रक्त से भारत के अनेक वनों, पर्वतों की धरती और नदियों का जल लाल कर डाला था। बिरसा ने 15 वर्ष की वय से लगभग 10 वर्ष संगठन करते हुए विकट संघर्ष किया। इतनी अल्पायु में उनके संघर्ष की अनुपम गाथा को भारतीय इतिहास में स्थान नहीं दिया गया।

प्रायः सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैले आदिवासी समुदाय के लोग अब 15 नवम्बर को उनका जन्मदिन मनाने लगे हैं। बहुसंख्य जनजातीय समुदाय उन्हें अपना भगवान मानकर पूजते हैं। बिरसा मुण्डा को अंग्रेजों ने कारागार में बन्द करके विष देकर मारा था। उनकी अन्तिम सांस 09 जून 1900 को 25 वर्ष की आयु में तोड़ दी गयी थी। उनकी जयन्ती पर भारत के समस्त आदिवासी, वनवासी, जनजातीय समुदायों की एकजुटता देखकर संसार के बुद्धिजीवी हतप्रभ हो रहे हैं। बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह आदिवासी जनजातीय समुदायों के बीच मान्यता मिलने से ईसाई मिशनरियों और इस्लाम के प्रचारकों में भी खलबली है। धन बल के साथ अन्तरराष्ट्रीय दबावों की धमक के रहते जो संगठन अब तक निरंकुशता अनुभव कर रहे थे उनकी चैन की निद्रा बिरसा मुण्डा का अवतारी स्वरूप उभरता देखकर टूट रही है। वैसे संसार में 09 अक्टूबर को आदिवासी दिवस मनाने की परम्परा 1994 से प्रारम्भ की गयी थी। पर संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से करायी गयी यह पहल बहुत सीमित होकर रह गयी है। उसके उलट बिरसा मुण्डा के क्रान्तिकारी स्वरूप और अवतारी स्वरूप को भारत ही नहीं संसार के कई देशों के आदिवासी संगठन मान्य करने लगे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आदिवासी दिवस उन देशों की पहल है जहां आदिवासी समुदायों की पहिचान को सभ्यता की बाहों में समेटने के नाम पर मिटा दिया गया। कुछ देशों में उनको और संकुचित होकर रहने के लिए विवश कर दिया गया। आदिवासी समुदायों के प्रति छल और बल का प्रयोग कर उनका बड़े पैमाने पर मतान्तरण किया जाता रहा है। वर्तमान समय के बढ़ते आक्रोश की मुख्य जड़ यही मतान्तरण की नीति है। संसार के शीर्ष ईसाई रिलीजियस संगठन बेटिकन की सोच में बदलाव लाने में यह बयार कितना प्रभाव डाल पाती है यह कह पाना अभी कठिन है। तो भी बिरसा मुण्डा का बलिदान सवा सौ साल बाद अपना गहरा रंग दिखाने लगा है। आदिवासी समुदाय जिस तरह बिरसा को परम पूज्य भगवान कहने लगे हैं उससे संसार में मतान्तरण कर देशों की सत्ता में उलट पुलट कराने वाली शक्तियां चकित हैं।

भारत में 700 से कुछ अधिक आदिवासी या जनजातीय समुदाय

हैं। यह सभी भगवान श्रीराम के काल से आर्य अर्थात् हिन्दू मान्यताओं से जुड़ाव अनुभव करते आये हैं। इनकी मान्यताएं बदलवाने में अंग्रेजों को दासता के कालखण्ड में जब सैन्य बल से सफलता नहीं मिली तो इस काम को मिशनरियों के हवाले कर दिया गया। चिकित्सा, सेवा, प्रलोभन और छल के बूते आदिवासियों का मतान्तरण करते हुए मिशनरियों ने बड़े कीर्तिमान बनाये हैं। सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारत अरुणाचल, मेघालय, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम और असम में मिशनरियों ने निद्वंद्वता की स्थिति पाकर जनजातीय आदिवासी समुदायों को ईसाईयत की चाशनी में खूब पागा । इसी तरह झारखण्ड, ओडीसा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश में मिशनरियों को अब तक किसी बड़ी बाधा का सामना नहीं करना पड़ा। इसका प्रभाव सीमावर्ती, समुद्र तटीय राज्यों के व्यापक क्षेत्र में दिखायी देता है। भारत की सीमा से अलग होने के उद्देश्य से किये जाने वाले उन्मादी प्रयासों से सभी परिचित हैं।

कई राज्यों में उत्पात कराकर अलग ईसाई सत्ता की स्थापना के लिए दबाव तक बनाया जाता रहा है। पूर्वोत्तर राज्यों में भारतीय सेना को वापस करने के अपमानजनक नारे गढ़े जाते रहे हैं। मिशनरी संगठनों के उकसावे पर अलगाव के सारे प्रयत्न होते आये हैं। राजीव गाँधी तो प्रधानमन्त्री रहते कुछ राज्यों को ईसाई राज्य घोषित करने को सहमत हो गये थे। तब संविधान वेत्ताओं ने उनको ऐसा करने से मना किया था।

भारत में ईसाई मिशनरी संगठनों को स्वतन्त्रता के बाद बनी सरकारों ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से छूट और सुविधाएँ देकर उनके काम को आसान बनाया। जिसके कारण इस अवधि में अकेले डेढ़ करोड़ से अधिक ऐसे आदिवासियों को ईसाई बना डाला गया जो हजारों वर्षों से अपनी संस्कृति और धर्म को हृदय से लगाये हुए थे। एक ओर अनेक देशों का धन बल, बाहुबल तो दूसरी ओर केवल जन जातीय समुदायों की धार्मिक आस्था के प्रति दृढ़ता, इसके अतिरिक्त कोई आश्रय नहीं था। ऐसे में बिरसा मुण्डा की प्रतिज्ञा ने इन्हें अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए बलिदान तक डटे रहने की प्रेरणा दी है। यही प्रेरणा अब भारत के 12 करोड़ आदिवासियों को उनकी संस्कृति से और प्रगाढ़ता से जोड़ रही है।

जनजातीय समुदायों के जो लोग मतान्तरित किये जाते रहे वे हिन्दू धर्म के साथ अपने देवताओं, मान्यताओं के छिन जाने से एक विशेष राजनीतिक दल से जुड़कर रहने को बाध्य हो गये। यही हेतु था जिसके कारण स्वतन्त्रता के बाद की एक दल विशेष की सरकारों ने मिशनरियों को पूरी निरंकुशता के साथ धर्मान्तरण या मतान्तरण का अवसर दिया। आदिवासियों के अतिरिक्त देश के निर्बल वर्ग के हिन्दुओं को ईसाई बनाने में मिशनरी संगठनों, इस्लामिक गुटों को बड़ी सफलता मिलती रही है। मिशनरी संगठनों को अमेरिका सहित संसार के बड़े और आर्थिक तथा सैन्य शक्ति सुसज्जित समृद्ध देशों का खुला सहयोग मिलता रहा है। भारत में ऐसा ही बल उन इस्लामिक संस्थाओं को सदा से मिलता आ रहा है जो कई अरब देशों के दान से पल रही हैं। भारत को आर्य अर्थात् हिन्दू संस्कृति प्रधान राष्ट्र के स्थान पर बहु धार्मिकता वाले देश में बदलने में बौद्ध, इस्लाम और ईसाईयत की आँधी को व्यापक सफलता मिली है। सारे संसार में आदिवासियों को कथित रूप से सभ्य बनाने का मूल्य अपना धर्म बदल कर चुकाना पड़ता है। भारत में इस समय 03 करोड़ से अधिक घोषित ईसाई हैं। जबकि ढाई से तीन करोड़ क्रिप्टो अर्थात् छद्म ईसाई हैं। जो अपना बदला हुआ ईसाई नाम छिपाये रखते हैं। उनको ऐसा करने के लिए मिशनरियां कहती हैं जिससे कि उन्हें जनजातीय पहिचान से मिलने वाली सुविधाओं से वंचित न होना पड़े। भारत के आदिवासी समुदायों की ओर से अब कई राज्यों में माँग की जा रही है कि भारत के उन 01.50 करोड लोगों को जनजातीय समुदायों को मिलने वाली सुविधाओं से विलग किया जाय जो ईसाई बन कर आदिवासी होने की मान्यता खो चुके हैं। यह माँग केन्द्र और विभिन्न राज्य सरकारों ने मान ली तो मिशनरियों की मतान्तरण कराने की राह और कठिन हो जाएगी।

भारत में मिशनरियों द्वारा जनजातीय समुदायों को ईसाई बनाने के लिए कैसे–कैसे अन्याय पूर्ण कृत्य किये जाते हैं। इस पर अमेरिकी लेखक फिलिप गोल्डबर्ग ने अनेक खुलासे किये हैं। जो आदिवासी परिवार ईसाईयत नहीं अपनाता उसके लिए भोजन जुटाना, कुओं या नलों से पानी लेना, वनों से लकड़ियाँ बीनना तक दूभर कर दिया जाता है। इतना ही नहीं उनका सामाजिक बहिष्कार कर हर तरह से अपमान के घूँट पिलाकर जीवन कठिन बना दिया जाता है। चिकित्सा शिक्षा के साथ सुविधाओं के झूठे आश्वासनों से ईसाई बनाने के अनेक उदाहरण फिलिप ने अपनी पुस्तक में दिये हैं। यहां तक कहा है कि दीन धर्म स्वाभिमान और चरित्र चाल चेहरा सब बदलने के लिए जनजातियों के लोगों को मिशनरियां विवश कर देती हैं। इनके अत्याचारों के विरुद्ध अब संगठित होकर संघर्ष करना ही इन समुदायों के लिए एक रास्ता बचा है। यह रास्ता बिरसा मुण्डा ने 1900 में अपने जीवन का बलिदान देकर दिखाया था। उनका नारा था – एक तीर एक कमान। सभी आदिवासी एक समान ।। इस नारे को अब भारत के विभिन्न राज्यों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर से प्रेरित जनजातीय आदिवासी समुदायों के बीच काम करने वाले वनवासी कल्याण आश्रम संगठन से सम्बद्ध विभिन्न सेवा संस्थाओं की ओर से पूरी शक्ति दी जा रही है। वनवासी कल्याण आश्रम ने अपने संगठन की सुविधा के लिए देश को 40 इकाईयों में विभक्त किया है।

हर इकाई में सेवाव्रती पूर्णकालिक कार्यकर्ता लगे हैं। इनकी संख्या हजारों में है। स्वेच्छा से जीवन भर अथवा कुछ वर्षों की सेवा के लिए अपने को अर्पित करना बड़ी बात है। ऐसे सेवाव्रती मिशनरियों और इस्लामिक संगठनों की चुनौती से लड़ने में आदिवासियों की सहायता कर रहे हैं। बिरसा मुण्डा के जन्म के 146 वर्ष बीत गये हैं। उनका बलिदान 1900 में हुआ था। इतने वर्षों बाद उनकी अवतारी छवि ने संसार में बड़ी पहिचान बनायी है। भले ही इस महानायक को जीवन के 25वें वर्ष में अंग्रेजो ने छल से विष देकर मार दिया था। किन्तु जनजातीय आदिवासी, पर्वतों, दुर्गम क्षेत्रों में दुरूह जीवन जी रहे समुदायों ने बिरसा मुण्डा को अपनी अन्तर आत्मा के आसन पर विराजमान रखा। उन्हीं का दिव्य प्रकाश अब अधर्मियों को भयभीत कर रहा है। प्रारम्भ में बिरसा मुण्डा के बारे में विरोधी कहते रहे कि वह सभी आदिवासियों के भगवान नहीं कहे जा सकते क्योंकि उनका जातीय समूह मुण्डा था। पर उनके प्रति श्रद्धा रखने वालों ने इसे हास्यास्पद बताया है बिरसा का जीवन आदिवासी समुदायों की वीरता और आदर्शों के प्रति दृढ़ता को दर्शाता है। उनकी वीर गाथा आदिवासी समुदाय में गायी जाती है। ■

ISSN No. 2581-3528

ऐतिहासिक धरोहरों का केन्द्र है हस्तिनापुर

कण-कण में विद्यमान है 'महाभारत कालीन इतिहास'

प्रतीक खरे
युवा पत्रकार

हमारा देश अपने इतिहास और संस्कृति के लिए जाना जाता है। जहां एक ओर हमारा गौरवशाली इतिहास है वहीं दूसरी ओर सबसे पुरानी हमारी गौरवान्वित कर देने वाली संस्कृति। इतिहास से हमने बहुत कुछ सीखा है। क्योंकि हमें हमारी संस्कृति तो विरासत में मिली लेकिन इतिहास हमने खुद लिखा है। यहीं कारण है कि आज भी अखंड भारत का हर भू–भाग अपने आप में इतिहास को समेटे हुए है। इसीलिए हस्तिनापुर भी इस से अछूता नहीं है। यह नगर अपने इतिहास के लिए आज भी जाना जाता है। उत्तर प्रदेश में मेरठ जिले के नजदीक स्थित हस्तिनापुर शहर मां गंगा नदी के तट पर बसा हुआ है। इतिहास की बात करें तो हस्तिनापुर महाभारत काल में कौरवों की राजधानी हुआ करती थी। जिसके अवशेष आज भी इस ऐतिहासिक नगरी में मिलते है। यहां स्थित मंदिर हो या भवन हर एक वस्तु ऐतिहासिक है और अपने आप में इतिहास को समेटे हुए है। चाहे वह हस्तिनापुर में स्थित पाण्डव मंदिर ही क्यों न हो।

हिन्दू धर्म के साथ हस्तिनापुर जैन धर्म के लोगों के लिए भी एक पवित्र स्थल है। यहां कई पवित्र मंदिर जिनमें से पाण्डवेश्वर मंदिर, करण मंदिर और कमल मंदिर शामिल है। वहीं जैन समुदायों के लिए इस शहर में दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, जैन जम्बूद्वीप मंदिर और श्री श्वेताम्बर जैन मंदिर स्थित हैं। मंदिरों के अलावा, यहां अन्य रोचक जगह भी है जिनमें कैलाश पर्वत, अष्टपद और हस्तिनापुर वन्यजीव अभयारण्य शामिल है, जिसे 1986 में स्थापित किया गया था।

इसके साथ–साथ जैन धर्म के 24 तीर्थांकरों में से 16 (शांतिनाथ), 17 (कुंथुनाथ) और 18 (अरनाथ जी), वें तीर्थांकर का जन्म यहीं हुआ था। यहीं कारण है कि यह स्थान हिन्दूओं के साथ–साथ जैनियों के लिए भी प्रमुख स्थान है।

पाण्डव मंदिर परिसर में हरिद्वार से पधारे महात्मा श्री अमृत गिरी जी महाराज बताते हैं कि सम्राट भरत के समय में पुरुवंशी वृहक्षत्र के पुत्र राजा हस्तिन् हुए जिन्होंने अपनी राजधानी इसी हस्तिनापुर को बनाई थी। हस्तिनापुर से पहले उनके राज्य की राजधानी खांडवप्रस्थ हुआ करती थी। पुराणों के अनुसार जब गंगा की बाढ़ के कारण यह राजधानी भी नष्ट हो गई तब पाण्डव हस्तिनापुर को भी छोड़कर कौशाम्बी चले गए थे।

श्रीअमृत गिरी जी महाराज बताते है कि हस्तिन् के पश्चात् अजामीढ़, दक्ष, संवरण और कुरु हस्तिनापुर में राज्य करते रहे। इसी वंश में ही आगे चलकर राजा शांतनु भी हुए। शांतनु के पौत्र पांडु तथा धृतराष्ट्र हुए। राजा पांडु के पुत्र पांडव और धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव कहलाए। इनके बीच हुआ धर्म युद्ध महाभारत के नाम से भी जाना जाता है।

पुरातत्विक इतिहास की बात करें तो उत्खनन से ज्ञात होता है कि हस्तिनापुर की प्राचीन बस्ती लगभग 1000 ईसा पूर्व से पहले की थी और यह कई सदियों तक स्थित रही। दूसरी बस्ती लगभग 90 ईसा पूर्व में बसाई गई थी, जो 300 ईसा पूर्व तक रही। तीसरी बस्ती 200 ई. पू. से लगभग 200 ईस्वी तक विद्धमान थी और अंतिम बस्ती 11वीं से 14वीं शती तक विद्यमान रही। वहां पांडवों का विशालकाय एक किला भी है। इस किले के अंदर ही महल, मंदिर और अन्य इमारते हैं।

पाण्डवेश्वर मंदिर का है अपना इतिहास : महाभारतकालीन नगरी हस्तिनापुर के पांडव वन ब्लाक स्थित प्राचीन पाण्डवेश्वर मंदिर क्षेत्र के साथ–साथ दूर दराज के लोगों की भी आस्था का केंद्र है। महाभारतकाल से जुड़ा होने के कारण इसकी मान्यता और भी ज्यादा है। मंदिर में स्थित प्राकृतिक शिवलिंग की स्थापना पांडवों ने की थी।

अमृत गिरी जी महाराज बताते है कि पांडेश्वर मंदिर का इतिहास पांच हजार वर्षो से अधिक पुराना माना जाता है। हिंदू धर्म के ग्रंथों आदि में भी इस मंदिर का उल्लेख मिलता है। महाभारतकाल में पांडू पुत्र युधिष्ठर ने धर्म युद्ध से पहले यहां पर शिवलिंग की स्थापना कर बाबा भोलेनाथ से युद्ध में विजय होने का आशीर्वाद लिया था। इसी मंदिर में पांडव द्रोपदी संग पूजा अर्चना करने आते थे। पांडवों के पूजा करने से ही इस मंदिर का नाम पाण्डवेश्वर मंदिर पड़ गया। जब युधिष्ठर द्रोपदी के साथ यहां भोलेनाथ की पूजा करते थे तो उनके चारों भाई मंदिर के चारों गुंबदों पर शिव आराधना करते थे।

अमृत गिरी जी महाराज के अनुसार, मान्यता है कि जो शिवभक्त सावन मास के महीने में प्रतिदिन पांडेश्वर मंदिर में स्थित शिवलिंग पर पंचामृत दुग्ध, घी, दही, शहद, गंगाजल से स्नान कराने के बाद पूजा–अर्चना करता है उसे मनवांछित फल प्राप्त होता है।

इतिहास को समेटे हुए है वट वृक्ष और पांडव कुआं : मंदिर परिसर में स्थित सैकड़ों वर्ष पुराना वट वृक्ष व शीतल जल का कुआं आज भी शिवभक्तों को अपनी ओर आकर्षित करता है। दूर–दराज से लोग इसके दर्शन करने आते है। मंदिर परिसर के पास फूलों की दुकान लगाने वाले अमित बताते है कि ऐसी मानता है कि इस कुआं के पानी से पांडव व द्रौपदी स्नान करते थे। इस कुएं को लोग अमृत कुएं के नाम से भी जानते हैं। पहले यह कुआं ऐसा नहीं था, इस कुआं का जीर्णोद्वार कराया गया है, इसका निचला हिस्सा लाखौरी ईंटों से बना है। मान्यता है कि इस कुआं के पानी में नहाने से चर्मरोग, दाद, खुजली जैसी कई बीमारियां दूर हो जाती हैं।

मन्दिर परिसर में लगे वट वृक्ष के बारे में बताते हुए एक अन्य संत कृष्णा संजय जी महाराज ने बताया कि इस वट वृक्ष को भीम ने लगाया था। यह वृक्ष आज से लगभग 5 हजार वर्ष पुराना है। मान्यता है कि इस वट वृक्ष की पूजा करने से लोगों की मनोकामना पूर्ण होती है।

राजा नैन सिंह ने करवाया था मंदिर का जीर्णोद्वार : अमृत गिरी जी महाराज बताते है कि महाभारतकालीन इस मंदिर का जीर्णोद्वार बहसूमा किला परीक्षितगढ़ के राजा नैन सिंह ने 1798 में कराया था। मंदिर में लगी पांच पांडवों की मूर्ति महाभारतकालीन है। इसका अंदाजा उनकी कलाकृति से लगता है। यहां स्थित शिवलिंग भी प्राकृतिक है। अगर हम यह कहे कि ऐतिहासिक धरोहरों का आज भी हस्तिनापुर केन्द्र है, तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि नगर में महाभारत कालीन इतिहास आज भी विद्यमान है।

प्रेरणा संस्थान ने कराया कम्प्यूटर प्रशिक्षण पा रहे विद्यार्थियों को हस्तिनापुर भ्रमण

हस्तिनापुर भ्रमण में आए प्रेरणा शोध संस्थान न्यास (नोएडा) के तहत संचालित प्रेरणा कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र के विद्यार्थियों ने भी अपने अनुभव साझा किए। छात्रा रानी, श्रेया, सोनी और शीतल ने बताया कि महाभारतकालीन नगरी हस्तिनापुर के पांडव वन ब्लाक स्थित प्राचीन पाण्डवेश्वर मंदिर क्षेत्र हमें काफी रोचक लगा। जिसके बारे में हम अपनी किताबों में पढ़ते और सुनते थे आज उस स्थान का हम भ्रमण कर रहें है।

वहीं छात्र रतन, विवेक और अभिषेक ने बताया कि हमें महाभारत कालखण्ड के इतिहास को काफी नजदीक से जानने व समझने का अवसर मिला है। इस दौरान हमनें हिन्दू धर्म के साथ–साथ जैन धर्म के प्रमुख स्थलों का भ्रमण किया। जिसमें पाण्डवेश्वर मंदिर, करण मंदिर और कमल मंदिर शामिल है। वहीं जैन मन्दिरों में दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, जैन जम्बूद्वीप मंदिर और श्री श्वेताम्बर जैन मंदिर का भी भ्रमण किया। मंदिरों के अलावा, यहां अन्य रोचक जगह जिनमें कैलाश पर्वत, अष्टपद और हस्तिनापुर वन्यजीव अभयारण्य का भी हमनें लुफ्त उठाया।

विद्यार्थियों ने कहा कि हम अपने आप को बहुत ही भाग्यशाली मानते है कि हमें प्रेरणा कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र में निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण लेने का अवसर मिला। जिसके कारण आज हमें हस्तिनापुर भ्रमण का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह यात्रा हमारी जीवन की ऐतिहासिक यात्रा में से एक रही। क्योंकि इस यात्रा में सिर्फ इतिहास को जाना ही नहीं बल्कि हमने इतिहास को जिया है।

ISSN No. 2581-3528

ऋतु अनुसार आयुर्वेद के घरेलू नुस्खे

डॉ. सुनेत्री सिंह
आयुर्वेदाचार्या (BAMS, MD)

हेमंत शीतकालीन ऋतु है। इसका समयकाल आमतौर पर नवम्बर से दिसम्बर तक माना जाता है, लेकिन हाल के वर्षों में मौसम में हो रहे लगातार बदलाव से इसके लक्षण कुछ देर से देखे जा रहे हैं। भारतीय महीनों के हिसाब से इसका समय मार्गशीर्ष से पौष तक का होता है। इसमें ठिठुरा देने वाली ठंड होती है। वैसे, माना जाता है कि यह देवताओ की प्रिय ऋतु है। यहीं कारण है की इसे वर्ष का आभूषण भी कहा जाता है। जब यह चरम पर होती है तो सूर्य की किरणों का स्पर्श भी प्रिय लगने लगता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से इसे सबसे बेहतर समय माना गया है।

इस ऋतु में चन्द्रमा की शक्ति सूर्य की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होती है। इसलिए इस ऋतु में औषधियाँ, वृक्ष, पृथ्वी की पौष्टिकता में भरपूर वृद्धि होती है व जीव जन्तु भी पुष्ट होते हैं। इस ऋतु में प्रकृति भी शरीर व स्वास्थ्य की स्थिति को सुधारने में सहायता करती है। इस समय शरीर में कफ का संचय होता है तथा पित्तदोष का नाश होता है।

शीत ऋतु में स्वाभाविक रूप से जठराग्नि तीव्र रहती है, अतः पाचन शक्ति प्रबल रहती है। ऐसा इसलिए होता है कि हमारे शरीर की त्वचा पर ठंडी हवा और ठंडे वातावरण का प्रभाव बारंबार पड़ते रहने से शरीर के अंदर की उष्णता बाहर नहीं निकल पाती और अंदर ही अंदर एकत्र होकर जठराग्नि को प्रबल करती है। अतः इस समय लिया गया पौष्टिक और बलवर्धक आहार वर्षभर शरीर को तेज, बल और पुष्टि प्रदान करता है।

हेमंत ऋतु में खारा तथा मधुर रसप्रधान आहार लेना चाहिए। पचने में भारी, पौष्टिकता से भरपूर, गर्म व स्निग्ध प्रकृति के घी से बने पदार्थों का यथायोग्य सेवन करना चाहिए।

वर्षभर शरीर की स्वास्थ्य–रक्षा हेतु शक्ति का भंडार एकत्रित करने के लिए उड़दपाक, सालमपाक, सोंठपाक जैसे वाजीकारक पदार्थों अथवा च्यवनप्राश आदि का उपयोग करना चाहिए। इसके अलावा दशमूलारिष्ट, लोहासव, अश्वगंधारिष्ट अथवा अश्वगंधा वलेह जैसी देशी व आयुर्वेदिक औषधियों का भी सेवन किया जा सकता है। बच्चों को कुमार कल्याणरस का सेवन करना चाहिए। मौसमी फल व शाक, दूध, रबड़ी, घी, मक्खन, मट्ठा, शहद, उड़द, खजूर, तिल, खोपरा, मेथी, पीपर, सूखा मेवा तथा चरबी बढ़ाने वाले अन्य पौष्टिक पदार्थ इस ऋतु में सेवन योग्य माने जाते हैं। हरी पत्तीदार सब्जियों को तेल में बनाना अच्छा रहता है। अंगार पर भुना बैंगन जिसे फिर तेल में पकाया गया हो, उष्णता के लिए अच्छा रहता है। कच्ची पतली मूली को तेल में बना कर खाना चाहिए। बाजरे की खिचड़ी भरपूर घी और गुड़ के साथ सेवन करना चाहिए। पीने में उष्ण जल का प्रयोग करें। प्रातः सेवन हेतु रात को भिगोये हुए कच्चे चने (खूब चबा–चबाकर खाये), मूँगफली, गुड़, गाजर, केला, शकरकंद, सिंघाड़ा, आँवला आदि कम खर्च में सेवन किये जाने वाले पौष्टिक पदार्थ हैं।

मूँगफली की फसल इन्हीं दिनों आती है, अतः नई मूँगफली उपलब्ध होती है। नई मूँगफली में दूधिया मीठापन होती है। इसमें दूध जैसा उंचे दर्जे का प्रोटीन, शुद्ध घी जैसी चिकनाई और अंडे जैसी उष्मा होते हुए भी अपेक्षाकृत यह शीघ्र पच जाती है। जो लोग शरीर को मोटा–तगड़ा और मजबूत बनाने के लिए अंडे–मांस का सेवन कर नाना प्रकार की व्याधियों को गले लगाते हैं, उन्हें मूँगफली का सेवन करना चाहिए। रात को सोते समय दूध अवश्य पीना चाहिए। यदि दूध न मिले, रात को सोते समय 25–25 ग्राम देसी चने व गुड़ खूब चबा–चबा कर खाएं और मुंह साफ कर सो जाएं।

इस ऋतु में बर्फ अथवा फ्रिज का पानी, रूखे–सूखे, कसैले, तीखे तथा कड़वे रसप्रधान द्रव्यों, वातकारक और बासी पदार्थ, एवं जो पदार्थ आपकी प्रकृति के अनुकूल नहीं हों, उनका सेवन न करें। शीत प्रकृति के पदार्थों का अति सेवन न करें। हलका भोजन भी निषिद्ध है।

इन दिनों में खटाई का अधिक प्रयोग न करें, ताकि कफ का प्रकोप और खाँसी, दमा, नजला, जुकाम जैसी व्याधियाँ न हों। ताजा दही, छाछ, नींबू आदि का सेवन कर सकते हैं। भूख को मारना या समय पर भोजन न करना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है क्योंकि शीतकाल में अग्नि के प्रबल होने पर पौष्टिक और भारी आहाररूपी ईंधन नहीं मिलने पर यह बढ़ी हुई अग्नि शरीर में उत्पन्न धातु (रस) को जलाने लगती है और वात कुपित होने लगता है। अतः उपवास भी अधिक नहीं करने चाहिए।

प्रतिदिन प्रातःकाल दौड़ लगाना, शुद्ध वायुसेवन हेतु भ्रमण, शरीर की तेलमालिश, व्यायाम, कसरत व योगासन करने चाहिए। शरीर की चंपी करवाना एवं यदि कुश्ती अथवा अन्य कसरतें करना लाभप्रद है। तेल मालिश के बाद शरीर पर उबटन लगाकर स्नान करना हितकारी होता है। तेल मालिश से शरीर में कफ और वात का शमन होता है, जिससे जोड़ों का दर्द, गैस की समस्या और कफजन्य विकार नहीं होते। उसके बाद शरीर का पसीना सुखा कर ठंडे या गुनगुने गर्म जल से स्नान करके मोटे तौलिये से शरीर को खूब रगड़कर पोंछना चाहिए। त्वचा की रूक्षता दूर करने के लिए मलाई या शहद को नींबू के रस में मिलाकर लगाएं।

प्रातःकाल सूर्य की किरणों का सेवन करें। पैर ठंडे न हों, इस हेतु जूते पहनें। बिस्तर, कुर्सी अथवा बैठने के स्थान पर कम्बल, चटाई, प्लास्टिक अथवा टाट की बोरी बिछाकर ही बैठें। सूती कपड़े पर न बैठें। कमरे एवं शरीर को थोड़ा गर्म रखें। सूती, मोटे तथा ऊनी वस्त्र इस मौसम में लाभकारी होते हैं। ठंडी हवा से बचें। स्कूटर, मोटरसाइकिल जैसे खुले वाहनों की बजाय बस, रेल, कार–जैसे वाहनों से ही सफर करने का प्रयास करें।

हेमंत ऋतु में बड़ी हरड़ का चूर्ण और सोंठ का चूर्ण समभाग मिलाकर प्रातः सूर्योदय के समय अवश्य पानी में घोलकर पी जायें। दोनों मिलाकर 5 ग्राम लेना पर्याप्त है। इसे पानी में घोलकर पी जायें। यह उत्तम रसायन है। लहसुन की 3–4 कलियाँ या तो ऐसे ही निगल जाया करें या चबाकर खा लें या दूध में उबालकर खा लिया करें। गरिष्ठ खाद्य पदार्थों के सेवन से पहले अदरक के टुकड़ों पर नमक व नींबू का रस डालकर खाने से जठराग्नि अधिक प्रबल होती है। ■

ISSN No. 2581-3528

19 दिसम्बरः बलिदान दिवस पर विशेष

काकोरी के क्रांति नायक - पंडित राम प्रसाद बिस्मिल

मृत्युंजय दीक्षित

आधुनिक भारत के इतिहासकारां ने भारत की आजादी की लड़ाई को बहुत ही संकुचित व भेदभाव से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया और जिसके कारण भारत का बहुत सा इतिहास जनमानस के बीच आ नहीं सका है लेकिन अमृत महोत्सव के माध्यम से हमें अवसर मिला है कि हम सभी अपने भूले बिसरे महापुरूषों को याद करें ,उन्हें नमन करें और उनका सही इतिहास जनमानस के बीच जाये।

स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई को भी एक सीमित दायरे में दिखाया गया लेकिन इस लड़ाई में केवल कुछ लोग ही शामिल नहीं थे अपितु पूरा समाज आजादी का मतवाला हो गया था। इसी कड़ी में 19 दिसम्बर का दिन भी इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाता है। इस दिन अंग्रेजों की जड़े हिला देने वाले काकोरी कांड के वीर नायकों को अंग्रेज सरकार ने फांसी दे दी थी।

काकोरी के इन नायकों में प्रमुख थे पंडित रामप्रसाद बिस्मिल। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में हुआ था। यह बचपन से ही महर्षि दयानंद तथा आर्यसमाज से प्रभावित थे। बिस्मिल जी ने सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन किया और जिससे देश, धर्म के लिए कुछ करने की प्रेरणा जगी। 1916 में जब भाई परमानंद जी को लाहौर षड़यंत्र केस में आजीवन कारावास की सजा देकर कालापानी भेज दिया गया तब रामप्रसाद बिस्मिल बहुत व्यथित हुए और उन्होंने इसका बदला लेने की ठान ली।

उन्होंने लखनऊ में क्रांतिकारियां से सम्पर्क किया और क्रांतिकारी गेंदालाल दीक्षित के साथ योजना बनानी प्रारम्भ की। उनके क्रांतिकारी दल को शस्त्र मंगाने तथा गतिविधियों के संचालन के लिए पैसे की आवश्यकता थी। अतः उन लोगों ने अंग्रेजों का खजाना लूटने की योजना बनाई। 9 अगस्त 1925 के दिन अपने दस साथियों के साथ पंडित रामप्रसाद बिस्मिल ने लखनऊ से खजाना लेकर जाने वाली ट्रेन को काकोरी स्टेशन से पूर्व दश हरी गांव के पास चेन खींच कर रोक लिया। गाड़ी रूकते ही सभी अपने काम में लग गये। कुछ ही देर में उनके साथियों ने काम पूरा कर लिया और खजाना लूटकर फरार हो गये।

परन्तु आगे चलकर चंद्रशेखर आजाद को छोड़कर इस कांड के सभी क्रांतिकारी पकड़े गये । इनमें से रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, अशफाक उल्ला खां तथा राजेंद्र लाहिड़ी को फांसी की सजा सुनायी गयी। रामप्रसाद जी गोरखपुर जेल मे बंद किये गये। अपना नित्य का व्यायाम ,पूजा, संन्ध्या वंदन कभी नहीं छोड़ा और 19 दिसम्बर 1927 को बिस्मिल को गोरखपुर, अशफाक उल्ला को फैजाबाद तथा रोशन सिंह को प्रयाग मे फांसी दे दी गयी।

राम प्रसाद बिस्मिल
11 जून 1897 – 19 दिसम्बर 1927

काकोरी कांड के दूसरे सिपाही अमर बलिदानी अशफाक का जन्म भी शाहजहांपुर में हुआ था यह भी आर्यसमाज मंदिर में रहा करते थे और वहीं से दोनों की मित्रता हुई जो अंत समय तक रही। काकोरी कांड में अशफाक ने बिस्मिल जी का पूरा सहयोग किया । काकोरी कांड की सफलता के बाद क्रांतिकारियों की तेज धरपकड़ होने लग गयी और अशफाक किसी प्रकार से विदेश जाने की तैयारी करने लग गये। लेकिन दिल्ली में उनके एक मित्र ने गद्दारी करके उन्हें पकड़ा दिया। जेल में अशफाक सदा मस्त रहकर गीत और गजल लिखा करते थे।

बिस्मिल के तीसरे साथी ठाकुर रोशन सिंह का जन्म भी शाहजहांपुर के ही एक किसान परिवार में हुआ था। बालपन से ही रोशन सिंह ऐसे कामों को पसंद करते थे जिसे करने में उनके अन्य सहयोगी हिचकते थे। इनका शरीर बहुत ही बलिष्ठ था। 1921 के असहयोग आंदोलन में दो साल के लिये जेल गये। 1923 में क्रांतिकारी शचींद्र नाथ सान्याल से उनकी भेंट हुई। काकोरी कांड से पूर्व बमरौली कांड में रोशन सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही। नौ अगस्त 1925 के दिन काकोरी कांड में रोशन सिंह शामिल नहीं थे पर युवावस्था से ही क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय होने के कारण पुलिस ने उन्हें भी पकड़ लिया। रोशन सिंह चूंकि इस कांड में शामिल नहीं थे अतः उनके परिजनों को विश्वास था कि उन्हें फांसी की सजा नहीं दी जायेगी लेकिन तत्कालीन शासन ने उन्हें भी फांसी की सजा दी। रोशन सिंह जेल में भी मस्त रहते थे और अपनी दिनचर्या कभी खंडित नहीं की। 19 दिसम्बर को फांसी के दिन भी उन्होंने अपनी नियमित दिनचर्या पूरी की जिसे देखकर जेल अधिकारी भी हैरान हो गये थे। ■

ISSN No. 2581-3528

मीडिया सुर्खियां

21 अक्टूबर से 20 नवम्बर तक

21 अक्टूबर : इतिहास- सुभाष चंद्र बोस ने 1943 में 21 अक्टूबर के दिन आजाद हिंद फौज के सर्वोच्च सेनापति के रूप में स्वतंत्र भारत की वैकल्पिक सरकार बनाई थी।

22 अक्टूबर : आज के दिन ही भारत ने 22 अक्टूबर 2008 को अपने पहले चंद्र मिशन 'चंद्रयान-1' का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया था।

23 अक्टूबर : उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने फैजाबाद रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर अयोध्या कैंट करने का निर्णय लिया है। इस संबंध में भारत सरकार से स्वीकृति मिल गई है।

♦ बांग्लादेश में दुर्गा पूजा उत्सव के दौरान हिंदुओं के खिलाफ हिंसा और इस्कॉन मंदिर पर भीड़ द्वारा हमले की हाल की घटनाओं के विरोध में आज इस्कॉन सोसायटी 150 देशों में प्रदर्शन करने जा रही है।

24 अक्टूबर : देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को 'पवित्र और अक्षुण्ण' बताते हुए चीन की संसद ने सीमावर्ती इलाकों के संरक्षण और उपयोग संबंधी एक नया कानून अपनाया है जिसका असर भारत के साथ बीजिंग के सीमा विवाद पर पड़ सकता है।

25 अक्टूबर : अभिनेत्री कंगना रनौत को सर्वश्रेष्ठ अदाकारा के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से नवाजा गया है। 22 मार्च, 2021 को 67वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के विजेताओं की घोषणा की गई थी। कंगना रनौत को मणिकर्णिका और पंगा के लिए यह अवॉर्ड मिला है। अवॉर्ड सेरेमनी में उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू और केंद्रीय मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने उन्होंने अवॉर्ड प्रदान किया।

26 अक्टूबर : कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने दिल्ली में पार्टी मुख्यालय में महासचिवों, राज्य प्रभारियों और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्षों की बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि हमें वैचारिक रूप से भाजपा–आरएसएस के द्वेषपूर्ण अभियान से लड़ना चाहिए।

27 अक्टूबर : सतह से सतह पर मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि–5 का सफल प्रक्षेपण 27 अक्टूबर, 2021 को ओडिशा के एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से शाम करीब 07 बजकर 50 मिनट पर किया गया। मिसाइल, जो तीन स्टेज वाले ठोस ईंधन वाले इंजन का उपयोग करती है।

28 अक्टूबर : जम्मू–कश्मीर प्रशासन ने एक मिसाल कायम करते हुए गुरुवार को जम्मू कश्मीर सिविल सर्विस रेगुलेशन के अनुच्छेद 226 (2) के तहत 8 'भ्रष्ट' सरकारी कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया। इन सभी 8 सरकारी कर्मचारियों को भ्रष्टाचार और कदाचार के आरोप में बर्खास्त कर दिया गया।

29 अक्टूबर : केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2020–21 के लिए PF डिपॉजिट पर ब्याज दर 8.5 रखने की घोषणा की है।

30 अक्टूबर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इटली के रोम में जी20 समिट में हिस्सा लिया। इस दौरान पीएम मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों से मुलाकात की। दोनों ही नेताओं के साथ उनकी मुलाकात की तस्वीरें सामने आई हैं, जिसमें देखा जा सकता है कि वे किस गर्मजोशी के साथ मिले हैं।

31 अक्टूबर : दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपनी एक्जीक्यूटिव काउन्सिल की बैठक में निर्णय लिया की आने वाले दिनो में दिल्ली विश्वविद्यालय के नए कॉलेजों और सेंटरो का नाम वीर सावरकर और दिवंगत भाजपा नेता सुषमा स्वराज के नाम पर रखा जाएगा। डीयू वीसी योगेश सिंह के अनुसार अगस्त में सर्वसम्मति से ये प्रपोजल एक बैठक में पारित किया गया था।

01 नवम्बर : केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट ने बताया कि केंद्र सरकार ने घटियाबगड से लिपुलेख तक की सीमा सड़क को पक्की करने के लिए 60 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है और जल्द ही श्रद्धालु कार से कैलाश मानसरोवर की यात्रा कर सकेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्कॉटलैंड के ग्लासगो में आयोजित COP 26 में भारत के नेट–जीरो लक्ष्य को लेकर बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि भारत 2070 तक इस लक्ष्य को हासिल करेगा। इस दौरान उन्होंने भारत सहित तमाम विकासशील देशों में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का भी जिक्र किया।

02 नवम्बर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ग्लासगो में COP 26 शिखर सम्मेलन में कहा सूर्य से हमें मिलने वाली ऊर्जा पूरी तरह से स्वच्छ और स्थायी है। एक दुनिया, एक सूर्य, एक ग्रिड सिर्फ दिन में सौर ऊर्जा उपलब्धता की चुनौती से निपट सकता है। यह सौर ऊर्जा की व्यवहार्यता को बेहतर बना सकता है। उन्होंने कहा कि इसरो जल्द ही दुनिया को एक सौर ऊर्जा कैलकुलेटर प्रदान करेगा जो दुनिया भर में किसी भी क्षेत्र की सौर ऊर्जा क्षमता को माप सकता है।

03 नवम्बर : भारतीय वायु सेना के उत्कृष्ट पायलट विंग कमांडर अभिनंदन वर्थमान को ग्रुप कैप्टन के पद पर पदोन्नत किया गया है। अभिनंदन फरवरी 2019 में पाकिस्तानी लड़ाकू विमान के साथ हुई हवाई लड़ाई में शामिल थे और इस दौरान F-16 लड़ाकू विमान को मार गिराने के लिए उन्हें शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया था।

04 नवम्बर : अमेरिकी रक्षा विभाग पेंटागन ने एक रिपोर्ट में कहा है कि चीन, भारत के साथ लगती वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर अपने दावे को लेकर दवाब बनाने के लिये 'लगातार रणनीतिक कार्रवाई' को अंजाम दे रहा है।

05 नवम्बर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने केदारनाथ मन्दिर के दर्शन किए और आदि गुरु शंकराचार्य की प्रतिमा का अनावरण किया। उन्होंने यहां कई परियोजनाओं का लोकार्पण, उद्घाटन और शिलान्यास भी किया।

06 नवम्बर : खगोलविदों और शौकिया स्काईवॉचर्स को इस महीने इस सदी का सबसे लंबा चंद्रग्रहण देखने को मिलेगा। 19 नवंबर (कार्तिक पूर्णिमा) को, पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच से गुजरेगी, जिससे चंद्रमा की सतह पर एक छाया बन जाएगी।

07 नवम्बर : इराक के प्रधानमंत्री मुस्तफा अल–कदीमी पर ड्रोन अटैक किया गया है, बताया जा रहा है कि ड्रोन हमले में कदीमी बाल–बाल बच गए हैं और उन्हें किसी भी तरह की गंभीर चोटें नहीं आईं हैं।

08 नवम्बर: राफेल डील को लेकर फ्रांस के पब्लिकेशन मीडियापार्ट ने एक बार फिर से बड़ा खुलासा किया है। इस डील में भ्रष्टाचार होने का दावा किया गया है। मीडियापार्ट ने दावा किया है कि राफेल डील के लिए दसॉ एविएशन ने सुशेन गुप्ता नाम के बिचौलिए को 2007 से 2012 के बीच 7.5 मिलियन यूरो दिए थे।

09 नवम्बर : चारधाम प्रोजेक्ट के तहत सड़कों के चौड़ीकरण पर केंद्र सरकार ने कोर्ट में कहा कि चीनी खतरे को देखते हुए सड़कों की चौड़ाई को बढ़ाया जाना जरूरी है।

10 नवम्बर : बायोटेक के मैनेजिंग डायरेक्टर और चेयरमैन डॉ. कृष्णा एला ने कहा कि देश का प्रमुख (प्रधानमंत्री) यदि हमारा बनाया टीका लेता है तो इससे ज्यादा एक वैज्ञानिक के लिए सम्मान की और क्या बात होगी।

11 नवम्बर : नायका की संस्थापक फाल्गुनी नायर भारत की सातवीं महिला अरबपति और भारत की सबसे अमीर सेल्फ–मेड महिला अरबपति बन गई हैं। नायका की होल्डिंग कंपनी एफएसएन ई–कॉमर्स वेंचर्स के शेयरों की दलाल स्ट्रीट पर धमाकेदार शुरुआत के बाद से ही फाल्गुनी नायर की चर्चा होने लगी है।

♦ अफगानिस्तान के हालात पर चर्चा के लिए भारत सहित आठ देशों की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई, जिसमें एक बार फिर भारत के इस रुख को दोहराया गया कि अफगानिस्तान को 'वैश्विक आतंकवाद का पनाहगाह' नहीं बनने दिया जाएगा। इस बैठक के जरिये भारत, रूस, ईरान और पांच अन्य मध्य–एशियाई देशों ने अफगानिस्तान की सत्ता में काबिज 'समूह' से देश के सभी तबकों को समाज में प्रतिनिधित्व प्रदान करने और समावेशी सरकार के गठन का आह्वान भी किया।

12 नवम्बर : पंजाब में मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी की अगुवाई वाली सरकार ने पंजाबी भाषा को लेकर बड़ा फैसला लिया है। इसके मुताबिक, राज्य के सभी स्कूलों में पहली से 10वीं कक्षा तक पंजाबी भाषा को एक अनिवार्य विषय बना दिया गया है।

♦ हिंदुत्व की तुलना आतंकवादी संगठन आईएसआईएस और बोको हरम से करने के बाद कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद का अपनी ही पार्टी में विरोध शुरू हो गया है। वरिष्ठ नेता गुलाम नमी आजाद के बाद बिहार के कांग्रेस विधायक ऋषि मिश्रा ने खुर्शीद की इस सोच का विरोध किया है।

♦ उत्तर प्रदेश के कानपुर में एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। शहर के जाजमऊ इलाके में मंगलवार को शहर के काजी ने डीजे– बैंड और आतिशबाजी देखने के बाद निकाह पढ़ाने से इनकार कर दिया। काजी ने इसे शरीयत (धार्मिक कानूनों) के खिलाफ बताया और निकाह पढ़ाने से मना कर दिया।

13 नवम्बर : मणिपुर में असम राइफल्स के एक दस्ते पर उग्रवादियों ने हमला कर दिया। इस हमले में 46, असम राइफल्स के कमांडिंग अफसर सहित पांच जवानों और उनके परिवार के दो सदस्यों की मौत हो गई। यह घटना म्यांमा सीमा से लगे चुराचांदपुर जिले में घटी। अलग होमलैंड की मांग करने वाले मणिपुर के उग्रवादी संगठन 'पीपुल्स रिवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ कंगलीपाक' को इस हमले का जिम्मेदार माना जा रहा है। इस हमले में आईईडी विस्फोटकों का इस्तेमाल किया गया।

♦ टोक्यो ओलंपिक में जैनविन थ्रो स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचने वाले एथलीट नीरज चोपड़ा सहित 12 खिलाड़ियों को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया। देश के सर्वोच्च खेल पुरस्कार से इस साल कुल 12 खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया है। इसके अलावा इस साल 35 खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

14 नवम्बर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए त्रिपुरा के 1.47 लाख से अधिक लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवास योजना– ग्रामीण (पीएमएवाई–जी) की पहली किस्त ट्रांसफर की। लाभार्थियों के बैंक खातों में सीधे 700 करोड़ रुपये से अधिक की राशि जमा की गई।

15 नवम्बर : प्रधानमंत्री नरेंद मोदी ने 15 नवंबर को भोपाल में हबीबगंज रेलवे स्टेशन (अब रानी कमलापति रेलवे स्टेशन) का उद्घाटन किया। यह भारत का पहला वर्ल्ड क्लास रेलवे स्टेशन रानी कमलापति रेलवे स्टेशन पीपीपी मोड में बनने वाला पहला स्टेशन है।

16 नवम्बर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सुल्तानपुर में लखनऊ से गाजीपुर तक 22,500 करोड़ से निर्मित 341 किलोमीटर लंबाई और 6 लेन के पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे को राष्ट्र को समर्पित किया। इस मौके पर एयरशो भी हुआ।

17 नवम्बर : अमेरिका को पीछा छोड़कर अब चीन दुनिया का सबसे अमीर देश बन गया है। 2020 में चीन की संपत्ति बढ़कर 120 लाख करोड़ डॉलर हो गई।

♦ संयुक्त राष्ट्र के मंच से पाकिस्तान ने एक बार फिर कश्मीर का मसला उठाया तो भारत ने पलटवार करते हुए कहा कि वह सीमा पार से प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ अपना अभियान जारी रखेगा। साथ ही यह भी कहा कि बातचीत के लिए सार्थक माहौल बनाने की जिम्मेदारी पाकिस्तान की है।

18 नवम्बर : सुप्रीम कोर्ट ने बॉम्बे हाईकोर्ट के उस आदेश को खारिज कर दिया, जिसमें यौन उत्पीड़न के एक मामले में कोर्ट ने कहा था कि अगर आरोपी और पीड़िता के बीच त्वचा से त्वचा का संपर्क नहीं होता है तो ऐसे मामलों में POCSO एक्ट के तहत अपराध नहीं बनता।

19 नवम्बर : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बड़ा फैसला लेते हुए तीनों कृषि कानून वापस लेने का ऐलान किया। 17 सितंबर 2020 को संसद से तीनों कृषि कानूनों को पास किया गया था। इन कानूनों के विरोध में किसान 26 नवंबर 2020 से आंदोलन कर रहे हैं।

20 नवम्बर : केंद्र सरकार के वार्षिक स्वच्छता सर्वेक्षण में छत्तीसगढ़ को देश का सबसे स्वच्छ राज्य घोषित किया गया है, वहीं मध्य प्रदेश के इंदौर को लगातार पांचवीं बार सबसे साफ–सुथरे शहर का खिताब मिला है।

संयोजन : प्रतीक खरे

ISSN No. 2581-3528

प्रेरणा दिवस : दिसम्बर माह

1 दिसंबर- जन्मतिथि : तालिम रुक्बो- एक श्रेष्ठ साहित्यकार थे।

जन्मतिथि : राजा महेन्द्र प्रताप सिंह - स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और महान दानवीर थे। अलीगढ़ में इनके नाम पर यूनिवर्सिटी भी बनाई जा रही है।

जन्मतिथि : काका कालेलकर- वह भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता, समाज सुधारक, पत्रकार थे।

3 दिसंबर - जन्मतिथि : राजेन्द्र प्रसाद - भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।

जन्मतिथि : मेजर ध्यानचंद - हॉकी के पूर्व खिलाड़ी एवं कप्तान थे। उनकी जन्मतिथि को भारत में 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। मेजर ध्यान चंद खेल रत्न पुरस्कार भारत में दिया जाने वाला सबसे बड़ा खेल पुरस्कार है।

भोपाल गैस त्रासदी - भारत के मध्य प्रदेश राज्य के भोपाल शहर में 3 दिसम्बर सन् 1984 को एक भयानक औद्योगिक दुर्घटना हुई।

4 दिसंबर- भारतीय नौसेना दिवस : 1971 की जंग में भारतीय नौसेना की पाकिस्तानी नौसेना पर जीत की याद में मनाया जाता।

जन्मतिथि : नव दधीचि नाना भागवत - संघ के जीवनव्रती प्रचारक थे।

जन्मतिथि : आनन्द मिश्र 'अभय' - लेखन में रुचि होने के कारण विश्व संवाद केन्द्र, लखनऊ से जुड़े। राष्ट्रधर्म के सम्पादन का दायित्व निभाया।

जन्मतिथि : इंद्र कुमार गुजराल - भारत के बारहवें प्रधानमंत्री थे।

जन्मतिथि : रामस्वामी वेंकटरमण - भारत के आठवें राष्ट्रपति थे।

5 दिसंबर- पुण्यतिथि : अरविंद घोष - एक महान योगी एवं दार्शनिक थे। वेद, उपनिषद ग्रन्थों आदि पर टीका लिखी।

6 दिसंबर - पुण्यतिथि : भीमराव आम्बेडकर - स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मन्त्री, भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निर्माताओं में से एक थे।

7 दिसम्बर- जन्मतिथि : डॉ. अन्ना साहब देशपांडे - संघ के प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं में से एक थे।

8 दिसंबर- जन्मतिथि : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - हिन्दी जगत् के कवि, गद्यकार और अद्वितीय वक्ता थे।

10 दिसंबर - मानवाधिकार दिवस : इसी दिन संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 1948 में मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा को अपनाया था।

जन्मतिथिः चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य - स्वतन्त्र भारत के द्वितीय गवर्नर–जनरल और प्रथम भारतीय गवर्नर–जनरल थे।

पुण्यतिथि : चौधरी दिगम्बर सिंह - स्वतंत्रता सेनानी और चार बार लोकसभा सांसद रहे। इन्होंने सहकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया।

पुण्यतिथि : अभिनेता अशोक कुमार - हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता, निर्माता–निर्देशक थे। सन् 1999 में भारत सरकार ने कला के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया था।

11 दिसंबर जन्मतिथि - पू. बाला साहब देवरस जयंती (मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी 1951) संघ के तृतीय सरसंघचालक थे।

जन्मतिथि : लक्ष्मण माधव देशपांडे - उनका प्रचलित नाम बाबूराव देशपांडे था। उनका जन्म 1913 को ग्राम मंगरूल दस्तगीर (जिला अमरावती , महाराष्ट्र) में हुआ था।

जन्मतिथि : ओशो - एक भारतीय विचारक, धर्मगु– और रजनीश आंदोलन के प्रणेता–नेता थे।

जन्मतिथि : प्रणब मुखर्जी- भारत के तेरहवें राष्ट्रपति रहें। भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया।

पुण्यतिथि : कालिदास बसु - कोलकाता उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता तथा पूर्वोत्तर भारत में संघ कार्य के एक प्रमुख स्तम्भ थे।

पुण्यतिथि : कवि प्रदीप - मूल नाम 'रामचंद्र नारायणजी द्विवेदी' था। प्रदीप हिंदी साहित्य जगत् और हिंदी फिल्म जगत् के एक अति सुदृढ़ रचनाकार रहे।

पुण्यतिथि : रविशंकर - एक सितार वादक के रूप में उन्होंने ख्याति अर्जित की। वह इस सदी के सबसे महान् संगीतज्ञों में गिने जाते थे।

12 दिसंबर- बलिदान दिवस : जनरल जोरावर सिंह - भारत की विजय पताका भारत के बाहर तिब्बत और बाल्टिस्तान तक फहरायी। तोयो (अब चीन में) में युद्ध करते हुए गोली लगने से इनका देहांत हुआ।

थोगन संगमा - भारत के क्रांतिकारी थे जिन्होने 1872 में ब्रिटिश द्वारा गारो पहाड़ियों पर कब्जा के विरुद्ध स्थानीय गारो योद्धाओं का नेतृत्व किया।

पुण्यतिथि : रामानंद सागर : हिन्दी फिल्मों के एक निर्देशक थे। दूरदर्शन पर रामायण और कृष्णा नामक अति लोकप्रिय धारावाहिक के कारण वे बहुत प्रसिद्ध हुए।

पुण्यतिथि : मैथिलीशरण गुप्त - हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे।

जन्मतिथि : भैया जी कस्तूरे - दत्तात्रेय गंगाधर कस्तूरे, को भैया जी के नाम से भी जाना जाता है। आप संघ के तन–मन से संघ को समर्पित कार्यकर्ता थे।

जन्मतिथि : डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे - भारत के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी तथा 1927 से 1928 तक 'अखिल भारत हिन्दू महासभा' के अध्यक्ष रहे।

14 दिसंबर- इतिहास स्मृति, शान्ति घोष - भारत के स्वतंत्रता संग्राम की क्रान्तिकारी वीरांगना थीं।

सुनीति चौधरी : भारत की एक क्रान्तिकारी नारी थीं। वह उस समय के प्रसिद्ध दीपाली संघ की सदस्या थीं।

गीता जयंती : हिंदू पंचांग के अनुसार हर वर्ष मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि पर हिंदू धर्म के सबसे पवित्र ग्रंथ गीता की जयंती मनाई जाती है।

जन्मतिथि : अभिनेता राजकपूर - प्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक–निर्माता थे। पद्मभूषण और दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित हुए।

जन्मतिथि : उपेन्द्रनाथ अश्क : उपन्यासकार, निबन्धकार, लेखक, कहानीकार हैं। उन्होंने आदर्शोन्मुख, कल्पनाप्रधान अथवा कोरी रोमानी रचनाएँ की।

15 दिसंबर- पुण्यतिथि : सरदार वल्लभ भाई पटेल - भारत के पहले उप–प्रधानमंत्री थे।

जन्मतिथि : स्वामी रंगनाथानंद - 'रामकृष्ण संघ' के एक हिन्दू संन्यासी थे। रामकृष्ण मिशन के तेरहवें संघ अध्यक्ष बने थे।

16 दिसम्बर- जन्मतिथि : बापूराव बरहाडपांडे - 1927 में नागपुर की ऊंटखाना शाखा से उनका संघ जीवन प्रारम्भ हुआ और फिर वही उनका तन, मन और प्राण बन गया।

विजय दिवस : 16 दिसम्बर को 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर भारत की जीत के कारण मनाया जाता है।

17 दिसंबर- इतिहास स्मृति : सांडर्स वध - लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए क्रांतिकारियों द्वारा 17 दिसंबर 1928 को ब्रिटिश पुलिस के अफसर सांडर्स को गोली से उड़ा दिया गया था।

बलिदान दिवस : क्रान्तिवीर राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी - काकोरी कांड का बड़ा महत्त्व है। इस घटना में चार क्रान्तिवीरों को मृत्युदंड दिया गया था। इनमें से एक राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी को 17 दिसम्बर, 1927 को उत्तर प्रदेश की गोंडा जेल में फांसी पर लटका दिया।

भगत नरसी मेहता जयंती : गुजराती भक्ति साहित्य के कवि थे।

18 दिसंबर- जन्मतिथि : भिखारी ठाकुर - भोजपुरी गीतों एवं नाटकों की रचना एवं अपने सामाजिक कार्यों के लिये प्रसिद्ध हैं।

19 दिसंबर - बलिदान दिवस अशफाक उल्ला खां- भारत के प्रसिद्ध अमर शहीद क्रांतिकारियों में गिना जाता है। 'काकोरी कांड' के सिलसिले में उन्हें फैजाबाद जेल में फाँसी पर चढ़ा दिया गया था।

रोशन सिंह - एक भारतीय क्रांतिकारी थे जिन्हें 1921–22 के असहकार आंदोलन के समय बरेली शूटिंग केस में सजा सुनाई गयी थी।

पुण्यतिथि : रामप्रसाद बिस्मिल : भारत के महान् स्वतन्त्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषाविद् व साहित्यकार थे।

गोवा मुक्ति दिवस : 19 दिसम्बर, 1961 को भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन विजय अभियान' शुरू कर गोवा, दमन और दीव को पुर्तगालियों के शासन से मुक्त कराया था।

20 दिसंबर- पुण्यतिथि : राष्ट्रसन्त गाडगे बाबा- महाराष्ट्र के कोने–कोने में अनेक धर्मशालाएं, गौशालाएं, विद्यालय, चिकित्सालय तथा छात्रावासों का निर्माण कराया। यह सब उन्होंने भीख मांग–मांगकर बनावाया किंतु अपने सारे जीवन में इस महापुरुष ने अपने लिए एक कुटिया तक नहीं बनवाई।

21 दिसंबर- इतिहास स्मृति अनंत कान्हरे द्वारा जैक्सन का वध - भारत के युवा क्रांतिकारियों में से एक थे। उन्हें देश की आजादी के लिए शहीद होने वाले युवाओं में गिना जाता है।

जन्मतिथि : श्रीकांत जोशी - संघ के स्वयंसेवक थे। वर्ष 1960 में वे तत्कालीन प्रचारक शिवराय तैलंग जी की प्रेरणा से प्रचारक बने।

22 दिसंबर- जन्मतिथि : गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुज- एक महान भारतीय गणितज्ञ थे।

जन्मतिथि : गुरू गोविंद सिंह- सिखों के दसवें गुरु के साथ–साथ एक महान योद्धा, कवि, भक्त एवं आध्यात्मिक नेता थे।

23 दिसंबर- वलिदान दिवस : स्वामी श्रद्वानन्द- भारत के शिक्षाविद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा आर्यसमाज के संन्यासी थे।

वलिदान दिवस : अशोक वडेरा- एक पत्रकार स्वयंसेवक थे, जिन्होंने अपने धैर्य और धर्म का परिचय देते हुए आग में फंसे अनेक लोगों को बचाया। यद्यपि इस कारण उन्हें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी।

पुण्यतिथि : पीवी नरसिम्हा राव - भारत के 10 वें प्रधानमंत्री के रूप में जाने जाते हैं। ये आन्ध्रा प्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे।

जन्मतिथि : चौधरी चरण सिंह - वह भारत के किसान राजनेता एवं पाँचवें प्रधानमंत्री थे।

24 दिसंबर- जन्मतिथि : श्रीकृष्णचंद्र भारद्वाज- वर्ष 1942 में संघ के प्रचारक बने। प्रारम्भ में उन्होंने पंजाब, दिल्ली और फिर उत्तर प्रदेश के उन्नाव में संघ कार्य किया।

जन्मतिथि : बनारसीदास चतुर्वेदी- प्रसिद्ध हिन्दी लेखक एवं पत्रकार थे। वे राज्यसभा के सांसद भी रहे। उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया गया था।

25 दिसंबर- जन्मतिथि : महामना मदनमोहन मालवीय- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही इस युग के आदर्श पुरुष भी थे। वे भारत के पहले और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें महामना की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया।

जन्मतिथि : अटल बिहारी वाजपेयी- भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी देश के तीन बार प्रधानमंत्री रहे। वे हिंदी कवि, पत्रकार व एक प्रखर वक्ता थे।

26 दिसंबर- जन्मतिथि : बाबूराव ठाकुर- बेलगांव (कर्नाटक) से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र 'तरुण भारत' के संस्थापक सम्पादक थे।

जन्मतिथि : श्री रमाकान्त केशव देशपांडे- 1926 में नागपुर की पन्त व्यायामशाला में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डा. हेडगेवार के सम्पर्क में आकर वे स्वयंसेवक बने।

जन्मतिथि उधम सिंह- भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। उत्तर भारतीय राज्य उत्तराखण्ड के एक जनपद का नाम भी इनके नाम पर उधम सिंह नगर रखा गया है।

27 दिसंबर- जन्मतिथि : शचीन्द्रनाथ बख्शी- भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रान्तिकारी थे।

जन्मतिथि : मिर्जा गालिब- मिर्जा असदुल्लाह बेग खान, जो अपने तखल्लुस गालिब से जाने जाते हैं, उर्दू एवं फारसी भाषा के एक महान शायर थे।

28 दिसंबर- बलिदान दिवस : राव रामबख्श सिंह- यूपी के एक रियसत डौंडियाखेड़ा के राजा थे। उनका संबंध बैस राजपूत से है। 1857 में भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम में उन्होने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ा था।

पुण्यतिथि : सुमित्रानंदन पंत- हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं।

जन्मतिथि : रतन टाटा- टाटा समुह के वर्तमान अध्यक्ष, जो भारत की सबसे बड़ी व्यापारिक समूह है, जिसकी स्थापना जमशेदजी टाटा ने की।

29 दिसंबर- धौलाना के अमर बलिदानियों का बलिदान दिवस- इस दिन अंग्रेज अधिकारी ने बौखलाकर सभी क्रांतिवीरों को 29 दिसम्बर, 1857 को पीपल के पेड़ पर फांसी लगवा दी।

30 दिसंबर- बलिदान दिवस : क्रांतिवीर उक्यांग नागवा- मेघालय के एक क्रान्तिकारी वीर थे। अंग्रेजों के अमानवीय अत्याचार भी उनका मस्तक झुका नहीं पाये। 30 दिसम्बर, 1862 को अंग्रेजों ने मेघालय के उस वनवासी वीर को सार्वजनिक रूप से जोनोई में ही फाँसी दे दी।

जन्मतिथि : हनुमप्पा सुदर्शन- एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता हैं। इन्हें आदिवासियों के बीच किये गये कार्यों के लिए पद्मश्री और राइट लाइव्लीहुड अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

31 दिसंबर- जन्मतिथि : रमण भाई शाह- दो वर्ष तक संघ के प्रचारक रहे। उन्होंने एक राष्ट्रवादी मजदूर यूनियन की स्थापना की। मजूदरों को अपने परिवार का सदस्य मानने के कारण यह यूनियन शीघ्र ही लोकप्रिय हो गयी।

संयोजन : राम कुमार शर्मा

पत्रिका के नवम्बर अंक की समीक्षा

डॉ. प्रियंका सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
शम्भू दयाल पीजी कॉलेज, गाजियाबाद

केशव संवाद पत्रिका का नवंबर अंक मीडिया के विभिन्न आयामों के साथ कुछ महत्वपूर्ण विषयों को समाहित करते हुए सुधि पाठकों को समर्पित है। विजयादशमी उत्सव 2020–21 के कार्यक्रम का आयोजन नागपुर महानगर में हुआ था। कार्यक्रम में परम पूज्य सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत जी ने अपने उद्बोधन में सामाजिक समरसता, स्वतंत्र एवं एकात्मता, कुटुंब प्रबोधन, कोरोना से संघर्ष, स्वास्थ्य के प्रति हमारी दृष्टि, जनसंख्या नीति, हमारी आर्थिक दृष्टि, जनसंख्या वृद्धि दर में असंतुलन की चुनौती, हिंदू मंदिरों का प्रश्न, हमारी एकात्मता के सूत्र एवं संगठित हिंदू समाज जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर एक दृष्टि प्रदान की। जिसके कुछ अंश इस पत्रिका में प्रकाशित है। सेवा परमो धर्मः, नर सेवा नारायण सेवा जैसे ध्येय वाक्य को चरितार्थ करते संघ के स्वयंसेवक सेवा कार्यों में अपना सब कुछ अर्पण कर देते हैं और इन्हीं भावों को अपने लेख में श्रीमती अनुपमा अग्रवाल जी ने समाहित किया है। ऐसा समर्पण भाव केवल भारत में ही नहीं अपितु उन देशों में भी है जहां संघ की शाखाएं लगती हैं। एक बहुत ही महत्वपूर्ण संदेश के साथ अपने लेख के माध्यम से पाठकों से साझा किया है डॉ अनिल निगम जी ने जिसमें वे कहते हैं कि आज आवश्यकता है कि मीडिया राष्ट्र और समाज के प्रति अधिक संवेदनशील बने। 'चुप रहने की शक्ति' शीर्षक के अंतर्गत श्री नरेंद्र भदोरिया जी ने बहुत ही परिपक्वता के साथ 6 दिसंबर 1992 की घटना को साझा किया है जिसमें उन्होंने सहनशीलता एवं सहिष्णुता का परिमार्जित स्वरूप प्रस्तुत किया है। इस लेख में उनकी लेखन शैली से पाठक अवश्य ही अभिभूत होंगे। 'सोशल मीडिया की जद में असावधान भारत का भविष्य' विषय पर श्री आशीष कुमार 'अंशु' जी ने सोशल मीडिया के संवेदनशीलता और उसकी विश्वसनीयता का बच्चों पर पड़ने वाले प्रभावों पर चिंता व्यक्त की है।

एक अध्ययन के माध्यम से उन्होंने बताया कि जो बच्चे सोशल मीडिया पर कम सक्रिय हैं उनका जीवन के प्रति नजरिया काफी संतुलित है अपने लेख के माध्यम से उन्होंने सोशल मीडिया के प्रयोग में सावधानी बरतने के लिए प्रेरित किया और अंत में बड़े अच्छे संदेश के साथ अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि आप सोशल मीडिया का उपयोग करें ना कि सोशल मीडिया आपका। नागरिक पत्रकारिता और उसका उत्तरदायित्व विषय पर श्री मोहित कुमार जी ने सोशल मीडिया की एक नई विधा मोजो जर्नलिज्म का उल्लेख किया एवं समाज को उसके उत्तरदायित्व से रूबरू कराया है। विजयादशमी से दीपावली तक भारतीय त्योहारों की लड़ी विषय पर ज्योति सिंह ने त्योहारों की वैज्ञानिकता एवं उसके महत्व पर प्रकाश डाला है। भारतीय त्योहारों का मौसम भी इतना खुशनुमा होता है, शरद ऋतु की सुहानी ठंडी–ठंडी बयार और रिश्ते नातों में प्यार का शुमार होता है। निश्चितरूप से हम भारतीयों में संस्कार का समावेश हमें अलग बनाता है। सनातन संस्कृति आदि से अंत तक प्रकृति पर आधारित है इसलिए भारतीय जीवन मूल रूप से उत्सव धर्मी है इन्हीं बातों को बहुत ही सुंदर सारगर्भित रूप से अपने लेख में समाहित किया है। श्री रवि पराशर जी ने जिसका विषय सनातन धर्म में हर पल पर्व होता है। मुंबई की माया नगरी के स्याह अंधेरों एवं बॉलीवुड की समीक्षा की है। श्री अतुल गंगवार जी ने जहां वह चिंतित है और पूछते हैं कि ऐसे लोग जिनके अपने पारिवारिक मूल्य नहीं क्या वह हमारे नाराज हो सकते हैं?

रक्षा मंत्रालय की तरफ से भारतीय पत्रकारों के लिए रक्षा संवाददाताओं के पाठ्यक्रम एवं रक्षा पत्रकार कैसे बने? विषय पर विस्तृत जानकारी दे रही है अनीता चौधरी जी जो मीडिया के छात्रों के लिए बहुत ही उपयोगी लेख है। देश की सुरक्षा में लगे अग्रिम पंक्ति में खड़े सैनिकों से सीधी बात तभी संभव है जब आप रक्षा पत्रकार हो इन्हीं तकनीकी पहलुओं को इसलिए इस लेख में समाहित किया गया है। शिल्प सौंदर्य एवं वैभव से पूर्ण ग्वालियर का ऐतिहासिक किला इतिहास, संस्कृत व वैभव पर प्रकाश डाला है श्री संदीप कुमार श्रीवास्तव जी ने। समृद्ध अपराजेय ग्वालियर दुर्ग के अनसुलझे रहस्यों में चौथा द्वार भी है, जिसे छायाकार संदीप श्रीवास्तव जी ने जो इस लेख के लेखक भी हैं ने खोजी वृत्त श्री मुकुंद राव शिंदे जी के मार्गदर्शन में चौथे द्वार, पांचवे द्वार व दुर्लभ मूर्ति शिल्पो को सप्रमाणिक छायांकन किया है एवं अपने लेख में ऐतिहासिक पहलू को दर्शाया है। अंत में केशव संवाद के अक्टूबर अंक की समीक्षा प्रकाशित है जिसका विषय 'आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश विशेषांक' रहा। ■

25 दिसम्बर जन्म-दिवस

हिन्दुत्व के आराधक महामना मदनमोहन मालवीय

महावीर सिंघल
वरिष्ठ लेखक

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का नाम आते ही हिन्दुत्व के आराधक पंडित मदनमोहन मालवीय जी की तेजस्वी मूर्ति आँखों के सम्मुख आ जाती है। 25 दिसम्बर, 1861 को इनका जन्म हुआ था। इनके पिता पंडित ब्रजनाथ कथा, प्रवचन और पूजाकर्म से ही अपने परिवार का पालन करते थे।

प्राथमिक शिक्षा पूर्णकर मालवीय जी ने संस्कृत तथा अंग्रेजी पढ़ी। निर्धनता के कारण इनकी माताजी ने अपने कंगन गिरवी रखकर इन्हें पढ़ाया। इन्हें यह बात बहुत कष्ट देती थी कि मुस्लमान और ईसाई विद्यार्थी तो अपने धर्म के बारे में खूब जानते हैं। पर हिन्दू इस दिशा में कोरे रहते हैं।

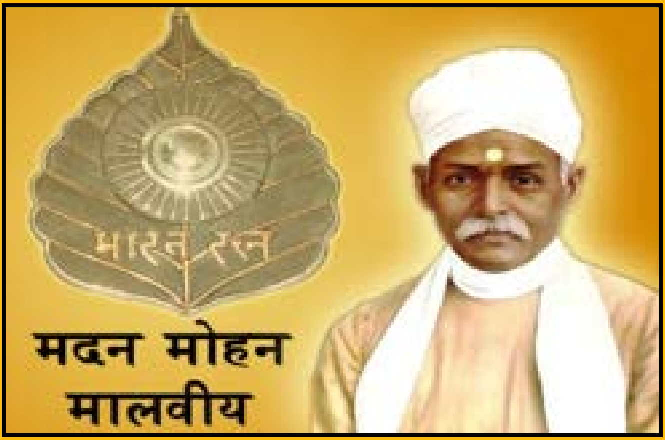

मालवीय जी संस्कृत में एमए करना चाहते थे। पर आर्थिक विपन्नता के कारण उन्हें अध्यापन करना पड़ा। उ.प्र. में कालाकांकर रियासत के नरेश इनसे बहुत प्रभावित थे। वे 'हिन्दुस्थान' नामक समाचार पत्र निकालते थे। उन्होंने मालवीय जी को बुलाकर इसका सम्पादक बना दिया। मालवीय जी इस शर्त पर तैयार हुए कि राजा साहब कभी शराब पीकर उनसे बात नहीं करेंगे। मालवीय जी के सम्पादन में पत्र की सारे भारत में ख्याति हो गयी।

पर एक दिन राजासाहब ने अपनी शर्त तोड़ दी। अतः सिद्धान्तनिष्ठ मालवीय जी ने त्यागपत्र दे दिया। राजासाहब ने उनसे क्षमा माँगीय पर मालवीय जी अडिग रहे। विदा के समय राजासाहब ने यह आग्रह किया कि वे कानून की पढ़ाई करें और इसका खर्च वे उठायेंगे। मालवीय जी ने यह मान लिया।

दैनिक हिन्दुस्थान छोड़ने के बाद भी उनकी पत्रकारिता में रुचि बनी रही। वे स्वतन्त्र रूप से कई पत्र–पत्रिकाओं में लिखते रहे। इंडियन यूनियन, भारत, अभ्युदय, सनातन धर्म, लीडर, हिन्दुस्तान टाइम्स....आदि हिन्दी व अंग्रेजी के कई समाचार पत्रों का सम्पादन भी उन्होंने किया।

उन्होंने कई समाचार पत्रों की स्थापना भी की। कानून की पढ़ाई पूरी कर वे वकालत करने लगे। इससे उन्होंने प्रचुर धन अर्जित किया। वे झूठे मुकदमे नहीं लेते थे तथा निर्धनों के मुकदमे निःशुल्क लड़ते थे। इससे थोड़े ही समय में ही उनकी ख्याति सर्वत्र फैल गयी। वे कांग्रेस में भी बहुत सक्रिय थे।

हिन्दू धर्म पर जब भी कोई संकट आता, मालवीय जी तुरन्त वहाँ पहुँचते थे। हरिद्वार में जब अंग्रेजों ने हर की पौड़ी पर मुख्य धारा के बदले बाँध का जल छोड़ने का षड्यन्त्र रचा, तो मालवीय जी ने भारी आन्दोलन कर अंग्रेजों को झुका दिया। हर हिन्दू के प्रति प्रेम होने के कारण उन्होंने हजारों हरिजन बन्धुओं को ॐ नमः शिवाय और गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी। हिन्दी की सेवा और गोरक्षा में उनके प्राण बसते थे। उन्होंने लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द के साथ मिलकर 'अखिल भारतीय हिन्दू महासभा' की स्थापना भी की।

मालवीय जी के मन में लम्बे समय से एक हिन्दू विश्वविद्यालय बनाने की इच्छा थी। काशी नरेश से भूमि मिलते ही वे पूरे देश में घूमकर धन संग्रह करने लगे। उन्होंने हैदराबाद और रामपुर जैसी मुस्लिम रियासतों के नवाबों को भी नहीं छोड़ा। इसी से लोग उन्हें विश्व का अनुपम भिखारी कहते थे।

अगस्त 1946 में जब मुस्लिम लीग ने सीधी कार्यवाही के नाम पर पूर्वोत्तर भारत में कत्लेआम किया, तो मालवीय जी रोग शय्या पर पड़े थे। वहाँ हिन्दू नारियों पर हुए अत्याचारों की बात सुनकर वे रो उठे। इसी अवस्था में 12 नवम्बर, 1946 को उनका देहान्त हुआ। शरीर छोड़ने से पूर्व उन्होंने अन्तिम संदेश के रूप में हिन्दुओं के नाम बहुत मार्मिक वक्तव्य दिया था।

प्रेरणा विमर्श 2020 के अवसर पर केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक सिने विमर्श और भारतीय विरासत का विमोचन करते लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिडला जी, गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी, उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक अन्त्योदय की ओर का विमोचन करते सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले जी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, वरिष्ठ लेखिका अद्वैता काला जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक पत्रकारिता के अग्रदूत का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के मा.राज्यपाल श्री राम नाईक जी, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्यप्रकाश टोंक जी, माखनलाल चतुर्वेदी विवि. के पूर्व कुलपति श्री जगदीश उपासने जी व अन्य अतिथिगण